प्रथम अंक

कृषि परिवर्तन

कृषि मूलस्य जीवनम्

प्रसार निदेशालय

चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय,
कानपुर

कुलपति की कलम से

हमारे प्रदेश की अर्थ व्यवस्था कृषि पर आधारित है, उत्तर प्रदेश में लगभग 60 प्रतिशत से अधिक लोग कृषि एवं कृषि आधारित उद्योंगों पर ही पूर्णतया निर्भर है। भारतवर्ष की जनसंख्या की 16.2 प्रतिशत जनसंख्या उत्तर प्रदेश में निवास करती है। 2012 की प्रदेश की जनगणना के अनुसार प्रदेश की कुल जनसंख्या 20.4 करोड थी जो कि चीन, अमेरिका एवं इण्डोनिशिया के अतिरिक्त विश्व के किसी भी देश से अधिक है। इतनी बढ़ी जनसंख्या का भरण–पोषण करने के साथ प्रदेश को विकास के पथ पर प्रदर्शित करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। इस वर्ष कोविड–19 महामारी के लॉकडाउन में भी कृषि वैज्ञानिकों एवं प्रशासनिक अधिकारियों की रणनीतियों ने प्रदेश के किसानों की खुशहाली के लिये किये गये अद्भूत प्रयास से अप्रैल–मई महीने में 304.77 लाख कुन्तल गेहूँ 88,870 कुन्तल चना एवं 2,640 कुन्तल सरसों का एम.एस.पी. केन्द्रों द्वारा क्रय किया गया जो कि बिगत वर्षो की अपेक्षा रिकार्ड क्रय साबित हुआ है। दिनांक 20 मार्च, 2020 को देश में वैश्विक महामारी कोरोना के संक्रमण को रोकने को दृष्टिगत रखते हुये भारत के ओजस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा देश की आम जनता को जागरूक करने के लिए एक दिन जनता कर्फयू की घोषणा की जो आगे चल कर देश व्यापी लाक डाउन के रूप में दिनांक 25 मार्च, 2020 से 31 मई, 2020 तक चार चरणों में जारी रखना पड़ा। आज भी देश के विभिन्न भागों में जनपद बार परिस्थतियों को देख कर लाक डाउन जारी रखना पड़ा रहा है।

देश में लाक डाउन घोषित होते ही देश के विकास का चक्का रूक गया सभी कार्य चाहे उद्योग से सम्बन्धित हो अथवा कृषि से सभी कार्य ठप हो गये है। ऐसी परिस्थतियों में चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर ने कृषकों, कृषक महिलाओं, ग्रामीण जनता, कृषि एवं कृषि आधारित उद्योगों में संलग्न श्रमिकों कों कम से कम अर्थिक हानि हो अथवा उनके स्वास्थ्य, तथा लाक डाउन अवधि में अपने व्यवसाय में किस प्रकार के परिवर्तन या बदलाव करके लाक डाउन के प्रभाव को कम किया जा सके। इसके लिए समय अनुसार उचित एडवाजरी, सुझाव तथा कार्यक्रम तैयार किये गये। इसी प्रकार शिक्षण, शोध एवं प्रसार के क्षेत्रों में चल रही गतिविधियॉ जो अचानक रूक गयी थी, उनको यथा सम्भव योजनायें/कार्यक्रम बनाकर नुकसान की भरपाई करने का प्रयास किया गया है छात्र–छात्राओं के पठ्न पाठन हेतु मोबाइल, व्हाट्सएप, जूम एप आदि के माध्यम का उपयोग कर उनके पाठ्य क्रम को पूरा किया गया है। विश्वविद्यालय ने यथा सम्भव उपलब्ध संसाधनओं का सदुपयोग कर कोरोना महामारी से निपटने एवं लाक डाउन अवधि में समय का सदुपयोग किस प्रकार किया जाये, इसके लिए कई प्रकार कार्यक्रम प्रारम्भ किये है तथा उनका सफलतापूर्वक संचालन किया है।

विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय कानपुर, गृहविज्ञान महाविद्यालय कानपुर, कृषि अभियंत्रण महाविद्यालय इटावा एवं कृषि महाविद्यालय लखीमपुर में अध्ययनरत सभी विषयों के एवं सभी सेमेस्टरों के विधार्थियों के सभी कोर्सेज को लाक डाउन अवधि में ही सम्पूर्ण कराया गया। छात्र/छात्राओं के उज्जवल भविष्य के लिए विश्वविद्यालय के प्रत्येक विभागों द्वारा 500–500 महत्वपूर्ण प्रश्नों को बनाकर संकलित किया गया एवं विधार्थयों को भी प्रेषित किया गया जिससे जे0आर0एफ0 एवं एस0आर0एफ0 परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर सकें।

विश्वविद्यालय द्वारा संचालित 13 कृषि विज्ञान केन्द्रों अलीगढ, कासंगज, हाथरस, फिरोजाबाद, इटावा, फतेहपुर, रायवरेली, लखीमपुर, हरदोई, फरूखाबाद, मैनपुरी, कन्नैज एवं कानपुर देहात जनपदों में किसानों सहायता के लिए लॉक डाउन अवधि में विभिन्न काय्रक्रम चलाये गये, इस कार्यक्रम में के0वी0के0 वैज्ञानिकों द्वारा लॉक डाउन अवधि में कुल 2907 कृषक एडवाडजरी भेजी गयी एवं इन एडवाडजरीज को स्थानीय 1067 अखबारों में भी प्रकाशित किया गया है। वाट्सऐप के माध्यम से कुल 34,630 किसानों को नियमित तकनीकी जानकारी प्रेषित की गयी है। जनपद स्तरीय मोबाइल सेवा से कुल 77,258 किसानों तक सलाहकारी सेवाऐं प्रेषित की गयी है। किसान काल सेन्टर की सूचना 32,489 किसानों को भेजी गयी जिससे किसान भाई फोन के माध्यम से अपनी समस्याओं का समाधान कर सकते है। कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा कुल 1,26,641 किसानों को आरोग्य सेतु प्रेषित किया गया जिसके 64,583 किसानों ने डाउनलोड किया है। किसानों की उपज का सही कीमत मिले इसके लिये 46,434 किसानों को किसान रथ एप प्रेषित कर रहे है। आयूष कवच एप कुल 2,000 किसानों को भेजा गया जिससे 482 किसानों ने डाउनलोड भी कर लिया।

विश्वविद्यालय द्वारा संचालित कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा इस लॉकडाउन अवधि में पूर्व में सम्पादित किये गये कार्यो का संकलन एवं दस्तावेजीकरण सरायनीय कार्य किया गया। इनक कार्यक्रमों में मुख्यतया 100 सफलता की कहानियों की किताब का संकलन किया गया। लॉक डाउन की अवधि कुल 72 दिनों में कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा प्रकाशित एवं प्रेषित कृषि की तकनीकी एडवाइजरीय की बुकलेट, प्रत्येक कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा कृषि तकनीकी एडवाइजरी की बुकलेट का संकलन किया गया। **सी0एस0ए0 चला गॉव की ओर** कार्यक्रम के अर्न्तगत कृषि विज्ञान केन्द्रों के प्रत्येक वैज्ञानिकों द्वारा 200–200 प्रगतिशील किसानों की फारमर्स डायरेक्टरी का निर्माण किया गया, इसमें कुल 13,000 किसानों की फामर्स डायरेक्टरी बनायी गयी है और प्रत्येक कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा फामर्स डायरेक्टी की एक–एक बुकलेट तैयार की गई है जो कि सराहनीय कार्य है।

आन लाइन **''कृषि कवच''** लॉकडाउन विशेषांक नामक अर्धवार्षिक पात्रिका के प्रथम अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि कृषि अध्यायन/अध्यायन से जुडे छात्र/छात्राओं अध्यापकों के अलावा प्रदेश के प्रगतिशील किसान भाइयों को लाभकारी सिद्ध होगी।

डा0 डी0 आर0 सिंह
कुलपति

कृषि परिवर्तन

लॉकडाउन विशेषांक

कृषि मूलस्य जीवनम्

संरक्षक

कुलपति

डा0 डी0 आर0 सिंह

चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर

प्रधान संपादक

सम्पादक

इस अंक में

	पृष्ट सं0
कोविड–19 लॉकडाउन एवं प्रभाव	5
आरोग्य सेतु, आयुष कवच एवं किसान रथ एप एवं उनका इस्तेमाल	8
कोविड–19 महामारी के दौरान व पश्चात् चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्यो0 वि0वि0 की कृषि रणनीति	11
लॉकडाउन में विश्वविद्यालय के शैक्षिक कार्यक्रम	15
विश्वविद्यालय परिसर में छात्रों/समस्त स्टाफ को कोविड–19 के संक्रमण से बचाव	17
पर्यावरण एवं आधुनिक कृषि का समंजस्य	19
स्वस्थ धरा तो काप हरा	25
प्राकृतिक खेती के सिद्धान्त एवं लाभ	26
जैविक खेती (जीव ही जीव का आधार) एवं उसके लाभ	27
तराई क्षेत्र में कृषि पर लाक डाउन का प्रभाव	30
लॉक डाउन अवधि में आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी का कृषि पर सकारात्मक प्रभाव	32
शीघ्र नष्ट होने वाले खाद् पदार्थो के लिए सलाह	34
कृषि शोध एवं परीक्षणों का महामारी काल में सफल संचालन	38
सप्लाई चेन में कृषक संगठनों का योगदान	39
लोकल के लिए बनें वोकल	41
आत्म निभ्रर किसान–आत्म निर्भर भारत एक समृद्ध स्वप्न	44
शरीर की रोगप्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में बायोफोर्टिफाईड सब्जियों की उपयोगिता	47
मीडिया की नजर में चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्यो0 वि0वि0	50

कोविड–19 लॉकडाउन एवं प्रभाव

डा0 अरविन्द कुमार सिंह
अध्यक्ष के0वी0के0, अलीगढ

24 मार्च, 2020 को, ओजस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत सरकार ने 21 दिनों के लिए देशव्यापी तालाबंदी का आदेश दिया था, भारत में कोविड–19 महामारी के खिलाफ एक निवारक उपाय के रूप में भारत की संपूर्ण 1.3 बिलियन आबादी के आंदोलन को सीमित कर दिया। 22 मार्च को 14 घन्टे की स्वैच्छिक सार्वजनिक कफर्यू के बाद यह आदेश दिया बया था, इसके बाद देश के कोविड–19 प्रभावित क्षेत्रों में नियमों की एक श्रृंखला लागू की गई थी। लॉकडाउन तब रखा गया था जब भारत में पुष्टि किए गए सकारात्मक कोरोनावाइरस मामलों की संख्या लगभग 500 थी। जनता क्फर्यू 22 मार्च को 14 घंटे का कफर्यू (सुबह 7 बजे से रात 9 बजे तक) था। कफर्यू में भाग लेने के लिए पुलिस, चिकित्सा सेवाओं, मीडिया, होम डिलिवरी पेशेवरों और अग्निशामकों जैसे आवश्यक सेवाओं के लोगों को छोड़कर सभी के लिए आवश्यक था। उस दिन शाम 5 बजे, सभी नागरिकों को अपने दरवाजे, बालकनियों या खिडकियों में खडे होने और अपने हाथों को ताली बजाने के लिए कहा गया था राष्ट्रीय सेवा योजना से संबधित लोगों को देश में कफर्यू लागू करना था। प्रधान मंत्री जी ने युवाओं से जनता कफर्यू के बारे में 10 अन्य लोगों को सूचित करने और सभी को कफर्यू का पालन करने के लिए प्रोत्साहित करने का आग्रह किया।

पर्यवेक्षको ने कहा कि लॉकडाउन ने महामारी की विकास दर को 6 अप्रैल तक बढाकर हर छह दिन में दोगुना करने की दर को धीमा कर दिया था, और 18 अप्रैल तक, हर आठ दिनों में दोगुने की दर से बढा दिया था। कोरोना वाइरस के चलते पूरे देश में लॉकडाउन था, चूंकि यह मौका देश के लोगों के सामने पहली बार आया है, इसलिए इसके बारे में आपके लिए जनता बहुत जरूरी है, इसके बारे में सही जानकारी होने से आपको इससे निपटने में काफी मदद मिलेगी, लॉकडाउन होने पर आपातकालीन सेवाओं को छोडकर दूसरी सभी सेवा पर रोक लगा दी जाती है, भारत में महाराष्ट्र और राजस्थान में सबसे पहले लॉकडाउन किया गया, उसके बाद पंजाब और उत्तराखंड हमें लॉकडाउन करने की घोषण कर दी गई, फिर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने देशभर में लॉकडाउन का एलान कर दिया।

क्या होता है लॉकडाउन ?

- लॉकडाउन का अर्थ है तालाबंदी।
- लॉकडाउन एक आपातकालीन व्यवस्था है जो किसी आपदा या महामारी के वक्त लागू की जाती है, जिस इलाके में लॉकडाउन किया गया है उस क्षेत्र के लोगों को घरों से बाहर निकलने की अनुमति नही होती है।
- उन्हें सिर्फ दवा और खाने–पीने जैसी जरूरी चीजों की खरीदारी के लिए ही बाहर आने की इजाजत मिलती है, इस दौरान वे बैंक से पैसे निकालने भी जा सकते है।
- जिस तरह किस संस्थान या फैक्ट्री को बंद किया जाता है और वहॉ तालाबंदी हो जाती है उसी तरह लॉकडाउन का अर्थ है

कि आप अनावश्यक कार्य सडकों पर न निकले।

- अगर लॉकडाउन की वजह से किसी तरह की परेशानी हो तो आप पुलिस थाने, जिला क्लेक्टर, पुलिस अधीक्षक अथवा अन्य उच्च अधिकारी को फोन कर सकते है।
- लॉकडाउन जनता की साहूलियत और सुरक्षा के लिए किया जाता है।
- सभी प्रइवेट और कॉन्ट्रेक्ट वाले दफतर बंद रहते है, सरकारी दफतर जो जरूरी श्रेणी में नही आते, वो भी बंद रहते है।

लॉकडाउन लोगों को उनके घरों से बाहर निकालने से रोकता है। सभी परिवहन सेवाओं –सडक, वायु और रेल को निलंबति कर दिया गया था, जिसमें आवश्यक वस्तुओं, अग्नि, पुलिस और आपातकालीन सेवाओं के परिवहन के अपवाद थे। शैक्षिक संस्थानों, औद्योगिक प्रतिष्ठानों और अन्य सेवाओं को भी निलंबित कर दिया गया। खाद्य दुकानें, बैंक और एटीएम, अन्य आवश्यक वस्तुएं और उनके निर्माण जैसे सेवाओं को छूट दी गई है। गृह मंत्रालय ने कहा कि जो कोई भी प्रतिबंधों का पालन करने में विफल रहता है, उसे एक साल की जेल हो सकती है।

केन्द्र सरकार की मंजूरी के बावजूद कई राज्य सरकारों द्वारा खाद्य वितरण सेवाओं पर प्रतिबंध लगा दिया था। लॉकडाउन के बाद बेरोजगार होने के कारण हजारों लोग प्रमुख भारतीय शहरों से बाहर चले गए। लॉकडाउन के बाद भारत की बिजली की मांग 28 मार्च को घटकर पॉच महीने के निचले स्तर पर आ गई।

लॉकडाउन में लोगों को कुछ परेशानियों का सामना करना पडा है, लेकिन सकारात्मक पहलू यह सामने आया है कि वातावरण में शुद्ध हवा की बयार बह रही है। मनुष्य के घरों में कैद होने से नदियों , पहाडों, वृक्षों का सौंदर्य निखर आया है। सडकों पर वाहन नही होने से प्रदूषण में काफी कमी आई है। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में जहॉ आमतौर पर हवा बेहद खराब रहती है, वहॉ भी AQI 95 से नीचे दर्ज किया गया। मुंबई में भी हवा के प्रदूषण में भारी गिरावट दर्ज की गई है। ऐसा ही मंजर देश के अन्य शहरों का है। लॉकडाउन के दौरान कारखानों से प्रदूषण नही होने से देश की प्रमुख नदियॉ गंगा–यमुना निर्मल होकर कलकल बह रही है। हवा की गुणवत्ता के बाद गंगा और यमुना का साफ जल देखकर ऐसा लगता है। कि जो काम सरकारें कई सालों तक नहीं वो लॉकडाउन ने कर दिखाया। लॉकडाउन के चलते फैक्ट्रीयॉ और उद्योग धंधे सब बंद है, इसलिए यहॉ से निकलने वाला गंदा पानी इन नदियों को प्रदूषित नहीं कर पा रहा है। लोगों की भीड नहीं होने से हरिद्वार, काशी के घाट भी स्वच्छ दिखाई दे रहे है। प्रकृति की इन सुंदर तस्वीरों को सोशल मीडिया पर खूब शेयर किया जा रहा है। प्रदूषण कम होने से

आसमान भी साफ हुआ है। हिमाचल प्रदेश में हिमरलस पर्वत की 'सफेद पर्वत' के नाम से मशहूर धौलाधार रेंज के पहाड तालधर से दिखने लगे है। इन पहाडों को देखने के लिए पर्यटक दूर–दूर से धर्मशाला पहुॅचते है, लेकिन प्रदूषण कम होने से यी श्रृंखला जालंधर के जोगों को अपने घर की छतों से ही दिखाई देने लगी और लोग इसके फोटों सोशल मीडिया पर खूब शेयर भी कर रहे है। ओडिशा के समुद्र तट पर इस बार अंडे देने के लिए 7 लाख 90 हजार ओविल रिडले कछुए पहुंचे है। असम में देश में तब से लोग घरों में बंद है, तग से प्रकृति का अलौकिक सौंदर्य भी निखरने लगा है।

प्रवासी श्रमिक

कारखानों और कार्य स्थलों के बंद करने के साथ, लाखों प्रवासी श्रमिकों को अपने भविष्य के बारे में आय, भोजन की कमी और अनिश्चितता के नुकसान से निपटना पडा। जबकि सरकारी योजनाओं ने यह सुनिश्चित किया कि लॉकडाउन के कारण गरीबों को अतिरिक्त राशन मिलेगा। बिना काम और पैसे के साथ, हजारों प्रवासी श्रमिक अपने पैतृक गॉवों में वापस जाने के लिए सैकडों किलोमीटर पैदल चलते या साइकिल चलाते देखे गए। यह भी घोषणा की कि तालाबंदी का उल्लंघन करने वालों को 14 दिनों के लिए सरकार द्वारा संचालित संगरोध सुविधाओं में भेजा जाना था। 31 मार्च को भारत के सर्वोच्च न्यायलय को दी गई अपनी रिर्पोट में केन्द्र सरकार ने कहा कि प्रवासी श्रमिक, अपने जीवित रहने के बारे में आशंकित, फर्जी खबरों से पैदा हुई घबराहट में चले गए कि तालाबंदी तीन महीने से अधिक समय तक चलेगी। मार्च के अंत में, उत्तर प्रदेश सरकार ने दिल्ली के आंनद विहार बस स्टेशन पर बसों की व्यवस्था करने का फैसला किया। देश भर के प्रवासी अप्रैल के अंतिम सप्ताह तक फंसे रहे, जब राज्य सरकारों को आखिरकार केंद्र सरकार द्वारा बसों को चलाने की अनुमति दी गई, लेकिन ट्रेनों को नहीं। 1 मई को, केंद्र सरकार ने भारतीय रेलवे को प्रवासी श्रमिकों और अन्य फंसे लोगों के लिए ''श्रमिक स्पेशल'' ट्रेनें शुरू करने की अनुमति दी। हालांकि, यह सेवा सामान्य किराए पर अतिरिक्त शुल्क के साथ मुक्त नहीं थी। केंद्र सरकार को तब विपक्ष की आलोचना का सामना करना पडा और सब्सिडी की घोषणा की। सरकार द्वारा विषेश ट्रेनों और बसों को शुरू करने के बावजूद, प्रवासी श्रमिकों ने या तो बडे समूहों में एक साथ यात्रा करना चुना। उन्होंने महसूस किया कि अपने गृहनगर में वापस जाकर, वे खेती में वापस आ सकते है और मनरेगा के तहत काम कर सकते है। 26 मई को, सुप्रीम कोर्ट ने माना कि प्रवासियों की समस्याएं अभी भी हल नहीं हुई है और सरकारों की ओर से ''अपर्याप्तता और कुछ खामियों'' को दूर किया गया है। इस प्रकार केंद्र और राज्यों को आदेश दिया कि वे फंसे हुए प्रवासी कामगारों को भोजन, आश्रय और परिवहन प्रदान करें।

आरोग्य सेतु, आयुष कवच एवं किसान रथ एप एवं उनका इस्तेमाल

डा0 हरेश प्रताप सिंह
कुलसचिव
चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्यो0 वि0वि0, कानपुर

आरोग्य सेतु

आरोग्य सेतु एप के लॉन्च होने के कुछ ही समय में दो करोड से अधिक जोगों ने इसे डाउनलोड किया है, सरकार का यह एप लेगों को कोरोना वायरस संक्रमण के खतरे से बचाने में मदद करता, एंड्रॉयड और आईफोन दोनों तरह के स्मार्टफोन पर इसे डाउनलोड किया जा सकता है, यह खास एप आसपास मौजूद कोरोना पॉजिटिव लोगों के बारे में पता लगााने में मदद करता है, आपके मोबाइल के ब्लूटूथ, स्थान और मोबाइल नंबर का उपयोग करके ऐसा किया जाता है।

आरोग्य सेतु एप एंड्रॉयड और आईफोन दोनों पर उपलब्ध है, इसे एपस्टोर के जरिये डाउनलोड किया जा सकता है ।

- ब्लूटूथ–आधारित तकनीकी पर काम करता है और उपयोगकर्ता के स्थान के आधार पर जोखिम का निर्धारण करने की कोशिश करता है।
- जोखिम कारक उस स्थान के लिए उपलब्ध आंकडों पर भी आधारित होता है।
- यह उपयोगकर्ता को सूचित करता है कि उसने 6 फिट की निकटता में पॉजिटिव केस के साथ रास्ते को पार कर लिया है।
- पीएमओ के बयान के अनुसार, ऐप एक स्थान से दूसरे स्थान तक यात्रा को सुविधाजनक बनाने वाला ई–पास भी हो सकता है।
- यदि कोई उपयोगकर्ता उच्च जोखिम में है, तो ऐप उसे पास के परीक्षण केन्द्र में परीक्षण के लिए जाने और तुरन्त टोल–फ्री न0 1075 पर कोल करने की सलाह देगा।
- ऐप उक चैटब्बोट से भी लैस है जो कोरोना वायरस बीमारी या कोवीड–19 पर सभी बुनियादी सवालों का जवाब देता है।
- उपयोगकर्ता भारत में प्रत्येक राज्य के हेल्पलाइन न0 भी पा सकते है।

आयुष कवच एप

उत्तर प्रदेश सरकार ने आयुष कवच एप लॉन्च किया है कोरोना की महामारी के बीच लोगों की सुरक्षा को देखते हुये इसे बनाया गया है, राज्य के आयुष विभाग ने इसे तैयार किया है मंगलवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने आयुष कवच मोबाइल उप का लोकार्पण किया, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने एप को लॉन्च करते हुए बताया कि यह एप आयुर्वेद में मौजूद जडी–बूटियों और चिकित्सा पद्धति पर आधारित है, कोरोना के खिलाफ जंग में दुनिया भारत की ओर आशा से

देख रही है, आयुर्वेद और भारत की प्राचीन परम्पराओं में इस प्रकार के किसी भी वायरस से लडने के लिए शरीर की प्रतिरोधक क्षमता विकसित करने से जुडे तमाम तथ्य उपलब्ध है, यह एप प्राकृतिक संसाधनों से इम्यूनिटी को बढाने के बारे में अपडेट देगा, उन्होने उम्मीद जताई की लोग इस एप का इस्तेमाल करके संक्रमण को हरा पाएंगे। आयुर्वेद चिकित्सा की ऐसी प्रणाली है जिसमें बीमारी से लडने के लिए शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढाने पर बल दिया जाता है आयुर्वेद में मौजूद जडी–बुटियों से जुडी जानकारियों और चिकित्सा पद्धति की जानकारी एप पर सरल भाषा में उपलब्ध है ऐसे गूगल एप के प्ले स्टोर से डाउनलोड किया जा सकता है, यह आयुर्वेद और योग पद्धति के आधार पर खुद की देखभाल और रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढाने के मकसद से तैयार किया गया है ।

डाउनलोड करने के बाद आपसे लॉग–इन करने के लिए अपना पासवर्ड बनाने को कहा जाएगा, साथ ही आपसे मोबाइल न0 पूछा जोएगा,बताए गए मोबाइल न0 पर वन–टाइम पासवर्ड (ओटीपी) भेजा जाएगा, इसे डालने के बाद आप इसे इस्तेमाल कर सकते है।

एप में आपसे आयुर्वेद के बारे में बताया गया है, सभी जानकारीयॉ हिंदी और अंग्रेजी दोंनो भाषा में उपलब्ध है, दूसरा सेक्शन बेहतर जीवनशैली का है, इसमें कुछ बुनियदी चीजों की जानकारी दी गई है, मसलन, सूर्योदय से एक घंटे पहले उठ जाना चाहिए, हल्के गुनगुने पानी का सेवन करना चाहिए इत्यादि, रोग प्रतिरोधक क्षमता वृद्धि आयुष मंत्रालय के उपाय 'सेक्शन में इम्सूनिटी बढाने के उपाय बताए गए है, इसमें लाइव योगा सत्र, आयुष कोविड–19 योदाधा, राज्य स्तरीय कंटोल रूम, योग तथा ध्याान वीडियों– गैलरी, कोविड–19 के अलग–बलग सेक्शन है मुखमंत्री राहत कोष कोविड केयर फंड में योगदान के लिए भी एक सेक्शन है।

जनता के उपयोग के लिए इस प्रकार के एप की आवश्यकता काफी दिनों से महसूस की जा रही थी। इस एप के लान्च होने पर अब लोगों का योग और आयुर्वेद के माध्यम से शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बढाने के नुस्खों की विस्तृत जानकारी मिल सकेगी। लोग इसके उपयोग से लाभान्वित होगे और प्राकृतिक जडी–बुटियों के प्रयोग से अपने शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढाकर रोगों को परात करे

किसान रथ

किसान रथ मोबाइल एप को कृषि मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर जी के द्वारा देश के किसानों को लाभ पहुॅचाने के लिए लॉन्च किया गया है। देशभर में इस समय कोरोना वायरस के चलते लॉकडाउन लगा हुआ है इस लॉकडाउन की वजह से किसान अपनी फसलों को बेच नही पा रहे है। लेकिन अब सरकार द्वारा शुरू किये गये इस मोबाइल एप के माध्यम से देश के किसान अपनी फसल को आनलाइन बेच सकते है और व्यापारी भी इस

मोबाइल एप के जरिये फसलों का ब्यौरा देख सकते है।

किसान रथ मोबाइल एप डाउनलोड

देश के जो किसान इस मोबाइल आप के माध्यम से सरकार द्वारा दी जा रही सुविधा लाभ उठाना चाहते है तो उन्हें सबसे पहले इस एप्लीकेशन को अपने एनरोइड मोबाइल में डाउनलोड करना होगा। इस एप से किसानों और व्यापारियों को परिवहन वाहनों के बारे में जानकारी मिलेगी। इस एप के माध्यम से किसानों को ट्रक के आने का समय और स्थान के बारे में भी जानकारी प्राप्त होगी। जानकारी प्राप्त करने के बाद किसान एक तय समय और स्थान पर जा कर फल, सब्जियों और अनाज को बेच सकेगें। इससे किसानों की आय में वृद्धि होगी और वह समय से अपनी फसल को बेंच सकेगें।

उद्देश्य

लॉकडाउन की वजह से किसान अपनी फसलों को बेंच नहीं पा रहे और उन्हें काफी नुकसान हो रहा है तथा उन्हें काफी परेशनियों का सामना करना पड रहा है इस परेशानी को देखते हुए कृषि मंत्री नरेन्द्र सिंह तौमर ने किसान रथ मोबाइल एप को लॉन्च किया है अब देश के किसान और व्यापारी इस किसान रथ मोबाइल एप के माध्यम से आसानी से फसलों की खरीद और बिक्री कर सकेगें। किसान रथ एप किसान और व्यापारी के बीच एक चेंन बनायेगी। जिससे किसानों को अपनी फसल बेंचने के लिए कहीं जाने की जरूरत नहीं है और न ही किसी दफतर के चक्कर काटने की जरूरत पडेगी।

किसान रथ मोबाइल एप के लाभ

- इस मोबाइल एप का लाभ देश के सभी किसान और व्यापारी उठा सकते है।
- यदि आप व्यापारी हैं तो आपको कंपनी का नाम , अपना नाम और मोबइल न0 के साथ रजिस्टेशन करना होगा।
- इस किसान रथ मोबाइल एप के जरिये फसलों की खरीद और बिक्री दोनो में आसानी होगी।
- इस एप से किसान और व्यापारी को परिवहन वहनों के बारे में जानकारी मिलेगी।
- इस मोबाइल एप के माध्यम से ट्रांसपोर्टस भी सामान की ढुलाई करने के लिए अपनी गाडी का रजिस्टेशन करवा सकते है।
- किसान द्वारा दर्ज ढुलाई के माल की मात्रा व्यापारियों और ट्रांसपोर्टरों दोनो को दिखाई देगा।
- कारोबारियों को अपने क्षेत्रों में बिक्री के लिए उपलब्ध कृषि उपज का पता चल जायेगा और वे विभिन्न किसानों के द्वारा भेजे जा सकने वाले कृषि वस्तुओ को जुटाकर उसे खेत से उठाने के लिए ट्रक की व्यवस्था कर सकते हैं।
- किसान रथ मोबाइल एप पर किसान अपनी फसल को पूरा ब्यौरा भी आसानी से देख सकते है। उसके बाद परिवहन सुविधांए उपलब्ध कारनी वाली नेटवर्क कंम्पनी किसानों को उस माल को पहुॅचाने

के लिए टक और किराए का ब्यौरा उपलब्ध कराएंगी।

- इस एप पर आप कस्टम हायरिंग सेंटर के माध्सम से खेती की अन्य जरूरतों के लिए मशीनरी भी बुक कर सकते हे।
- इस मोबाइल एप पर 14 हजार से अधिक कस्टम हायरिंग सेंटरों (सीएचसी) के 20 हजार से अधिक ट्रैक्टर रजिस्टर्ड है। जिससे देश के किसानों के साथ ट्रांसपोर्टरों को भी काम मिलेगा, जिसका दोना को काफी फायदा होगा।

किसान रथ मोबाइल एप को डाउनलोड कैसे करें ?

सबसे पहले आप को अपने एनरोइड मोबाइल के गुगल प्ले स्टोर पर जाना होगा। गूगल प्ले स्टोर पर जाने के बाद आप सर्च बार में किसान रथ टाइप करके सर्च करके डाउनलोड करना होगा।

कोविड–19 महामारी के दौरान व पश्चात् चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्यो0 वि0वि0 की कृषि रणनीति

डा0 अरविन्द कुमार सिंह
अध्यक्ष के0वी0के0, अलीगढ

किसानों को प्रतिकूल मौसम से होने वाले नुकसान से बचाने एवं अनुकूल मौसम से अधिकाधिक लाभ उठाने हेतु विश्वविद्यालय में कृषि जलवायु परिवर्तन से संबन्धित भारतीय समन्वित शोध परियोजना, राष्ट्रीय कृषि जलवायु प्रतिरोध क्षमता नवोन्मेशी परियोजना (निकरा) एवं मानसून मिशन–2 आदि परियोजना के माध्यम से मौसम पूर्वानुमान आधारित कृषि पर बल दिया जा रहा है उक्त परियोजनाओं के अन्तर्गत किये गये परीक्षणों के आधार पर धान की एन.डी.आर–359 प्रजाति से सी.एस.आर.–27, सरजू–52 की तुलना में 18 प्रतिशत तक अधिक उत्पादन दिया। इसी प्रकार मक्का की आजाद उत्तम, आजाद कमल एवं रबी में गेंहूँ की एच.डी. –2967, एच.डी–2733 एवं के–9107 प्रजातियों से अन्य प्रजातियों की तुलना में अधिक उपज प्राप्त हुयी। खाद्यान फसलों की प्रजातियों के साथ–साथ तिलहन व दलहन के उत्पादन में 15 से 20 प्रतिशत तक की वृद्धि दर्ज की गयी। उक्त फसलों की उत्पादन तकनीकी को विश्वविद्यालय के कार्य क्षेत्र के कृषक भी कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से लाभान्वित हो रहे हैं।

कोविड–19 लॉकडाउन के कारण उत्पन्न कृषि आधारित समस्याओं को कृषि विश्वविद्यालय, कानपुर ने कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से ग्रामीण

युवकों के कौशल विकास, कृषि आधारित लघु एवं कुटीर उद्योग व व्यवसाय विकसित कर कृषि विकास का आधार तैयार कर रहा है तथा विश्वविद्यालय के विषय विशेषज्ञ सीधे किसानों से समन्वय स्थापित कर इस कठिन परिस्थिति में भी परामर्श सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केन्दों द्वारा पोषक गृह वाटिका पर ग्रामीण महिलाओं को प्रशिक्षित कर बीज उपलब्ध कराये जा रहे हैं जिससे कृषक परिवारों का पोषण सुरक्षा सुनिश्चित हो सके।

प्रदेश की कृषि प्रणाली में गौ वंश का महत्व वैदिक काल से परिभाषित है। गायों की उपयोगिता मानव जीवन के लिए अति महत्वपूर्ण है और गाय के दूध में विभिन्न रोगों से लड़ने की क्षमता है। विश्वविद्यालय के छात्र–छात्राओं से आवाहन किया जाता है कि अपने घरों पर एक गाय को जरूर संरक्षित करें जिससे कोरोना जैसी महामारी से लड़ने में रोग प्रतिरोधक क्षमता प्राप्त हो सके। हमारे किसानों को मौसम में अचानक आ रहे बदलाव के कारण काफी नुकसान उठाना पड़ता है। कृषि विश्वविद्यालय कानपुर द्वारा मौसम आधारित कृषि परामर्श सेवाओं द्वारा कृषि पूर्वानुमान उपलब्ध कराया जा रहा है। जिससे विश्वविद्यालय कार्य क्षेत्र के कृषक लाभान्वित हो रहे हैं।

कोविड 19 की चिकित्सा में वैश्विक स्तर पर सतत प्रयासों के उपरान्त भी कोई ठोस इलाज सम्भव नहीं हो सका है। ऐसी स्थिति में शारीरिक रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाये जाने हेतु चिकित्सा क्षेत्र के विभिन्न वैज्ञानिक द्वारा औषधीय एवं सगन्धीय पौधों के उपयोग की आवश्यकता पर प्राथमिकता प्रदान की जा रही है। कृषि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिकों से आवाहन है कि फसलों, खासकर षाकभाजी, औषधीय एवं सगन्धीय पौधों के बीज तैयार करें जिनके अन्दर जीवनदायी आवश्यक पोषक तत्व मौजूद हों।

कृषि विश्वविद्यालय कानपुर द्वारा कानपुर जिला प्रसाशन को गरीब एवं बेसहारा लोगों के भरण पोषण में 40 कुन्तल गेहूं उपलब्ध कराया है, साथ ही विश्वविद्यालय में विभिन्न निर्माण कार्यों से लगे अप्रवासी श्रमिकों को भोजन आदि की व्यवस्था हेतु जनता रसोई के माध्यम से की जा रही है, और विश्वविद्यालय ने स्मार्ट हैंण्डवॉश एवं सैनेटाईजेसन टनल आदि का निर्माण कर इस महामारी को रोकने के लिए ये कारगर उपाय किये है।

विश्वविद्यालय द्वारा लो कास्ट सैनेटाइजेशन टनेल का निर्माण करके विश्वविद्यालय के प्रवेश द्वार पर स्थापित किया गया जिससे विश्वविद्यालय परिसर को कोविड–19 महामारी से सुरक्षित रखा जा सके, इस सैनिटाइजेशन माडल को अन्य कृषि विश्वविद्यालयों/अन्य शिक्षण संस्थनों द्वारा भी

लगाया जाना चाहिए।

कोविड–2019 वैश्विक महामारी के दौरान विश्वविद्यालय कार्यक्षेत्र के अन्तर्गत स्थापित कृषि विज्ञान केन्द्रों के विशेषज्ञों द्वारा जिला स्तर पर जायद सब्जियों, भिन्डी, लौकी, तोरई, करेला एवं अन्य औधानिक फसलों पर एडवाइजरी जारी करके कृषकों का सहयोग प्रदान किया गया है। फलस्वरूप इस महामारी के दौरान सभी आम जन

मानस को सब्जियों की पर्याप्त मात्रा उपलब्धता हो रही है जिससे इम्यूनिटी बढने से इस बीमारी से लड़ने की शक्ति मिल पा रही है क्योंकि इस संकट काल में कोविड 19 के विरूद्ध गठित समितियों के माध्यम से कुपोषण एवं सूक्ष्म तत्वों की कमी को रोकने हेतु शारीरिक दूरी रखते हुये आवश्यक साफ–सफाई के साथ कृषि खाद्य प्रणाली को क्रियाशील एवं नवोन्मेषी एवं घर के आस–पास से उनकी आपूर्ती सुनिश्चित करने की आवश्यकता है। साथ ही ग्रामीण महिलाओं और बच्चों को टीवी एवं कुपोषण से जन्मे विभिन्न रोगों की रोकथाम हेतु आरोग्यसेतू जैसे मोबाईल एप एवं वेब आधारित निगरानी प्रणाली विकसित करने की आवश्यकता है।

किसान भाईयों की आमदनी बढाने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संरक्षित खेती को बढावा दिया जा रहा है कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिकों द्वारा संरक्षित खेती पर प्रशिक्षण आयोजित करके प्रशिक्षित कृषकों द्वारा पाली हाउस एवं नेट हाउस के माध्यम से वर्ष भर कीमती सब्जी उत्पादन करके अधिक आमदनी प्राप्त कर रहे है। लाक डाउन के दौरान कृषकों को औद्यानिक उत्पादन को विक्रय करने के दौरान कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है इसके लिए प्रदेश सरकार द्वारा किसान रथ एप के माध्यम से कृषक अपना उत्पाद बेचने में सहयोग प्राप्त कर रहे हैं।

गॉवों से कुपोषण की समस्या को समाप्त करने के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा पायलट प्रोजेक्ट चलाया जा रहा है इसमें केन्द्र पर तथा चयनित कृषकों के यहॉ बायोफोर्टीफाइड फसलों की पोषक वाटिका तैयार की जा रही है इसमें फल एवं सब्जियों की पोषक तत्वों से भरपूर प्रजातियां उगाई जा रही है इसके अर्न्तगत सहजन (मोरिंगा) की वर्ष भर फलियॉ देने वाली प्रजातियां जो सभी विटामिन, आयरन एवं कैलशियम से परिपूर्ण है तथा अच्छी एन्टी आक्सीडेन्ट भी होती है, मीठी नीम, करोंदा, बेल, ऑवला, शहतूत के साथ–साथ अधिक पोषक वाली सब्जियों की प्रजातियों भी उगाई जा रही हैं इन सभी का इम्यूनिटी बढाने में अहम रोल है।

ग्रामीण अंचल में रोजगार में वृद्धि हो सके एवं शारीरिक रोग प्रतिरोधक क्षमता बढाने में हल्दी, अदरक, लहसुन, चुकन्दर, आंवला, पालक, ब्रोकली , नींबू वर्गीय फल, अनार, पपीता, पोदीना, तुलसी, अश्वगंधा, सौफ, लौंग, कालीमिर्च एवं गिलोय आदि को बढावा देने की बहुत ही आवश्यकता है। कृषि

विज्ञान केन्द्र द्वारा इनके कोविद 19 जैसी महामारी के बचाव हेतु उपयोग में लाने की विभिन्न माध्यमों से संस्तुतियां की गयी है।

विश्वविद्यालय द्वारा कानपुर जिला प्रशासन को गरीब एवं बेसहारा लोगों के भरण पोषण में 40 कुन्तल गेहूं उपलब्ध कराया है साथ ही विश्वविद्यालय में विभिन्न निर्माण कार्यों से लगे अप्रवासी श्रमिकों को भोजन आदि की अच्छी तरह से व्यवस्था हेतु जनता रसोई के माध्यम से की जा रही है, और विश्वविद्यालय ने स्मार्ट हैंण्डवॉश एवं सैनेटाईजेसन टनल आदि का निर्माण कर इस महामारी को रोकने के लिए ये कारगर उपाय किये है।

कोविड 19 लॉकडाउन के दौरान विश्वविद्यालय के विभिन्न पाठयक्रमों में पंजीकृत छात्र–छात्रायें अपने अविभावकों के साथ रह रहे है, ऐसी स्थिति में पाठयक्रमों को पूर्ण करने हेतु ऑनलाईन माध्यम से शिक्षण कार्य किया जा रहा है। विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न पाठयक्रमें में पंजीकृत छात्र छात्राओं के पाठयक्रम को आनलाईन शिक्षण द्वारा 90 प्रतिशत से अधिक पूरा कर लिया गया है।

विश्वविद्यालय द्वारा खरीफ फसलों से सम्बन्धित एडवाइजरी, मनरेगा के अन्तर्गत सभी कृषि विज्ञान केन्द्रों पर तालाब निर्माण सम्पर्क मार्ग निर्माण हेतु वृहद्ध प्रोजेक्ट बनाया गया है जिससे श्रमिकों को रोजगार सुनिश्चित किया जायेगा।

इस वैश्विक महामारी काल में कृषि विश्वविद्यालय, कानपुर द्वारा पूरे विश्वविद्यालय परिसर का सैनिटाइजेशन कराया गया है, विश्वविद्यालय के सभी
अधिकारियों/वैज्ञानिकों/अध्यापकों/विद्यार्थियों एवं श्रमिकों से लगातार समन्वय बनाकर एवं वीडियों कान्फरेसिंग के माध्यम से वार्तालाप करके सभी लोगों को प्रेरित किया गया है ।

कोविड–19 के बचाव के लिए किये गये लॉकडाउन में किसानों को आत्म निर्भर बनने, प्राकृतिक संसाधनों जैसे– जमीन, जल, वायु एवं जीवों में सन्तुलन बनायें रखने के लिए प्रतिदिन कुलपति जी द्वारा दैनिक समाचार पत्रों के माध्यम से सम–सामयिक एडवाजरी, नई तकनीक से आमदनी बढ़ाने एवं खाद्यान्य, फल एवं सब्जियों में मूल्य सम्बर्धन आदि के बारे में प्रतिदिन जानकारी दी जा रही है।

उत्तर प्रदेश सरकार की मनसा के अनुरूप विश्वविद्यालय के सभी कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा मनरेगा के अर्न्तगत तालाब निर्माण, मेड़बन्दी एवं रोड़ बनाने आदि के लिए 10 करोड़ की योजना बनाई गई है जिससे प्रतिदिन लगभग 1,350 ग्रामीणों को कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रक्षेत्रों पर रोजगार सृजत होगा और साथ ही विश्वविद्यालय के प्रक्षेत्र भी उपजाऊ बन सकेंगें।

इस महामारी के लॉकडाउन अवधि में जहॉ सभी जनपदों की सीमायें सील है जनपद प्रशासन से समन्वय बनाकर विश्वविद्यालय द्वारा कानपुर जनपद के अतिरिक्त जनपदों में स्थित जैसे– अलीगढ़, फरूखाबाद, मैनपुरी, कन्नौज, इटावा, फतेहपुर, रायबरेली, कानपुर देहात एवं लखीमपुर आदि बीज प्रक्षेत्रों की कटाई–मढ़ाई का कार्य सफलता पूर्वक सम्पन्न कराया जिससे आगामी रबी मौसम के लिए किसानों को बीज की समस्या न हों।

लॉकडाउन में विश्वविद्यालय के शैक्षिक कार्यक्रम

डा0 खलील खान
वैज्ञानिक (मृदा विज्ञान), के0वी0के0, कन्नौज

1. आन लाइन शिक्षण व्यवस्था :– स्नातक परास्नातक एवं पी0उच0डी0 छात्रों के लिये विश्वविद्यालय अर्न्तगत चल रहे कृषि महाविद्यालय, कानुपर परिसर, लखीमपुर खीरी, उद्यान महाविद्यालय, वानिकी, गृह विज्ञान एवं इटावा कृषि अभियांत्रिकी महाविद्यालय, डेयरी, मत्स्य महाविद्यालय, के छात्रों को आन लाइन शिक्षण की व्यवस्था प्रदान की गयी है। प्रयोगात्मक मैनुअल के माध्यम से प्रयोगात्मक पाठ्य क्रम का शिक्षण, सभी टीचिंग फैकल्टी द्वारा फोन पर छात्रों की समस्याओं का निराकरण किया गया है। सभी शिक्षकों ने छात्रों का व्हाट्सएप गुप बना कर त्वरित सर्म्पक का साधन बनाया है।

2. जे आर एफ एवं एस आर एफ हेतु प्रत्येक विषय से 500 बहुविकल्पीय प्रश्न :– लाक डाउन में घर पर रहने के दौरान विश्वविद्यालय के शिक्षकों द्वारा विद्यालय एवं देश हित में छात्र एवं छात्राओं के लिए आईसीएआर, नई दिल्ली द्वारा आशेजित आल इण्डिया इन्टेंरस एग्जामिनेशन फार एडमिशन –2020 की तैयारी के लिए 500 बहु विकल्पीय प्रश्न प्रत्येक शिक्षक द्वारा छात्र– छात्राओं को दिये गये। (कानपुर परिसर में मेजर ग्रुप विषय में 500–1000 बहुविकल्पीय प्रश्न उत्तर माला सहित) जिससे विश्वविद्यालय के अधिक से अधिक छात्र एवं छात्रायें उक्त प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण हो सकें।

3. यूपी कैटेट प्रवेश परीक्षा 2020 :– चन्दशेखर आजाद कृषि एवं प्रौ0 विश्वविद्यालय, कानपुर द्वारा उ0प्र0 संयुक्त कृषि प्रवेश परीक्षा 2020 का आयोजन की जिम्मेदारी निभा रहा है। यूपी कैटेट 2020 में आन लाइन आवेदन के लिये आवेदन की तिथि 20 फरवरी से 31 मार्च, 2020 थी। वैश्विक महामारी कोरोना वाइरस के चलते भारत सरकार की ओर से सम्पूर्ण देश में कई चरणों में लाक डाउन किया गया। जिस कारण ज्यादातर अभ्यर्थी आवेदन करने से वंक्षित रह गयें। विश्वविद्यालय प्रशासन के अनुरोध पर प्रमुख सचिव कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान उ0प्र0 ने उक्त प्रवेश परीक्षा के आवेदन की तिथि बढ़ाने की स्वीकृति प्रदान की। अब समस्त अभ्यर्थी यूपी0 कैटेट 2020 के लिये नई तिथि 2 जून 2020 तक आन लाइन आवेदन कर सकते है। अधिक जानकारी के लिये वेवसाइट पर आवेदन करें।

4. छात्रों के व्यक्तित्व विकास हेतु शार्त टर्म कोर्स :– छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व विकास हेतु शार्त टर्म कोर्स संचालित किये जायेंगें। ये कोर्स पॉच दिन, एक सप्ताह और एक महीने तक चलेंगे। इसके लिये विश्वविद्यालय प्रशासन किसी तकनीकी व निजी संस्थान से करार करेगा। लाक डाउन के दौरान शार्ट टर्म कोर्स की रूप रेखा तैयार हो गयी है। ज्यादातर छात्र शोध, नौकरी और अपना उद्योग सथापित करने में व्यस्त रहते है कई छात्र अग्रेंजी में कमजोर होने से साक्षात्कार में पीछे रह जाते है उन्हें शोध पत्र तैयार करने में कठिनाई हो रही है। ऐसे में विश्वविद्यालय प्रशासन उनके व्यक्तित्व विकास पर फोकस करेगा। उनके लिये पर्सनालिटी डेवलपमेंट, फारेन लैंग्वेज, स्टार्टअप, वैल्यू एडिशन आदि कोर्स चाले किये जायेंगे।

5. कुलपति ने छात्र एवं छात्राओं को जारी किया संदेश :– विश्वविद्यालय में अध्ययन रह रहे सभी छात्र–छात्राओं को अपनी पढाई अनवरत जारी रखने के लिये पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराकर पढ़ाई जारी रखने का कुलपति ने छात्रों के नाम संदेश जारी किया है। लाक डाउन के दौरान अपने घरों में ही रह कर महामारी के संक्रमण से बचें। ऐसे में समय का सदुपयोग करते हुये सभी छात्र एवं छात्रायें पढ़ाई के साथ विभिन्न पोर्टलों की जानकारी साझा कर कुलपति ने कहा कि अपनी विषय से सम्बन्धित पाठ्य समिग्री का अध्ययन करतें रहें। इसके अतिरिक्त देश विदेश के कई पोर्टलों की जानकारी भी साझा की गयी। कुलपति ने छात्र–छात्राओं से कहा कि इस समय का सदुपयोग पूरी निष्ढा लगन व मेहनत के साथ करें। आवश्यक पड़ने पर अपने विषय के अध्यायकों से फोन या ई–मेल के माध्यम से उचित मार्ग दर्शन प्राप्त करते रहें। इसके अतिरिक्त घर पर ही रह कर योग, प्रणायम आदि करते रहें जिससे शरीर भी स्वस्थ्य बना रहें।

6. अफगानी छात्रों का कुलपति लेते हाल–चाल :– विश्वविद्यालय में अध्ययन रहे अफगानी छात्रों का हाल चाल लाक डाउन के दौरान कुलपति स्वंय लेते हैं। विश्वविद्यालय के अन्तर्राष्टीय छात्रावास में रह रहे एम0एस0सी0 सस्य विज्ञान का फैजुल्लाह सलीम, एम0एस0सी0 सव्जी विज्ञान का नासिर मोहम्मद एवं बी0एस0सी0 सब्जी विज्ञान का सैम्स रहमान हैं। इन छात्रों को किसी प्रकार की समस्या न हो। इस लिये इन छात्रों का विषेश ध्यान रखा जा रहा है।

7. विश्वविद्यालय में आन लाइन अध्यापन कार्य 15 मई तक पूरा करने के निर्देश :– विश्वविद्यालय में प्रोफेसरों द्वारा आन लाइन आध्यापन कार्य को कुलपति ने 15 मई तक पूरा करने के निर्देश दिये। बेवकान 2020 की तैयारी के दौरान वीडियों कान्फ्रेसिंग के माध्यम से सभी अधिष्ठाताओं (कानपुर, इटावा एवं लखीमपुर खीरी) से वार्ता की तथा इस दौरान शिक्षकों द्वारा छात्र एवं छात्राओं को पढ़ाये जा रहे आन लाइन विभिन्न पाठ्य क्रमों की समीक्षा भी की।

8. लाक डाउन हटा तो आयोजित होगी परीक्षायें :– लाक डाउन समाप्त होते ही छात्र एवं छात्राओं की परीक्षायें कराई जायेंगी। कुलपति ने कहा की परीक्षाओं से पहले स्पेशल और रिमीडियल सुधारात्मक कक्षायें चलेंगी। तथा छात्र एवं छात्राओं की पढ़ाई से सम्बन्धित जो समस्यायें होगी पहले उन समस्याओं को दूर किया जायेगा। कुलपति ने कहा की लाक डाउन समाप्त होते ही प्रथम चरण में बी0एस0सी0 कृषि, एम0एस0सी0 कृषि और एम0बी0ए0 के छात्र–छात्राओं को बुलाया जायेगा। तत्पश्चात परीक्षयें सम्पन्न कराई जायेगी। छात्रावास के कमरे में केवल दो ही छात्र रहेगे। कक्षाओं प्रयोगशालाओं एवं पुस्तकलयें में शारीरिक दूरी का पालन कराया जायेगा। कोरोना महामारी के संक्रमण को रोकने के लिए छात्र एवं छात्राओं को मास्क व अन्य उपकरण मुहैया कराये जायेगे।

विश्वविद्यालय परिसर में छात्रों/समस्त स्टाफ को कोविड–19 के संक्रमण से बचाव

डा0 जी0 एस0 परिहार
चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्यो0 वि0वि0, कानपुर

चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर में कुलपति महोदय के निर्देशानुसार समस्त संकाय/विभाग के अधिकारियों द्वारा कर्मचारियों के लिये सेनेटाइजर व मास्क उपलब्ध कराये गये। इसके अतिरिक्त कुलपति महोदय ने यह भी निर्देश जारी किया कि विश्वविद्याालय क` अधिकारी शिक्षक, वैज्ञानिक एवं कर्मचारियों के विदेश में पढ रहे बच्चे फरवरी या मार्च 2020 में कानपुर आये है। तो उनका परीक्षण कराया जाये। ऐसा करने से स्वंय के साथ अन्य स्टाफ भी सुरक्षित रह सकेगा। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय परिसर को कोरोना संक्रमण से मुक्त रखने हेतु विद्याालय प्रशासन द्वारा मार्निंग वाकरों के लिये विश्वविद्यालय परिसर व बागों में भगमण अगले आदेशों तक के लिये प्रतिबन्धित कर दिया है। विश्वविद्यालय के प्रशासन ने मार्निंग वाकरों से सहयोग की आपेक्षा भी की है। इसके साथ ही कुलपति महोदय ने विश्वविद्यालय से संमबन्द्ध सभी जोगों से यह भी कहा है कि संक्रमण से बचाव के लिये सामाजिक दूरी अवश्य बनायें रहेगें। तथा अपने–2 पडोसियों को भी जागरूक करने का पयास करें। अधिष्ठाता छात्र कल्याण ने कोरोना संक्रमण के दृष्टिगत समस्त छात्रावासों को खाली करा लिया थ। कुलपति महोदय एवं परिसर में रह रहे समस्त स्टाफ ने अपने आवास के प्रांगण में दिनांक 22 मार्च 2020 को जनता कफर्यु के बाद सांय पॉच बजे मा0 प्रधानमंत्री के आहवाहन पर ताली एवं घण्टी बजायी। कुलपति महोदय ने कहा कि ताली, थाली एवं घंटी बजाने का मकसद कोरोना वायरस के खिलाफ जंग में अहम भूमिका निभा रहे डाक्टर मेडिकल स्टाफ, सफाई कर्मी, सेना पुलिस और मीडिया के लोगों का उत्साह बर्धन करना है। कुलपति महोदय ने यह भी बताया कि वैज्ञानिक दृष्टिकोंण से भी घंटीयॉ व थाली बजाने से आने वाली ध्वनि वातावरण में कम्पन्न पैदा करती है। जिससे सभी जीवाणु एवं सूक्ष्म जीव आदि नष्ट हो जाते है।

साथ ही आस– पास का वातावरण शद्ध हो जाता है लॉक डाउन के दौरान माननीय कुलपति महोदय ने कैंपस में रह रहे निर्माण कार्यो में लगे ज्ञमिक जो लॉक डाउन के चलते अपने–2 घरों को नहीं जा पाये के लिए बाटा, चावल, सहित अन्य खाद्य सामिग्री के पैकेट वितरण किये। श्रमिक परिवारों को सोशल डिस्टेंसिंग भी गनाये रखने के लिए कहा। इसके साथ ही कोरोना वाइरस से बचाव के लिये हथों को वार–वार धोने और लॉक डाउन में घर के अन्दर रहले के निर्देश भी दिये। श्रमिकों को साफ–सफाई रहने के साथ–2 आवश्यक राशन जैसे आटा, दल, चावल, तेल, नमक, आलू व प्याज तथा नहाने का साबुन इत्यदि वितरित किये। इसके साथ ही अदरक, अजवाइन, तुलसी आदि चाजें भी मुहैया कराई गयी। विश्वविद्यालय प्रशासन ने जिला प्रशासन के अनुरोध पर बेहसारा लोगों के भेजन हेतु 40 कुन्तल गहूँ दिया। लॉक डाउन में बेहसारा गरीब लोगों के भेजन के लिये व्यवस्था की जा रही थी विश्वविद्यालय के इस योगदान से इस योगदान से इसकार्य में प्रगति आई। प्रदेश की राज्यपाल आनन्दीबेन पटेल के साथ वीडियों कांफ्रेंसिंग में विश्वविद्यालय, के कुलपति महोदय ने उन्हें

विश्वविद्यालय, स्तर से किये जा रहे प्रयासों से अबगत कराया। राज्य पान महोदय ने विश्वविद्यालय, के इस प्रयास की सराहना की। कुलपति महोदय के निर्देश वा विश्वविद्यालय, परिसर वायरस के संक्रमण को देखते हुये विश्वविद्यालय, के सुरक्षा कर्मिकों, मेस के कर्मचारियों एवं निर्माणधन कार्यो में लगे श्रमिकों और ठेकेदारो को जागरूकता से बचाव के तरीके बताये। रोपण दिन में कई वार सावुन अथवा दल्कोहल वाले हैंण्ड सेनेटाइजर से 20 सेंकेण्ड तक अपने हाथें को अच्छी तरह से थोना चाहिए यादि हाथ साफ न हों तो अपनी नाक, ऑख या मुह को नही छूना चाहिए खासी के आने पर टिश्यू पेपर का इस्तेमाल करना चाहिए। बुखार आने पर चिकित्सा सम्पर्क करने की सलाह दी।

कुलपति महोदय के निर्देश पर श्रमिक कैंटीन का भी शुभांरम्भ किया गया। इस कैंटिन का शुभांरम्भ नरेन्द्र मोहन मेमोरियल डायनिंग हाल में किया गया। कुलपति महोदय ने कोरोना संकट के चलते देश व्यापी लॉक डाउन के कारण परिसर के निर्माण कार्यो में लगे छत्तीसगढ, मध्य प्रदेश , बिहार एवं झारखण्ड आदि राज्यों के श्रमिकों के परिसर वापस नही जा पाये। जिससे उनके सामने अपना व परिसर के लोगों के लिये भेजन जुताने का संकट था। परिसर में करीव 80 परिवार श्रमिकों के रह है। कुलपति महोदय ने विश्वविद्यालय के प्रक्षेत्रों पर कटाई मडाई के कार्यो को स्वयं जा कर देखा। उन्होंने पुराना दुग्ध प्रक्षेत्र, विद्याार्थी प्रषिक्षण प्रक्षेत्र एवं नवाबगंज प्रक्षेत्रों पर हो रहे फसल कटाई के कार्यो को देख और आवश्यक दिशा निर्देश भी दिये। कोरोना वाइरस के चलते सभी श्रमिकों को मुंह में अंगौछा बांधने के साथ सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करने को कहा गया। इसके साथ ही श्रमिकों को 100 अंगौछा भी वितरित किसे। महामारी से बचाव के लिये श्रमिको को वार–वार सावुन से हाथ साफ करने की सलाह दी। शरीर में प्रतिरोधक क्षमता बढाने के लिये गर्म पानी पीने, भोजन में हल्दी, धानियॉ, लहसुन आदि मसालों का प्रयोग करने की सलाह दी। कुलपति महोदय ने लॉक डाउन के दौरान आवश्यक कार्यो को अंजाद देने में जुटे कर्मचारियों को सम्मानित भी किया । सभी कर्मचारियों को कोरोना संक्रमण को प्रभावी ढंग से रोकने के लिये किये गये। सभी को अपने मोबाइल फोन में अरोग्य सेतु एप डाउन लोड करने के लिये भी निर्देश दिये। पूरे परिसर में किसी स्थान पर थूकने हेतु पूर्णतया प्रतिबंधित कर दिया गया है। पकडे जाने पर जुर्माने के साथ ही अनुशासनात्मक कार्यवाही करने की भी चेतावनी दी गयी। बिना मास्क पकढे जाने पर भी कार्यवाही कोरोना वायरस के संक्रमण की रोकने के दृष्टिगत पूरे विश्वविद्यालय, परिसर में टैक्टर चालित हई पावर स्पेयर मशीन से सेनेटाइजेशन का कार्य कराया गया। विजली पानी, साफ–सफाई सुरक्षा एवं स्वास्थ्य आदि कार्यो में लगें कर्मचारियों का उत्साह बर्धन भी किया गया।

पर्यावरण एवं आधुनिक कृषि का समंजस्य

डा0 अरविन्द कुमार सिंह
अध्यक्ष के0वी0के0, अलीगढ

विश्व भर में जलवायु परिवर्तन का विषय सर्वविदित है। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि वर्तमान परिवेश में जलवायु परिवर्तन एवं पर्यावरण संरक्षण वैश्विक स्तर पर सबसे वृहद चुनौती है जिसका समाधान वर्तमान समय की महती आवयकता है। भारतीय वन सर्वेक्षण संस्थान देहरादून की स्टेट फारेस्ट रिपोर्ट, 2019 के अनुसार भारत वर्ष में 7,12,249 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र वन आच्छादित है जिसमें 3.02 प्रतिशत अति सघन वन, 9.39 प्रतिशत मध्यम सघन वन तथा 9.2 प्रतिशत विरल वन के साथ कुल 21.6 प्रतिशत वन आच्छादन एवं 1.41 प्रतिशत वृक्ष आच्छादन है। जबकि उत्तर प्रदेष में 6.88 प्रतिशत (16582 वर्ग किलोमीटर) वन आच्छादन में 1.09 प्रतिशत सघन वन, 1.69 प्रतिशत मध्यम सघन वन एवं 3.37 प्रतिशत विरल वन क्षेत्र हैं उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में उगायी जाने वाली प्रमुख 5 प्रजातियों में क्रमशः 31.54 प्रतिशत आम, 15.86 प्रतिशत यूकेलिप्टिस, 9.60 प्रतिशत पापलर, 9.71 प्रतिशत नीम एवं 5.30 प्रतिशत बबूल का आच्छादन है जिससे प्रदेश में 115.69 मिलियन टन कुल कार्बन भण्डार विकसित हुआ है जो देश के कुल कार्बन भण्डार का 1.6 प्रतिशत एवं 424 मिलियन टन कार्बन डाई आक्साइड के समतुल्य है।

केन्द्रीय कृषि वानिकी संस्थान झांसी (2015) के अनुसार भारत वर्ष में कृषि वानिकी के अन्तर्गत 8.2 प्रतिशत क्षेत्रफल है। सर्वेक्षण दर्शाते है कि 19वीं सदी के अंत से अब तक पृथ्वी की सतह का औसत तापमान लगभग 0.9 डिग्री सेल्सियस बढ़ गया है। पृथ्वी के तापमान में वृद्धि होने से हिमखण्ड पिघलने के कारण समुद्र के जल स्तर में लगभग 8 इन्च की बढ़ोतरी दर्ज की गई है परिणामस्वरूप प्राकृतिक आपदाओं और कुछ दीपों के डूबने का खतरा भी बढ़ रहा है। अब समय आ गया है कि वर्तमान परिस्थितियों में जलवायु परिवर्तन एवं पर्यावरण प्रदूषण की दिशा में गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। जलवायु परिवर्तन के कारण कृषि, वानिकी, उद्यानिकी, पशुपालन एवं मत्सय पालन पर लाभदायक एवं हानिकारक दोनो प्रकार के प्रभाव देखे गये हैं। वर्ष 2030 तक वैश्विक कार्बन डाई आक्साईड का स्तर 350 पी.पी.एम. से 400 पी.पी.एम. तक बढने की सम्भावना व्यक्त की गयी है। इसके बढने से पत्तियों में रन्ध संकुचित होने से कम मात्रा में जल ह्रास होने के फलस्वरूप जल उपयोग क्षमता में वृद्धि होती है। साथ ही साथ वायुमण्डल में कार्बन डाइ आक्साइड सान्द्रता बढ़ जाने से पौधों में प्रकाश संश्लेषण की क्रियाशीलता बढ़ जाती है जिससे पौधों में भी वृद्धि उसी अनुपात मे बढ़ जाती है।

राष्ट्रीय स्तर पर ही नही वरन् अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी जलवायु परिवर्तन अन्य समस्याओं को पीछे छोड़ते हुए वर्तमान वैश्विक स्तर पर विश्व की सबसे प्रमुख समस्या के रूप में सामने आयी है जो जनसंख्या विस्फोट एवं मानव की प्रगतिवादी व आधुनिक सोंच न केवल प्राकृतिक संसाधनों यथा– भूमि, जल, जंगल एवं वनस्पति के अत्याधिक, अनियंत्रित एवं अविवेकपूर्ण दोहन एवं बढते प्रदूषण के कारण उत्पन्न हुई है। उक्त कारणों से आम

जन–मानस एवं वन्य जीवों के जीवन पर भी अस्तित्व का संकट उत्पन्न हो गया है। इसी प्रकार प्रदेश एवं देश में वन्य जीवों पर प्रतिकूल प्रभाव होने के फलस्वरूप विभिन्न वन्य प्रजातियों के संवर्धन एवं संरक्षण की आवश्यकता के दृष्टिगत भारत सरकार द्वारा कई पाइलट प्रोजेक्ट आरम्भ किये गये है। जिनमें प्रमुख बाघ, टाइगर, मगरमच्छ संरक्षण, हाथी, कछुवा जैसे प्रोजेक्ट शामिल है। उत्तर प्रदेश में केवल 173 बाघ शेष बचे हैं जबकि बाघों के संरक्षण हेतु 1973 में प्रोजेक्ट टाइगर परियोजना प्रारम्भ करने की आवश्यकता पडी। देश में मात्र 27312 हाथी शेष बचे हैं जो कि पूरे विश्व के केवल 55 प्रतिशत हैं।

उत्तर प्रदेश के राष्ट्रीय उद्यान दुधवा वन क्षेत्र मे मुख्य वन जीव बाघ, तेन्दुआ, भालू, गैण्डा, हाथी आदि है इसका क्षेत्रफल 490 वर्ग किलोमीटर है । इसके अतिरिक्त टाइगर रिजर्व अमानगढ़ टाइगर आरक्षित वन क्षेत्र जो कि विजनौर जनपद में स्थित है इसका क्षेत्रफल 95 वर्ग किलोमीटर है जिसमे बाघ, तेन्दुआ, हाथी और अन्य वनजीव है एवं पीलीभीत टाइगर आरक्षित वन क्षेत्र में बाघ, तेन्दुआ, गैण्डा, और अन्य वनजीव है इसका क्षेत्रफल 730 वर्ग किलोमीटर है । मानव समाज द्वारा वन्य जीवो को समय–समय पर भारी नुकसान पहुचाया जा रहा है। वर्ष 2018 की गणना के अनुसार देश में कुल 2967 टाइगर की संख्या ही बची है एवं उत्तर प्रदेष में केवल 173 बाघ की संख्या ही बची है । इसके अतिरिक्त उत्तर प्रदेश मे कुल 25 वन्य जीव विहार है, मानव के स्वास्थ्य एवं सुख के लिए इन वन्य जीव विहारों को संरक्षित करनें की आवश्यकता है।

भारत सरकार द्वारा जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्य योजना का शुभारंभ वर्श 2008 में किया गया जिसका उद्देश्य जनता के प्रतिनिधियों, विभिन्न सरकारी एवं गैर सरकारी एजेंसियों, वैज्ञानिकों, उद्योगों और जन समुदायों को जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न खतरे एवं उनके समाधान के बारे में जागरूक करना है। इसके अतिरिक्त भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर अन्य कई महत्वपूर्ण योजनायें जैसे राष्ट्रीय सौर मिशन, विकसित ऊर्जा दक्षता के लिए राष्ट्रीय मिशन, राष्ट्रीय जल मिशन, सुस्थिर हिमालयी परिस्थितिक तंत्र हेतु राष्ट्रीय मिशन, हरित भारत हेतु राष्ट्रीय मिशन, सुस्थिर कृषि हेतु राष्ट्रीय मिशन एवं जलवायु परिवर्तन हेतु रणनीतिक ज्ञान पर राष्ट्रीय मिशन आदि कार्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं।

मनुष्य के जीवन एवं विकास के लिए जल एवं वायु दोनों ही तत्वों की अहम भूमिका है। जलवायु दोनों ही एक दूसरे के पूरक है। इसको गहनता से समझाने एवं समझने की आवश्यकता है। जल के बिना वृक्ष का विकास नहीं हो सकता एवं वृक्ष के बिना जल का संरक्षण कर पाना सम्भव नहीं है। इसके लिए प्रदेश सरकार द्वारा विशेष प्रयास किया जा रहा है पूरे प्रदेश में इस वर्ष 25 करोड़ पौधों का रोपण किया जा रहा है प्रदेश के कृषि विभाग द्वारा 168 लाख पौधों का रोपण किया जा रहा है।

वृक्ष मनुष्य के स्वास्थ का सबसे बड़ा रक्षा कवच है, मनुष्य ने अपने विकास के लिए इस '' सुरक्षा कवच को नष्ट करना प्रारम्भ कर दिया है, जिसके फलस्वरूप कोविड–19 जैसी महामारी ने हमे अपने घरों में रहने व सोसल डिस्टेन्सिंग के लिए मजबूर कर दिया, भारत सरकार एवं प्रदेश सरकार के सफल प्रयासों से एवं योजनाओं के कारण '' आत्मनिर्भर भारत '' की परिकल्पना को साकार करने में सभी प्रदेश वासियों का योगदान अपेक्षित है। विगत वर्ष उत्तर प्रदेश में कुल 22 करोड़ वृक्षारोपण सफलतापूर्वक कराया गया है जो कि विश्व रिकार्ड है। वर्ष 2020 में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 25 करोड़ वृक्षारोपण का लक्ष्य निर्धारित किया गया है जो कि मानव के स्वास्थ्य एवं सुख के लिए भविष्य में बहुत प्रभावी साबित होगा। वर्ष 2019 में प्रयागराज में पौधारोपण का निःशुल्क वितरण होने के बाद इसे गिनीज द्वारा दुनिया में सबसे अधिक वितरण के रूप में प्रामाणित किया गया था। प्रयागराज में 66000 से अधिक पेड़ों को मुक्त में वितरित किया गया था।

विश्व पर्यावरण दिवस पर्यावरण की सुरक्षा और संरक्षण हेतु विश्व में मनाया जाता है, इस दिवस को मनाने की घोषणा संयुक्त राष्ट्र संघ ने पर्यावरण के प्रति वैश्विक स्तर पर राजनीतिक एवं सामाजिक जागृति लाने हेतु वर्ष 1972 में की थी। तत्पष्चात् प्रथम विश्व पर्यावरण दिवस 05 जून 1974 को मनाया गया। विश्व पर्यावरण दिवस हमे हमारे मनीशियों द्वारा प्राकृतिक संसाधनों एवं पर्यावरण संरक्षण को संरक्षित करने हेतु निरूपित संकल्प पुंजो के स्मरण एवं अनुगमन एवं अनुपालन करने के उद्देश्य से मनाया जाता है जिससे हम प्रकृति एवं प्राकृतिक संसाधनों के अविवेक पूर्ण दोहन प्रति सजग रह कर उनका न्यायिक उपयोग कर कृषि उत्पादों के साथ–साथ एवं वनोत्पाद में आशातीत वृद्धि कर सके। विश्व पर्यावरण दिवस '' केवल एक पृथ्वी'' थीम के साथ किया जाता है और इसका मुख्य उद्देश्य है '' स्वस्थ्य पर्यावरण खुशहाल भविष्य''। मानव स्वास्थ्य एवं खुशहाल भविष्य के लिये विश्व पर्यावरण दिवस 100 से अधिक देशों द्वारा मनाया जाता है। मानव शरीर एवं मानव सभ्यता का मूल आधार '' पंच तत्व जैसे–छिति, जल, पावक, गगन एवं समीर मे वृक्षों की मुख्य भूमिका है, इसीलिय वृक्षों में देवी देवताओं का निवास मानते हुए जगह–जगह पर नीम, पीपल या अन्य वृक्षों की विधिवत पूजा की जाती है। उत्तर प्रदेश मे कुल भूमि क्षेत्र 24.09 लाख हे0 है जिसमे कुल वन क्षेत्र 1.66 लाख हे0 ही बचा है, विगत 5–6 दशकों में मनुष्य ने अपनी महात्वाकांक्षा की पूर्ति हेतु वनों की कटाई की। प्राकृतिक संतुलन के लिये 25–30 प्रतिशत वन क्षेत्र आवश्यक है, आज प्रदेश में यह वन क्षेत्र 6.8 प्रतिशत रह गया है।

इस वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस पर जैव विविधता पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है, अलग–अलग तरह की वनस्पतियों एवं जानवरो का संग्रह है जो एक ही विशेष क्षेत्र में रहते है। जैव विविधता जितनी समृद्ध होगी उतना ही सुव्यवस्थित और

संतुलित हमारा वातावरण होगा ताकि अलग–अलग तरह की वनस्पति तथा जीव–जन्तु भी धरती को रहने के योग्य बनाने के लिए अपना योगदान देते रहे। इंसान के जीवन के पीछे भी जैव विविधता का ही हाथ है। ऐसा इसलिए है कि क्योंकि अलग–अलग जन्तु और पेड़ पोधें ही मिलकर मुनष्य की मूल्य भूत जरूरतें नूरी करने में सहायता करते है। एक अनुमान के मुताबिक पूथ्वी पर लगभग 300000 वनस्पति तथा इतने ही जानवर है जिसमें पक्षी, मछलियां, स्तनधारी, कीड़े, सींप आदि शामिल है। जैव विविधता के महत्वपूर्ण होने के पिदे तर्क है कि यह पारिस्थितिकीय प्रणाली के संतुलन को बनाकर रखती है। विभिन्न प्रकार के पशु–पक्षी तथा वनस्पति एक दूसरे की जरूरतें पूरी करते है और साथ ही यह एक दूसरे पर निर्भर भी है। हमारी जैव विविधता की समृद्धि ही पृथ्वी पर रहने के लिए तथा जीवन यापन के लायक बनाती है। र्दुभग्य से बढता हुआ प्रदूषण हमारे वातावरण पर गलत प्रभाव डाल रहा है। बहुत से पेड पौधें तथा जानवर प्रदूषण के दुष्परिणाम के चलते अपना अस्तित्व खो चुके है और कई लुप्त होने की रहा पर खडे है।

सबसे पहले हमें जैव विविधता के महत्व को समझना होगा। वनों की कटाई एक बहुत बडी वजह है जैव विविधता में होती गिरावत का। इससे न सिर्फ पेड़ों की संख्या घटती जा रही है बल्कि कई जानवरों एवं पक्षियों से उनका आशियाना भी छिनताजा रहा है जो उनके जीवन निर्वाह में एक बडी मुसीबत बन चुका है। वातावरण की दुर्गति को देखते हुए इस पर तुरन्त प्रभाव से नियंत्रण करना होगा। सडकों के दौडते बडे–बडे वाहन बडे पैमाने पे प्रदूषण फैला रहे है जो मनुश्य जाति के लिए बहुत बडा खतरा है। वातावरण की शुद्धता को बचाने के लिए इन वाहनों पर अंकुश लगना होगा ताकि यह वातावरण को और दूषित न कर पाए। फैक्टरियों से निकलता दूषित पानी जल जीवन को खराब रि रहा है। पानी में रहने वाले जीवों की जान पर संकट पैदा हो गया है। इस निकलते दूषित पानी का जल्दी से जल्दी उचित प्रबन्ध करना होगा ताकि यह बडी आपदा का रूप न ले लें।

किसान भाईयों की आमदनी बढाने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संरक्षित खेती को बढावा दिया जा रहा है कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिकों द्वारा संरक्षित खेती पर प्रशिक्षण आयोजित करके प्रशिक्षित कृषकों द्वारा पाली हाउस एवं नेट हाउस के माध्यम से वर्ष भर कीमती सब्जी उत्पादन करके अधिक आमदनी प्राप्त कर रहे है लाक डाउन के दौरान कृषकों को औद्यानिक उत्पादन को विक्रय करने के दौरान कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है इसके लिए प्रदेश सरकार द्वारा किसान रथ एप के माध्यम से कृषक अपना उत्पाद बेचने में सहयोग प्राप्त कर रहे हैं।

वर्तमान कृषि परिवेश में कोविड–19 जैसी प्राकृतिक प्रकोपों की बारम्बारता एवं सघनता का क्रम निरन्तर बढ़ता जा रहा है, जिससे हमारे किसान भाइयों के समक्ष अस्तित्व का संकट उत्पन्न हो रहा है। उक्त के साथ ही हमारे देश के नागरिकों की अतिवादी सोच ने राष्ट्र के सम्मुख असमय कोरोना, सार्स, मर्स, इबोला, बर्ड फ्लू, जीका वायरस जैसी असाधि व्याध्यिों के साथ ही वैश्विक तापमान में अभिवृद्धि, ध्रुवीय तापमान का पिघलना, समुद्र के जलस्तर में अभिवृद्धि, ग्रीन हाउस गैसों से उत्पन्न दुष्प्रभावों, भारी धातुओं के प्रयोग एवं भण्डारण से उत्पन्न विशाक्तता न केवल फसलों को शीघ्र

परिपक्वता के लिए ही विवश नहीं कर रही है, अपितु इन सभी मानवजनित उत्पन्न आपदाओं ने आज हम सभी को कितना विवश एवं बेबस कर रखा है कि सभी अपनी समस्याओं पर एक साथ बैठकर विचार विमर्श नहीं कर सकते। शायद हम सभी आज भी यह मानने को तैयार नहीं हैं कि इस त्रासदी जघन्य संकट के लिए हमारी प्रगतिवादी, आत्मघाती सोच ही उत्तरदायी है।प्राकृतिक असंतुलन का ही भयानक परिणाम हैं ये भयानक महामारियॉ । यदि मानव सभ्यता को बचाना है तो वर्तमान कृषि प्रणाली में कृषि वानिकी , उद्यानिकी, पशुपालन, मत्स्य पालन सभी को अपनी खेती में बराबर का स्थान देना होगा। कृषि विश्वविद्यालय कानपुर के 13 कृषि विज्ञान केन्द्र अलीगढ़, हाथरस, कासगंज, फिरोजाबाद, इटावा, कानपुर देहात, फतेहपुर , रायबरेल, लखीमपुर, हरदोई, कन्नौज एवं फर्रूखाबाद जनपदो में एकीकृत फसल प्रणाली के लिए अलग–अलग खेती के मॉडल बनाने हेतु परियोजना राज्य सरकार को भेजी है, प्राकृतिक कृषि की दिशा में यह एक बहुत ही सार्थक उपाय साबित होगा।

किसानों को लाभ पहुँचाने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा गेहूँ क्रय करने का लक्ष्य अब तक का सर्वाधिक रखा गया है, इस लॉकडाउन की अवधि में कुल 55 लाख मिलियन टन गेहूँ के भण्डारण के लिए प्रदेश में कुल 5500 गेहूँ बिक्रय केन्द्रों की स्थापना की गई है जिन किसानों के पास आधार कार्ड न भी हो मोवाइल से टोकन प्राप्त कर गेहूँ के क्रय केन्द्र प्रभारी को अपना पहचान पत्र, बैंक पास बुक और खतौनी को दे कर भी किसान भाई अपना गेहूँ आसानी से बेंच सकते है।

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा कृषि फसलों में कटाई उपरान्त होने वाले नुकसान को रोकने के लिए वेयर हाउस, कोल्ड स्टोरेज, कोल्ड चैन सुविधा द्वारा दूध एवं अन्य शीघ्र नष्ट होने वालों पदार्थों को हानि से बचाने हेतु क्षमता विकास एवं उचित बाजार मूल्य उपलब्ध कराने की दिशा में आवश्यकत कदम उठाये गये है। हमारे संज्ञान मे है कि विश्वविद्यालय अपने कृषि विज्ञान केन्द्रों के मध्यम से कृषि यंत्रों की कस्टम हायरिगं सेवायें एवं भण्डारण सुविधाओं को सुदृढ़ कर रहा हैं। ग्रामीण महिलाओं के माध्यम से पोशक गृह वाटिका के लिए ग्रामीण महिलाओं को प्रषिक्षित कर बीज उपलब्ध कराने का कार्य भी किया जा रहा हैं। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा कृषि निवेश, उर्वकर , बीज तथा कृषि उपकरणों पर सब्सिडी प्रदान की जा रही है। कृषि रक्षा रसायनों पर 50 प्रतिशत ,कृषि यन्त्रों पर 20 से 50 प्रतिशत, गेहूँ बीजो को चयनित प्रजातियों पर प्रति किग्रा, 14 रू0 तक, दलहनी बीजों पर 40–45 रू0 प्रति किग्रा संकर धार पर 130रू प्रति किग्रा तथा संकर मक्का व ज्वार पर 100 रू0 प्रति किग्रा तक अनुदान प्रदान किया जा रहा है।

नोवल कोरोना विषाणु के विश्व में महामारी के रूप में फैलने के बाद कृषि उत्पादन एवं खाद्य सुरक्षा के महत्व को पुनः रेखांकित किया गया है। उत्तर प्रदेश की सरकार के सामने उत्पादन एवं आपूर्ति चेन को बनाये रखना सबसे बड़ी चुनौती है जिसको प्रदेष सरकार द्वारा प्राथमिकता के आधार पर खाद्य आपूर्ति चेन बनाये जाने के आदेश प्रदान किये गये हैं जिससे प्रदेष वासियों को किसी तरह की परेशानी का सामना न करना पड़े। कोविड–19 के बचाव के लिए किये गये लॉकडाउन में किसानों को आत्म निर्भर बनने, प्राकृतिक संसाधनों जैसे–

जमीन, जल, वायु एवं जीवों में सन्तुलन बनायें रखने के लिए प्रतिदिन कुलपति जी द्वारा दैनिक समाचार पत्रों के माध्यम से सम–सामयिक एडवाजरी, नई तकनीक से आमदनी बढ़ाने एवं खाद्यान्य, फल एवं सब्जियों में मूल्य सम्बर्धन आदि के बारे में प्रतिदिन जानकारी दी जा रही है।भारत सरकार एवं राज्य सरकार ने वर्ष 2008 से ही जलवायु परिवर्तन की विभीषिका पर कार्य करना प्रारम्भ कर दिया है। इसी क्रम में बृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम ,राष्ट्रीय जल मिशन एवं राष्ट्रीय सौर मिशन आदि योजनाओं की तकनीकी जानकारी और महत्व को प्रदेश के किसानों के लिए कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा प्रसारित किया जा रहा है जो एक सराहनीय कदम है।

कृषि वानिकी हमारी सदियों पुरानी परम्परा है कृषि और वन भी एक दूसरे के बिना अधूरे है, मानव विकास की प्रतिस्पर्द्धा में हमने कृषि को तो अत्यधिक सक्षम बनाने के कार्य किया परन्तु वानिकी जो कि आदिकाल में मानव सभ्यता का आधार थी उसको बेहद कमजोर करने का कार्य किया है।

प्रदेश की कृषि के संतुलित विकास के लिए जल प्रबन्धन एक बहुत ही आवश्यक पहल है, जल प्रबन्धन फसलोतपादन का आधार भी है जल ही जीवन है जल संचय के साथ–साथ भूमि गत जल स्तर का लगातार कम होना या गिरना अत्यन्त चिन्ताजनक विषय है। इसके लिए हर खेत पर मेड़ और हर मेड़ पर पेड़ का नारा बुलन्द किया जाना वर्तमान समय की सबसे बड़ी मांग है।

वर्तमान कृषि परिवेश में कृषि, वानिकी, उद्यानिकी, पशुपालन एवं मत्सय पालन पर प्राकृतिक आपदाओं बारम्बारता एवं सघनता का क्रम निरन्तर बढ़ता जा रहा है, जिससे हमारे कृषक भाइयों के समक्ष जीवनयापन के अस्तित्व का संकट उत्पन्न हो रहा है। उक्त के साथ ही हमारे देश के नागरिकों की अतिवादी सोच ने राष्ट्र के सम्मुख असमय कोरोना, सार्स, इबोला, बर्ड फ्लू, जीका वायरस जैसी असाधि व्याधियों के साथ ही वैश्विक तापमान में अभिवृद्धि, समुद्र के जलस्तर में वृद्धि, ग्रीन हाउस गैसों से उत्पन्न दुष्प्रभावों, अत्याधिक कीटनाशकों के उपयोग एवं भण्डारण से उत्पन्न विषाक्तता आदि ने न केवल फसलोंत्पादन को प्रभावित किया है अपितु इन सभी मानवजनित उत्पन्न आपदाओं ने आज हम सभी को इन सभी समस्याओं पर सोंचने एवं उसके निदान हेतु विवश कर दिया है। शायद हम सभी आज भी यह मानने को तैयार नहीं हैं कि इस त्रासदी जघन्य संकट के लिए हमारी प्रगतिवादी, आधुनिक जीवन शैली, संसाधनों का दोहन, आत्मघाती सोंच ही उत्तरदायी है। हमारे समाज के सम्मुख घटित होने वाली सभी घटनाएं चाहे वह सुखद हो अथवा दुःखद हमें कुछ न कुछ सीख अवष्य ही प्रदान करती है। अपनी उन सीखों एवं अनुभवों से ज्ञान प्राप्त कर हम अपनी अवश्यम्भावी भूलों को सुधारकर स्वयं अपने समाज एवं राष्ट्र के सम्मुख उत्पन्न अस्तित्व विनाशक संकटों से प्रभावी बचाव कर सकते है।

स्वस्थ धरा तो काप हरा (प्राकृतिक खेती)

डा0वी0के0 कन्नौजिया
अध्यक्ष , के0वी0के0, कन्नौज

प्राकृतिक खेती देशी गाय के गोबर एवं मौसम पर आधारित खेती है। एक देशी गाय के गोबर एवं गौमूत्र से एक किसान तीस एकड़ जमीन पर प्राकृतिक खेती कर सकता है।। देशी प्रजाति के गौवंश के गाोबर एवं मूत्र से जीवामृत, धनजीवामृत तथा जामन बीजामृत बनाया जाता है। इनका खेत में उपयोग करने से मिट्टी में पोषक तत्वों की वृद्धि के साथ–साथ जैविक गतिविधियों का विस्तार होता है। जीवामृत का महीने में एक अथवा दो बार खेत में छिडकाव किया जा सकता है। जबकि बीजामृत का इस्तेमाल बीजों को उपचारित करने में होता है। प्राकृतिक विधि से खेती करने वाले किसान को बाजार से किसी प्रकार की खाद और कीटनाशक रसायन को खरीदने की जरूरत नहीं पडती है। फसलों की सिंचाई के लिए पानी एवं बिजली भी मौजूदा खेती बाडी की तुलना में दस प्रतिशत ही खर्च होती है।

सफल उदाहरणः–

गाय से प्राप्त सप्ताह भर के गाोबर एवं गौमूत्र से निर्मित घोल का खेत में छिडकाव खाद् का काम करता है। और भूमि की उर्वरता का हास भी नहीं होता है। इसके इस्तेमाल से एक और जहॉ गुणवत्ता पूर्ण उपज होती है, वहीं दूसरी ओर उत्पादन लागत लगभग शुन्य रहती है। राजस्थान में सीकर जिले के एक प्रयोग धर्मी किसान मान सिंह कटराथल ने अपने खेत में प्राकृतिक खेती कर उत्साहवर्धक सफलता हासिल की है। श्री सिंह के मुताबिक इससे पहले वह रासायनिक खेती करता था। लेकिन देशी गाय के गाोबर एवं गौमूत्र आधारित प्राकृतिक खेती कहीं ज्यादा फायदेमंद साबित हो रही है।

प्राकृतिक खेती के सूत्रधार महाराष्ट्र के सुभाष पालेकर की मानें तो वैश्विक तापमान वृद्धि में रासायनिक खेती एक महत्वपूर्ण यौगिक है। वर्मीकम्पोस्ट का जिक्र करते हुये सुभाष पालेकर जी कहते है। यह विदेशों से आयोजित विधि है। और इसकी ओर सबसे पहले रासायनिक खेती करने वाले ही आकर्षित हुये है। क्योंकि वे यूरिया से जमीन के प्राकृतिक उपजाऊपन पर पड़ने वाले प्रभाव से वाकिफ हो चुके है।

वर्मीकम्पोस्ट खाद् एवं पर्यावरण पर असर :–

कृषि वैज्ञानिक एवं इसके जानकारों के अनुसार फसल की बुवाई से पहले वर्मीकम्पोस्ट और गोबर खाद खेत में डाली जाती है। और इसमें निहित 46 प्रतिशत उडनशील कार्बन हमारे देश में पड़ने वाली 36 से 48 डिग्री सेल्सियस तापमान के दौरान खाद से मुक्त हो वायुमण्डल में निकल जाता है। इसके अलावा नाइट्रस आक्साइड और मीथेन भी निकल जाता है। और वायुमंण्डल में हरित गृह निर्माण में

सहायक बनती है। हमारे देश में दिसम्बर से फरवरी केवल तीन महीने ही ऐसा है। जब तापमान उक्त खाद के उपयोग के लिए अनुकूल रहता है।

आयाजित केंचुआ या देशी केंचुआः–

वर्मीकम्पोस्ट खाद् बनाने में इस्तेमाल किसे जाने वाले आयाजित केंचुओं को भूमि की उपजाऊपन के लिये हानिकारक मानने वाले श्री पालेकर बताते है कि फसल इसमें देशी केंचुओं का एक भी लक्षण दिखाई नहीं देता है। आयात किया हुआ यह जीव केंचुआ न होकर आइसीनिया फादटिडा नामक जन्तु है। जों भूमि पर स्थित काष्ट पदार्थ या गोबर खाता है। जबकि हमारे यहॉ पर पाया जाने वाला देशी केंचुआ मिट्टी एवं इसके साथ जमीन में उपस्थित कीटाणु एवं जीवाणु जो फसलों एवं पेड पौधों को नुकसान पहुॅचाते है। उन्हें खाकर खाद में रूपान्तरित करते है। साथ ही जमीन के अन्दर बहार ऊपर नीचे होता है। जिससे भूमि में असंख्य छिद्र होते है। जिससे वायु का संचार एवं बरसार के जन का पुर्नगठन हो जाता है इस तरह देशी केंचुआ जल प्रबन्धन का सबसे अच्छा वाहक है। साथ ही खेत की जुताई करने वाले ''हल'' का काम भी करता है।

प्राकृतिक खेती के सिद्धान्त एवं लाभ

डा0 अरविन्द कुमार सिंह
अध्यक्ष के0वी0के0, अलीगढ

प्राकृतिक खेती ग्लोवल फार्मिंग और वायुमण्डल में आने वाले बदलाव का मुकाबला एवं उसे रोकने में सक्षम है। इस तकनीकी का इस्तेमाल करने वाले किसान कर्ज के झंझट से मुक्त रहता है। प्राप्त जानकारी के अनुसार देश में करीब 40 लाख किसान इस पद्धति से जुडे है।

प्राकृतिक खेती से लाभ :–

1. विषमुक्त एवं पौष्टिक भोजन की प्राप्ति होती है।
2. कृषि कार्य में सीमित श्रमिकों से अधिक उत्पादन।
3. प्राकृतिक उपलटध संसाधनों से कृषकों द्वारा स्वयं खाद् व दवाओं का कम लागत में निर्माण।
4. भूमि में निरन्तर कम हो रही उर्वरशक्ति को बढाना।

प्राकृतिक खेती के सिद्धान्त :–

1. खेतों में कोई जुताई नहीं करनी है। और न ही मिट्टी पलब्ना है। सदियों सें किसानों ने यह सोच रखा है कि फसले उगाने के लिये हल अनिवार्य है। लेकिन प्राकृतिक सिद्धात खेत न जोतना है। धरती अपनी जुताई स्वयं स्वभाविक रूप से पौधों की जडों के प्रवेश तथा केंचुओं व छोटे

प्राणियों तथा सूक्ष्म जीवाणुओं के जारिये कर लेती है।

2. किसी भी तरह की तैयार खाद् या रासायनिक उर्वरकों न किया जाये।
3. खेत में मिटटी गुडाई न की जाये। बुनियादि सिद्धांत यही है कि खरपतवार को पूरी तरह समाप्त करने के बजाये नियंत्रित किया जाना चाहिए। खरपतवार नियंत्रित करने के लिए पुआल बिछाने जैसे तरीके अपनाना चाहिए।
4. जोतने तथा उर्वरकों के उपयोग जैसी गलत प्रथाओं के कारण जब से कमजोर पौधे उगना शुरू हुये, तब से ही खेतों में बीमारियॉ लगने तथा कीट असंतुलन की समस्यायें खडी होनी शुरू हुई। छेड–छाडन करने से प्रकृति संतुलन सही रहता है। नुकसान छेद कीढे तथा बीमारियों तो मौजूद हमेशा ही रहती है। लेकिन प्रकृति में वे इतनी ज्यादा कमी नहीं हो पाती कि उनके लिए विषाक्त रसायनों का उपयोग किया जाये। बीमारियों एवं कीटों के बारे में सही तरीका यही है कि स्वस्थ्य पर्यावरण में पुष्ट फसलें उगाई जायें।

जैविक खेती (जीव ही जीव का आधार) एवं उसके लाभ

डा0 खलील खान
वैज्ञानिक (मृदा विज्ञान) , के0वी0के0, कन्नौज

ऐसी खेती जिसमें दीर्घ कालीन व स्थिर उपज प्राप्त करने के लिए कारखानों में निर्मित रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशियों व खरपतवार नाशियों तथा वृद्धि नियंत्रण का प्रयोग न करते हुये जीवांश युक्त खादों का प्रयोग किया जाता है तथा मृदा एवं पर्यावरण प्रदूषण पर नियन्त्रण होता है। यही जैविक खेती कहलाती है।

परिचय :– सम्पूर्ण विश्व में बडी जनसंख्या एक गम्भीर समस्या है। बढती हुई जनसंख्या के साथ भोजन की आपूर्ति के लिए मानव द्वारा खाद्य उत्पादन की होड में अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिये तरह–तरह की रासायनिक खादों, जहरीले कीटनाशकों का उपयोग पारिस्थतिकीय तन्त्र प्रकृति के जैविक और अजैविक पदार्थो के बीच आदान–प्रदान के चक्र को प्रभावित करता है। जिससे भूमि की उर्वराशक्ति खराब हो जाती है। साथ ही वातावरण प्रदूषित होता है तथा मनुष्य के स्वास्थ्य में गिरावट आती है।

प्राचीन काल में मानव स्वास्थ्य के अनुकूल तथा प्राकृतिक वातावरण के अनुरूप खेती की जाती थी जिसके जैविक और अजैविक पदार्थो के बीच आदान–प्रदान का चक्र निरन्तर चलता रहता था। जिसके फलस्वरूप जलभूमि, वायु तथा वातावरण प्रदूषित नही होता था। भारत वर्ष में प्राचीन काल से ही कृषि के साथ–साथ गौपालन किया जाता था। जोकि प्राणीमात्र के लिसे अत्यन्त उपयोगी था। परन्तु बदलते परिवेश में रासायनिक खादों व

कीटनाशकों का प्रयोग हो रहा है। जिसके फलस्वरूप पदार्थों के चक्र का संतुलन बिगडा रहा है तथा मानव जाति के स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है अब हम रासायनिक खादों, जहरीले कीटनाशकों के उपयोग के स्थान पर जैविक खादों एवं दवाइयों का उपयोग कर अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकते है। जिससे भूमि, जल एवं वातावरण शुद्ध रहेगा और मनुष्य एवं प्रत्येक जीवधारी स्वस्थ्य रहेगें।

भारत वर्ष में ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है। और कृषकों की मुख्य आय का साध्न खेती है। चूंकि रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से खाद्य पदार्थ जहरीले हो रहे है। इस लिए उपरोक्त समस्यायें से निपटने के लिए जैविक खेती की सिफारिश की गयी है। इस विशेष प्रकार की खेती को बढावा देने के लिये और प्रचार–प्रसार की आवश्यकता है।

जैविक खेाती से होने वाले लाभ

कृषकों की दृष्टि से लाभ :–

- भूमि की उपजाऊ क्षमताओं में वृद्धि हो जाती है।
- सिंचाई अंतराल में वृद्धि होती है।
- रासायनिक खाद् पर निर्मरता कम होने पर लोगत में कमी आती है।
- फसलों की उत्पादकता में वृद्धि।
- बजारों में जैविक उत्पदों की मांग बढाने से किसानों की आय में भी वृद्धि होती है।

मिटटी की दृष्टि से लाभ :–

- जैविक खादों के उपयोग करने से भूमि की गुणवत्ता में सुधार आता है।
- भूमि की जल धारण क्षमता बढाती है।
- भूमि से पानी का वाष्पीकरण कम होता है।

पर्यावरण की दृष्टि से लाभ :–

- भूमि के जल स्तर में वृद्धि होती है।
- मिटटी खाद्य पदार्थ और जमीन में पानी के माध्यम से होने वाले प्रदूषण में कमी आती है।
- कचरे का उपयोग, खाद बनाने में, होने में बीमारियों में कमी आती है।
- फसल उत्पादन की लागत में कमी एवं आय में वृद्धि।
- अन्तर्राष्ट्रीय बाजार की स्पधी में जैविक उत्पाद की गुणवत्ता का खरा उतरना।

आधुनिक समय में निरन्तर बढती हुई जनसंख्या पर्यावरण प्रदूषण, भूमि की उर्वराशक्ति कर संरक्षण एवं मानव स्वास्थ्य के लिये जैविक खेती की राह

अत्यन्त लाभदाय है। मानव जीवन के विकास के लिये नितान्त आवश्यक है कि प्राकृति संसाधन प्रदूषित हो। शुद्ध वातावरण रहें एवं पौष्टिक अहार मिलता रहे। इसके लिये जैविक खेती की कृषि पद्धतियों को अपनाना होगा जोकि हमारे नैसर्गिक संसाधनों एवं माननीय पर्यावरण को प्रदूषित किये बगैर समस्त जनमानस को खाद्य सामिग्री उपलब्ध करा सकेगी तथा हमें खुशहाल जीने की राह दिखा सकेगी।

जैविक खेती हेतु प्रमुख जैविक खादें एवं दवाइयॉ

जैविक खादें :–

- घन जीवामृत
- जीवामृत
- सींग खाद
- अमृत संजीवनी
- मटका खाद

ब्याधि नियंत्रण हेतु दवाइयॉ :–

- नीम पत्ती का घोल/निगौली/खली
- गौ मूत्र
- मट्ठा
- कच्चा दूध, हल्दी, हींगय एलोवेरा जेल का छिडकाव
- मिर्च/लहसुन
- नीम/कंरज खली

जैविक तरीके से सब्जियों कर खेती :–

जैविक साग तथा सब्जी की बहुत मांग ज्यादा है। इसकी कीमत भी अधिक मिलती है इसके लिये यह जरूरी रहता है कि सब्जियों में उपयोग किया गया खाद तथा कीटनाशक गोबर खाद् केंचुआ खाद तथा अन्य तरह की जैविक खाद हो। खाद तथा कीटनाशक किसान बासानी से अपने घर पर ही आसानी से बने जैविक साग सब्जी का उत्पादन कर सकते है।

जैविक उत्पादन का पंजीयन :–

किसान भाइयों को अपने जैविक उत्पादन का पंजीकरण कराना चाहिए जिससे खाद्यान्न फसल तथा फलों से अच्छा मूल्य मिल सकता है। केंद्र सरकार ने जैविक खेती के लिए प्रमाणिकता देना शुरू कर दिया है। इसके लिये प्रत्येक प्रदेश में एक सरकारी संस्था भी खोली गई है। तथा पूरे देश में प्रमाणीकरण हेतु प्राइवेट संस्थाओं का भी सहयोग किया जा रहा है। ये संस्थायें किसी भी किसान को नियमों के साथ जैविक प्रमाणिकरण देती है।

तराई क्षेत्र में कृषि पर लाक डाउन का प्रभाव

डा0 सन्तोश कुमार विश्वकर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष
कृषि विज्ञान केन्द्र, लखीमपुर–खीरी

कृषि विज्ञान केन्द्र जनपद में कृषकों को प्रशिक्षण प्रदर्शन परीक्षण एवं अन्य प्रसार गतिविधियों के द्वारा कृषकों को कृषि तकनीक से लाभान्वित किया जाता है। पिछले वर्ष जनवरी से दिसम्बर, 2019 तक 8,162 कृषकों को कृषि तकनीकी से जागरूक किया गया और यह कार्यक्रम निरन्तर कृषकों के आमदनी बढ़ाने के लिए चलाये जा रहे हैं। प्रदेश में करोना महामारी के कारण मार्च, 2020 से लाक डाउन चल रहा है। लाक डाउन के समय कृषकों तक सही एवं उन्नति तकनीक पहुंचाने के लिए मोबाईल कृषि एडवाइजरी शुरू की गयी, जिसके माध्यम से शाकभाजी, खाद्यान, फलदार, फसलों की उत्पादन तकनीक रोग एवं कीट से बचाव व व्यवसाय पर जानकारी उपलब्ध कराई गयी। कृषकों से निरन्तर समपर्क में रहने से उनका फीड बैक भी लिया गया जिसका उन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

कृषि उत्पादन पर प्रभाव – लाक डाउन का कृषि उत्पादन पर पिछले वर्ष की तुलना में ज्यादा प्रभाव नहीं पड़ा है। सब्जियों का उत्पादन जहां पिछले वर्ष की तुलना में स्थिर रहा जबकि फलों के उत्पादन मं खास कर केला के उत्पादन में वृद्धि की सम्भावना है।

खाद्यान फसलों में गेहूँ, सरसों, चना एवं मसूर में 8.1 प्रतिशत से 25.71 प्रतिशत तक बढ़ोत्तरी पिछले कृषकों की तुलना में हुयी है। गन्ना उत्पादन में 5–10 प्रतिशत की वृद्धि का आकलन किया गया है। पशुपालन क्षेत्र में गाय–भैंस के दूध के उत्पादन में भी पिछले वर्ष की तुलना में वृद्धि हुई है तथा कृषकों की विशेष बात यह रही कि 20–22 प्रतिशत दूध का स्वयं एवं परिवार के लोगों द्वारा प्रयोग किया गया है। जिससे उनको सन्तुलित पोषक तत्व प्राप्त हुआ। मुर्गी पालन में उत्पादन पर पिछले वर्ष की तुलना में कम प्रभाव पड़ा क्या लेंकिन समाज में मुर्गे की मांग बहुत कम हो गयी। इस विपरीत परिस्थितियों में कृषि क्षेत्र अन्य सेक्टर की तुलना में कम प्रभावित रहा, कृषि क्षेत्र में संतुलन बना रहां अनाज, फल, सब्जी आदि की कमी नहीं हुई। यह कृषकों के अथक परिश्रम एवं प्रयास का परिणाम है।

व्यवसाय पर प्रभाव – शाक–भाजी व्ययवसाय में लाक डाउन का मिश्रित प्रभाव रहा है इसमें जल्दी नष्ट होने वाली सब्जियों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। इसमें मुख्य रूप से टमाटर, कद्दू, लौकी, तरोई, भिण्डी आदि में 30–40 प्रतिशत तक मूल्य में कमी पिछले वर्ष की तुलना में रही है। जबकि आलू एवं प्याज के दाम कम प्रभावित हुए। चूँकि

आलू–प्याज का भण्डारण अधिक समय तक किया जा सकता है। इस लिए इनके मूल्य में 10–12 प्रतिशत से ज्यादा कम नहीं हुए। इसी प्रकार का ट्रेण्ड 20–25 प्रतिशत तक मूल्य में कमी फलों में भी देखा गया। जबकि केला के मूल्य में सबसे कम 8–10 प्रतिशत तक ही प्रभावित हुए। मण्डीयों में इस लाक डाउन में खरीदारों की संख्या विशेष रूप से ज्यादा रही। विशेष बात यह रही कि लाक डाउन के दौरान खरीदारों की संख्या में ज्यादा वृद्धि पाई गयी। गेहूँ के मूल्य में बढ़ोत्तरी 12.5 प्रतिशत, सरसों में 16.5 प्रतिशत, चना में 7.14 प्रतिशत, मसूर में 4.16 प्रतिशत, उर्द में 8.35 प्रतिशत पिछले वर्ष की तुलना में दर्ज की गयी है। पशुपालन क्षेत्र में गाय–भैंस के दूध के व्ययवसाय में 16–20 प्रतिशत तक कम मूल्य पशुपालकों कों पिछले वर्ष की तुलना में प्राप्त हुआ। मुर्गीपालकों पर इसका बहुत विपरीत प्रभाव पड़ा क्योंकि बाजार में मुर्गे की मांग एंव खरीदारों की संख्या बहुत कम हो गयी।

सरकार द्वारा कृषि व्यापार के नये नियम बनाये जा रहे है। जिसमें मुख्य रोल कृषक उत्पादक संगठन का हैं मण्डी नियमों में बदलाव किया जा रहा है। ई–मार्केटिंग को बढ़ावा दिया जा रहा है। कान्ट्रैक्ट फार्मिंग के लिए भी नियम बनने जा रहे हैं जो एग्री ट्रेड ला के नाम से प्रस्तावित हैं। एफ0पी0ओ0 का मुख्य काम राज्य मण्डी से अलग रहते हुए, कृषकसंघ एवं सहकारी संस्थाओं का एक अलग बाजार व्यवस्था कृषकों हेतु बनाना जो कि एक राज्य से दूसरे राज्य में व्यापार कर सकेंगे और कृषकों की आमदनी को दुगना करने में सहायक होगी।

लॉक डाउन अवधि में आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी का कृषि पर सकारात्मक प्रभाव

डा0 अरविन्द कुमार सिंह
अध्यक्ष के0वी0के0, अलीगढ

मानव सभ्यता की प्रगति और विकास में मनुष्य ने अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए नई–नई तकनीकों का विकास किया और इन नई तकनीकों का प्रयोग भी सामाजिक एवं आर्थिक विकास के लिए बहुतायत से किया जा रहा है। मनुष्य द्वारा विकसित की गई तकनीक से कृषि के उत्पादन में आवश्यकता अनुसार वृद्धि हुई जिसके फल स्वरूप आज भारत वर्ष के साथ–साथ हमारा प्रदेश भी खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर हो चुका है। आत्म निर्भर बनाने की आवश्यकता में हमने प्राकृतिक संतुलन का ध्यान नही रखा जिसके फलस्वरूप प्रदेश में मृदा स्वास्थ, वनक्षेत्र, जलक्षेत्र में बेतहाशा गिरावट आ गई। प्राकृतिक संतुलन के बिगडने से करोना जैसी महामारियों का प्रकोप हो गया और विश्व के सभी विकासित देशों के साथ–साथ हमारे देश की जी0डी0पी0 को बहुत बडी क्षती हुई है।

कोविड–19 महामारी के संक्रमण को रोकने के लिए देश और प्रदेश में अचानक लॉक डाउन कर दिया गया और लगभग 72 दिन पूरा देश बन्द रहा। इस लॉक डाउन में सबसे जरूरी ये था कि मार्च, अप्रैल, मई के महीने में पूरे देश में गेहूँ की फसल पक कर खडी थी गेहूँ की कटाई–मडाई कराकर किसानों के घर तक लाना और आवश्यकतानुसार किसान मण्डी में बिक्री की व्यवस्था कराया जाना प्रदेश सरकार के लिए बहुत बडी चुनौती थी ऐसा आपातकाल में चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर द्वारा संचालित कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा विभिन्न जनपदों जैसे– अलीगढ, कांसगज, हाथरस, फिरोजाबाद, इटावा, कानपुर देहात, फतेहपुर, रायवरेली, लखीमपुर खीरी, हरदोई, मैनपुरी एवं फरूखाबाद एवं कन्नौज जलपदों के किसानों को आधुनिक कृषि तकनीकी प्रसार के लिए सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से कार्य करना प्रारम्भ किया।

1. **कृषि तकनीकी एडवाइजरी** – पूरे लॉक डाउन अवधि में कृषि विश्वविद्यालय, कानपुर द्वारा संचालित कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा कुल 2900 (दो हजार नौ सौ) सलाहकारी सेवाओं को प्रेषित किया गया। एडवाइजरी में प्रदेश सरकार/भारत सरकार आई0सी0ए0आर0 द्वारा जारी सलाहकारी सेवायों को भी प्रेषित की गया है।
2. **प्रिंट मीडिया कवरेज** – इस लॉक डाउन अवधि में प्रिंट मीडिया ने बढ–चढकर किसानों तक सलाहकारी सेवायें पहुँचाने में हिस्सा लिया। सभी सम्बन्धित जनपदों में कुल 1067 लोकल अखबारों में विस्तार से कृषि उत्पादन, विपणन एवं कोविड–19 से बचाव के सम्बन्ध में जानकारी प्रेषित की गयी जिससे किसान भाइयों को समय–समय की जानकारी प्राप्त हो सकी।
3. **वाट्सऐप समूह** – अभी तक वाट्सऐप का प्रयोग व्यक्ति या सामाजिक सम्बन्धों के लिए प्रयोग किया जाता रहा है। इस लॉक डाउन में ये समूह कृषक तकनीकी का मुख्य हथियार साबित हुआ है सभी जनपदों में वाटसऐप समूहों के माध्यम से

कुल 3830 किसान जुडे है, और इन समूहों के माध्यम से समय–समय पर लाभकारी सूचानायें के0वी0के0 के वैज्ञानिकों द्वारा प्रेषित की गयी है।

4. **किसान मोबाइल सेवा** – लॉक डाउन पहले से संचालित प्रत्येक जनपदों में किसान मोबाइल सेवाओं ने भी इस महामारी से बचाव में अभूतपूर्व भूमिका निभाई है। इस माध्यम से कुल 77,258 किसानों को संदेश भेजकर या बात करके लाभ पहुचाने का कार्य किया गया है।

5. कोविड–19 के लॉक डाउन अवधि में सरकार द्वारा किसान काल सेन्टर की सुविधा दी गयी, इस नम्बर से सम्बन्धित जनपदों के वैज्ञानिकों द्वारा कुल 32,489 किसानों को प्रेषित किया गया जिसके माध्यम से किसानों द्वारा किसान काल नम्बर पर समय–समय पर किसानों द्वारा अपनी समस्याओं का समाधान किया गया है।

6. आरोग्य सेतु ऐप – कोविड–19 महामारी के संक्रमण की जानकारी के लिए, और उनके परिवारों को स्वस्थ रखने के लिए विश्वविद्यालय के समस्त कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिकों द्वारा कुल 1,26,641 किसानों को भेजा गया जियमें 64,583 किसानों द्वारा आरोग्य सेतु को डाउनलोड भी किया गया है।

7. किसान रथ– लॉक डाउन अवधि के मई माह में जब किसानों को अपनी उपज को किसान मण्डी में बिक्री करने में अत्याधिक परेशानी होने लगी और सामाजिक दूरी बनाने के कारण किसानों को अत्याधिक परेशानी होने लगी तो सरकार ने 'किसान रथ' जारी किया। विश्वविद्यालय के सभी प्रसार वैज्ञानिकों द्वारा किसान रथ एप को किसानों के पास प्रेषित करना प्रारम्भ किया। कुल 46,734 किसानों यह एप प्रेषित किया गया और 31 मई तक 21,605 किसानों द्वारा इसको डाउनलोड किया गया है।

8. आयुष कवच एप – मानव शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढाने के लिए किसानों के स्वास्थ को मददे नजर रखते हुए आयुष कवच एप को भी भेजना प्रारम्भ किया गया, अब तक कुल 1,097 किसानों को प्रेषित किया गया जिसमें 482 किसानों द्वारा आयुष कवच एप को डाउन लोड किया गया है।

शीघ्र नष्ट होने वाले खादय् पदार्थो के लिए सलाह

डा0 अरविन्द कुमार सिंह
अध्यक्ष के0वी0के0, अलीगढ

करोना महामारी से बचाव के लिए किये गये लॉकडाउन से कृषि के सभी घटक प्रभावित हुये है। ताजी सब्जियों, फलों, दूध, अण्डा मछली आदि की कीमते बाजार में अचानक मांग कम होने से गिर गई। प्रदेश के होटल, रेस्टोरेंट, ढाबों के बन्द हो जाने से और निर्यात न होने के कारण इनकी मांग में अचानक कमी आ गई। कोविड–19 महामारी से सब्जियों, फलों, दूध, अण्डा, मछली एवं मीट आदि बाजारों तक नहीं पहुँच पाने के कारण उपभोगता के स्वास्थ के लिए आवश्यक पोषक तत्व विटामिन्स, मिनरल्स वाले खाद् पदार्थ नहीं पहुँच रहे है। इसका असर मनुष्य के स्वास्थ के साथ–साथ किसानों की आमदनी पर भी पड़ा है। इसके कारण गॉवों में वेरोजगारी भी बढ़ रही है।

किसान भाईयों के लिए सलाह :–

जल्दी नष्ट होने वाले फल सब्जियों, दूध, मछली को भण्डारित करने या संरक्षित करने के लिए निम्न सलाह दी जा सकती है :–

1. आम के फल यदि आंधी या ओलावृष्टि के कारण गिर जाये तो इनकी चटनी, पन्ना, पाउडर आदि बनाकर संरक्षित करें। आम विटामिन ए, सी, ई, के साथ फास्फोरस एवं मैग्नीशियम जैसे तत्व प्रचुर मात्रा में पाये जाते है।

2. पपीता जो कि विटामिन ए का मुख्य स्रोत है इसको अपने परिवार को स्वास्थ रखने के लिए प्रयोग करें और अधिक उत्पादन होने पर पपीता का जैम, जेली, कैन्डी और चेरी बनाकर संरक्षित करें।

3. नींवू का प्रतिदिन सेवन करें और नींवू का स्क्वास बनाकर संरक्षित करें। नींवू में विटामिन सी की प्रचुर मात्रा होने के साथ–साथ विटामिन बी1, बी2 , बी5 एव ंबी 6 की मात्रा भी पाई जाती है।

4. कच्चे केले में विटामिन ए की मात्रा पायी जाती है केले का चिप्स बनाकर संरक्षित किया जा सकता है।

5. बेल का पाउडर बनाकर संरक्षित करें इसमे विटामिन बी–12 की मात्रा अच्छी पाई जाती है।

सब्जियाँ :–

1. टमाटर जल्दी नष्ट होने वाली सब्जी है और अधिक समय के लिए भण्डारित नहीं किया जा सकता है। टमाटर का सास एवं केचप बनाकर इसको संरक्षित कर लें और स्थानीय बाजार में बिक्री करके अधिक आमदनी करें।

2. आलू का चिप्स एवं नमकीन बनाकर भी संरक्षित कर सकते है

3. फलियों वाली सब्जी जैसे–राजमा, बाकला, फेन्स बीन्स को सुखा ले (पकने के बाद) एवं दानों को भण्डारित करें।

4. प्याज एवं लहसुन को कम लागत वाले प्याज भण्डारण गृह में टीयर सिस्टम में अवश्य भण्डारित करें, जिससे सड़ने की सम्भावना कम हो जाती है।

5. हरी मिर्च/लाल मिर्च को पकाकर सुखा लें। इसका अचार एवं सुखाकर लाल मिर्च का पाउडर बनाकर भी संरक्षित किया जा सकता है।

6. **हरी सब्जियों जैसे–** खीरा, लौकी, कददू, करेला, तरोई, पालक, चौलाई धनियॉ, फूलगोभी, पत्तागोभी एवं परवल का जो भी उत्पादन हो रहा है उसका विपणन स्वयम् सहायता समूहो, किसान समूहो एवं किसान उत्पादक संगठनों के माध्यम से मण्डी भेजना सुनिश्चित करें जिससे समूह का एक व्यक्ति ही मण्डी में सभी सदस्यों की सब्जियों की बिक्री कर सकता है और सभी किसानों को परिवहन व्यय और समय की बचत होगी, अधिक लाभ होगा।

मछली पालन :–

1. लॉकडाउन 2 में मछली व्यवसाय को पूरी छूट दी गई है अतः नियमों का पालन करते हुये स्थानीय बाजारो में मछली की बिक्री मतस्य पालकों द्वारा की जा सकती है

2. मछली का भाव न मिलने पर सलाह दी जाती है कि 10–15 दिन मछलियों को तालाब में अतिरिक्त रहने दे, मछलियों के आहार प्रबन्धन एवं सुरक्षा का विशेष ध्यान बरतें।

पशुपालन एवं डेयरी व्यवसाय :–

गर्मी के मौसम में पशु की दुग्ध उत्पादन क्षमता कम हो जाती है फिर भी सप्लाई चेन अवरूध होने के कारण गॉव में दूध की मांग कम हो गई है : –

1. स्वयम् सहयता समूहों एवं किसान उत्पादक संगठनों के माध्यम से दूध का एकत्रीकरण एवं वितरण प्रणाली पास के कस्बों एवं शहरों में किसानों द्वारा की जाये।

2. दूध की मांग कम होने की दशा में किसानों द्वारा पनीर, खोआ, दही, चीज, मक्खन आदि बनाकर समूहों के माध्यम से स्थानीय कस्बों/शहरों में बिक्री हेतु भेजा जाना चाहिए।

3. जो दूर–दराज के गॉव है उनको सलाह दी जाती है कि दूध से घी बनाने का कार्य कर लें मठ्ठे को खुद के अथवा ग्रामीणों को वितरित करें और घी को संरक्षित करे सप्ताहिक बाजार एवं शहरों में बिक्री कर सकते है।

4. अति छोटे किसान या भूमिहीन किसान बकरी पालन का कार्य कर रहे है उनको सलाह है कि छोटे–छोटे समूह बनाकर दूध को स्थानीय कस्बों में बिक्री कर सकते है या घी बनाकर संरक्षित कर सकते है।

मुर्गी पालन :–

1. लॉकडाउन के दूसरे दौर में मुर्गी पालन, ब्यालर उत्पादन व्यवसाय को छूट दी गई है लेकिन सोसल डिस्टेंसिंग एवं सेनेटाइजेशन नियमों का पालन आवश्य करें।

2. मीडिया एवं अन्य भ्रामक प्रचार–प्रसार के कारण चिकन की मांग में कमी आ गई है इस आपातकालीन दशा में उत्पादकों को सलाह दी जाती है कि 15 दिन के लिए मुर्गी फार्मो को पूरी तरह सेनेटाइज करके छोड़ दे जिससे आगामी समय में चिकन की बढ़वार अच्छी होगी एवं किसानों को फिर से लाभ मिलेगा।

4. अण्डे की बिक्री में थोडी कमी आई है किसानों को सलाह है कि कम से कम मुनाफा पर भी अण्डे का उत्पादन जारी रखे धीरे–धीरे अण्डे की मांग बाजार में बढ़ेगी।

संस्तुतियाँ

ग्रामीण क्षेत्रों के लिए :–

1. सभी सब्जी उत्पादक टमाटर, भिण्डी, मिर्च, बैंगन, खीरा लौकी, ककडी, खरबूज, परवल, करेला आदि की तुड़ाई करते समय अपने चेहरे पर मास्क एवं हाथों में दस्तानें जरूर पहने।

2. तुड़ाई के बाद सब्जियों की छटाई कर लें और पैकिंग के पहले प्रति बाल्टी पानी के हिसाव से 2–3 चम्मच नमक डालकर सभी सब्जियों को 5 से 10 मिनट के लिए भिगोकर छोड़ दे उसके बाद पानी से बाहर निकाल कर छाया में सुखा लें।

3. पैकिंग से पहले सभी प्रकार के पैकिंग मैटेरियल जैसे– बोरा, क्रेट्स एवं डलिया आदि को अच्छी प्रकार से सैनेटाइज जरूर कर लें।

4. सभी प्रकार के मसालें जैसे हल्दी, धनिया या सूखा अदरक जिनका पाउडर बनाना हो कोशिश करें अच्छी प्रकार से सुखाने के बाद आटोमैटिड चक्की में पिसाई करे यदि गॉव की चक्की में पिसाई करना हो तो प्रति दिन चक्की को सेनेटाइज करें और लॉकडाउन नियमों का पालन करें।

5. पैकिंग एवं पिसाई में उपयोग होने वाले सभी वर्तनों एवं पैकिंग सामग्री का सैनेटाइजेशन जस्र करें।

6. कोल्ड स्टोरेज:

➢ आलू के कोल्ड स्टोरेज के कैम्पस के सभी स्पेयर्स को सैनेटाइज किया जाना चाहिए एवं कोल्डस्टोरेज के विकास मार्ग पर सैनेटाइजेशन टनेल जरूर स्थापित की जानी चाहिए।

➢ प्याज एवं लहसुन के भण्डारण के लिए बनाये गये कम लागत वाले प्याज भण्डारण गृह को भण्डारण के पहले सैनेटाइज करें एवं सी0एस0ए0,कानपुर माडल कम लागत का सैनेटाइजेशन टनेल भी प्रवेश द्वार पर स्थापित किया जाय।

➢ किसान मण्डियों में कीमती फलों एवं सब्जियों के भण्डारण के लिए मिनी कोल्ड स्टोरेज बनाये गये है, भण्डारण के पहले इन मिनी कोल्ड स्टोरेज को सैनेटाइज किया जाना चाहिए एवं सी0एस0ए0,कानपुर माडल कम लागत का सैनेटाइजेशन टनेल भी प्रवेश द्वार पर स्थापित किया चाहिए।

➢ सब्जियों, फलों, दूध अण्डे मुर्गियों के यातायात के लिए जिन वाहनों जैसे– ट्रैक्टर, टैम्पो, गाड़ी या ट्रकों का प्रयोग किया जा रहा है उनका नियमित रूप से सैनेटाइजेशन किया जाना है, यातायात में प्रयोग होने वाले वर्तनों एवं उपकरणों को भी सैनेटाइज करें।

7. विकास खण्ड स्तर पर एक छोटी कार्य योजना जस्र बनाई जानी चाहिए जैसे जिस ब्लाक में आलू का उत्पान अधिक है वहॉ पर आलू में गुणवत्ता बढाने के लिए आलू के चिप्स, पाउडर, पेस्ट, नमकीन बनाने सम्बन्धित इकाइयों की स्थपना की जानी चाहिए और पर्याप्त मात्रा में कोल्ड स्टोरेज होने चाहिए।

शहरी क्षेत्रों के लिए :–

1. हरी सब्जियों, फलों एवं पत्तेदार सब्जियों के प्रयोग से पहले सभी सब्जियों को प्रति बाल्टी 2–3 चम्मच नमक का घोल बनाकर 5–10 मिनट के लिए भिगोयें उसके बाद पंखे की हवा में सुखाकर ही फ्रिज में रखें।

2. ऐसे आपातकाल में अत्मनिर्भर बनने के लिए छोटे–छोटे किचिन गार्डेन/छतों पर किचिन गार्डेन में हरी सब्जियों एवं पत्तेदार सब्जियों को भी उगाने की सलाह दी जाती है जैसे–टमाटर, मिर्च, धानिया, बैंगन, पालक, मूली, गाजर एवं चुकन्दर एवं चौलाई को आसानी से उगाकर अपने प्रयोग में ला सकते है।

3. शहरो में हैगिंग बास्केट, वर्टिकल फार्मिग, हाइड्रोपोनिक्स एवं एरोपोनिक्स विधि से घर के उपयोग के लिए सब्जियों को उगाया जा सकता है।

फूल उत्पादन :–

1. फूल उत्पादकों को सलाह दी जाती है कि अगले मौसम के लिए फूलो की पौधशाला बनाने की तैयारी प्रारम्भ करें।

2. गुलाब उत्पादकों को सलाह है कि देशी गुलाब के फूलों को तोडकर फूलों के पेटल्स को सुखाकर गुलाब जल इनस्ट्रीज को आपूर्ति करे अच्छी आमदनी हो सकती है।

3. ग्लेडिओलस एवं रजनीगंधा के फूलों की खेती करने वाले किसान भाई बल्व की खुदाई करके उसका शोधन फफुदीनाशक से करने के पश्चात् अच्छी प्रकार से सुखाकर सैनेटाइज किये पैकिंग सामग्री में सुरक्षित रूप से भण्डारित करें।

कृषि शोध एवं परीक्षणों का महामारी काल में सफल संचालन

डा0 हर ज्ञान प्रकाश
निदेशक शोध, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर

चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर में शोध निदेशालय के अर्न्तगत चार शोध अनुभाग (रबी सस्य, तिलहन, दलहन) पॉच क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र (दलीप नगर, फिरोलाबाद, मैनपुरी, अलीगढ एवं सैनी) चार फसल इकाइयॉ (धान, ज्वार, कपास, तम्बाकू) तथा विभिन्न विभागों में 9 योजनायें उकृष्ठता केन्द्र, आई0सी0ए0आर0 द्वारा वित्त पोषित जिनके माध्यम से 15 एकिप योजनायें तथा विभिन्न संस्थओं से बिल पोषित तदर्थ योजनायें एवं इफीकैसी संचालित है। जिनके माध्यम से रबी 2020–2021 में गेहूँ, जौं, राई, सरसो, ,अलसी, चना, मसूर, अरहर, आलू, सब्जी मटर बैंगन, मिर्च, लहसुन, प्याज पेठा एवं मसाला फसलें आदि फसलों के 300 से अधिक शोध परीक्षण लगाये गये थे। कोविड–19 के महामारी के बचाव हेतु देश एवं प्रदेश की सरकार द्वारा लॉक डाउन 23 मार्च 2020 को समस्त देश में लागू कर दिया गया थ। जिसके कारण योजनाओं के अर्न्तगत लगाये गये परीक्षणों के ऑकडे एकत्र करना कटाई–मड़ाई एवं कटाई उपरान्त डेटा रिकाडिंग के कार्यो में कठिनाई आना प्रतीत हुई।

विश्व विद्यालय के माननीय कुलपति जी के कुशल नेतृत्व में निदेशक शोध एवं योजनाओं के प्रभारियों द्वारा खडी फसलों के ऑकडे उकत्र करना तथा कटाई–मड़ाई उपरान्त ऑकडे उकत्र करने

हेतु रोड़ मैप तैयार किया गया। रोड़ मैप को तैयार कर जिला प्रशासन से वैज्ञानिकों एवं योजना में कार्यरत कर्मचारियेां तथा आउट सोर्सिंग से मंगाये गये। कृषि मजदूरों के पास बनवाकर चरण बद्ध तरीके से विभिन्न फसलों के ऑकडे एकत्र किये गये और सफलतापूर्वक शोध कार्यो का संकलन किया गया।

सप्लाई चेन में कृषक संगठनों का योगदान

डा0 खलील खान
वैज्ञानिक (मृदा विज्ञान), के0वी0के0, कन्नौज

प्राधनमंत्री की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की मंत्रीमण्डल समिति ने किसानों के लिये अर्थ व्यवस्था के व्यापक लाभ को सुनिश्चित करने के लिये वर्ष 2019–20 से वर्ष 2023–24 की अवधि के दोरान दस हजार नय एफपीओं को स्वीकृति दी है।

बाम :– छोटे और सीमांत किसानों के पास मूल्य सम्बर्धन सहित उत्पादन तकनीकी, सेवाओं और विपणन को अपनाने के लिये आर्थिक क्षमता नहीं होती है। कृषि उत्पादन संगठनों के गठन से किसान सामूहिक रूप ये अधिक सुदृढ़ होने के साथ–साथ अधिक आय अर्जित करने के लिये अर्थ व्यवस्था के व्यापक स्तरो से लाभ के माध्यम से ऋण और बेहतर विपणन एवं गुणवत्ता युक्त उत्पाद और प्रौद्योगिकी तक पहूॅच बनाने में सक्षम होगे।

कार्यान्वयन एजेंसियॉ – प्रारम्भक तौर पर कृषक उत्पादक संगठनों के गठन और प्रोत्साहन के लिये तीन कार्यन्वयन एजेंसियॉ है –

- स्माल फारमर्स एग्री बिजनेस कन्सोर्टियम
- नेशनल कोआपरेटिव बुवलपमेंट कारपोरेशन
- नेशलन बैंक फार एग्रीकल्चर एण्ड यरल डेवलपमेंट

प्रमुख बिन्दु–पॉच वर्ष की अवधि (2019–20 से 2023–24) के लिये 4,496 करोड रूप्ये के कुल बजटीय प्रावधान के साथ दस हजार नये कृषक उत्पादक संगठनों के गठन और संबर्धन के लिये कृषक उत्पादक संगठनों की स्थापना और संवर्धन नामक केन्द्रीय क्षेत्र की नवीन योजना।

- DAC & FW एजेंसियो को कार्योवित करने के लिये समूह/राज्यों का आवंटन करेगा, जो इसी क्रम में राज्यों में समूह आधारित व्यापारिक संगठन का गठन।
- कृषक उत्पादक संगठन को कार्योन्वित एजेंसियों द्वारा राज्य/समूह स्तर पर जुढ़े समूह आधारित व्यापार संगठनों के माध्यम से गठित और प्रोत्साहित किया जायेगा।
- एकीकृत पोर्टल और सूचना प्रबन्धन एवं निगरानी के माध्यम से समग्र परियोजना दिशा–निर्देश, डाटा संग्रहण और रखरखाब जैसी सुविधा प्रदान करने के लिये SFAC के स्तर पर एक राष्ट्रीय परियोजना प्रबन्ध एजेंसी होगी।
- प्रारम्भ में मैदानी क्षेत्र में कृषक संगठन समूह में सदस्यों की न्यूनतम संख्या 300 और पूर्वोत्तर एवं पहाडी क्षेत्रों में 100 होगी। हालांकि DAC & FW केन्द्रीय कृषि मंत्री की स्वीकृत के साथ आवश्यक और अनुभव के आधार पर न्यूनतम सदस्यों की संख्या में संशोधन कर सकता है।
- देश में आकांक्षी जिलों के प्रत्येक ब्लाक में कम से कम कृषक उत्पादक संगठन के साथ आंकाक्षी जिलों में कृषक उत्पादक संगठन के गठन को प्राथमिकता दी जायेगी।
- कृषक उत्पादक संगठन द्वारा विशेष और बेहतर प्रसंस्करण विपणन, बांडिग और निर्यात को प्रोत्साहन देने के लिये एक जिला एक उत्पाद समूह के अर्न्तगत कृषक उत्पादक संगठन को प्रोत्साहन दिया जायेगा।
- कृषक उत्पादक संगठन के इक्विटी आधार को मजबूत करने के लिये इसमें इक्विटी अनुदान का भी प्रावधान होगा।
- DAC & FW और नाबार्ड द्वारा समान योगदान के साथ नाबार्ड में एक हजार करोड रूपये तक गारंटी कोष और DAC & FW तथा Nc Dc द्वारा समान योगदान के साथ ऋण गरंटी कोष और DAC & FW तथा NcDc द्वारा समान योगदान के साथ NcDc में 500 करोड रूपये का ऋण गारंटी कोष होगा। ताकि कृषक उत्पादक संगठनों को ऋण प्रदान करने के मामलें में वित्तीय संस्थानों के जोखिम को न्सूनतम करते हुये कृषक उत्पादक संगठनों को संस्थागत ऋण के निरन्तर प्रवाह हेतु उपयुक्त ऋण गारंटी प्रदान की जा सकें।
- राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों को यहायता प्रदान करने के लिये बैध श्रेणी के रूप में कृषक उत्पादन संगठनों के लिये समान सुविधा केन्द्र/कस्टम हायरिंग सेन्टर सहित विपणन एवं सम्बद्ध बुनियादि ढॉचे द्वारा गॉवों में कृषि विपणन और सम्बद्ध बुनियादी ढॉचे के विकास के लिये नाबार्ड के गठन के लिये स्वकीकृत कृषि बाजार अवसंरचना कोष के अर्न्तगत राज्य/संघ शसित प्रदेष निर्धरित व्याज की रियायती दरों पर ऋण की प्राप्ति को स्वीकृत देगें।
- कृषक उत्पादक संगठनों को पर्याप्त प्रषिक्षण और सहायता प्रदान की जायेगी। CBBOS शुरूआती प्रशिक्षण प्रदान करेंगे।

- पृष्ठ भूमि – किसानों की आय को दुगना करने की नीति आयोग की रिर्पोट में वर्ष 2022 तक सात हजार कृषक उत्पादक संगठनों के गठन की सिफाशि और किसानों की आय को दुगना करने पर बल दिया गया है। केन्द्रीय बजट 2019–20 में सरकार ने दस हजार नये कृषक उत्पादक संगठनों के सूपन की घोषणा की थी ताकि आगामी पॉच वर्षों में किसानों के लिये अर्थ व्यवस्था के व्यापक लाभ को सुनिश्चित किया जा सके। इसके लिये एक समर्पित सहायता और ामग्र योजना के रूप में केन्द्रीय क्षेत्र की योजना को कृषक उत्पादक संगठनों के मिश्रित विकास और इसकी दीर्घकानिकता के लिए प्रस्तावित किया गया है।

लोकल के लिए बनें वोकल

डा0 अरविन्द कुमार सिंह
अध्यक्ष केवी0के0 अलीगढ

वोकल फार लोकल कार्यक्रम के अर्न्तगत क्षेत्र विशेष , प्रदेश विशेष, जलवायु विशेष के हिसाब से कार्ययोजनायें बनाकर प्रभावी रूप से संचालित की जानी चाहिए। उत्तर प्रदेश कई महत्वपूर्णख खाद्य पदार्थ/उत्पादों के लिए अपना विशेष जाने वाला फल आम उत्पादन और गुणवत्ता के लिए मशहूर है इसलिए पूरे प्रदेश में आम के गुणवत्ता युक्त उत्पादन की एक विशेष कार्ययोजा होनी चाहिए। आम के निर्यात के लिए मानकों की जानकारी आतम उत्पदाकों को प्रसारित की जानी चाहिए। मानक के अनुसार आम के उत्पदन के लिए पैकेज एण्ड प्रैक्टिसेज की जानकारी दैनिक समाचार पत्रों, साहित्य या गोष्ठियों /मेले में नियमित रूप से किया जाना उचित हो। और गुणवत्ता युक्त आम का श्रेणीकरण होकर उत्तर प्रदेश का उत्तम आम नाम से प्रदेश के सभी नागरिकों को वोकल होना चाहिए।

इसी प्रकार कानपुर मण्डल के छः जिले कानपुर नगर, कानपुर देहात, कन्नौज, फरूखाबाद, इटावा और औराया की जलवायु एवं मिट्टी आलू के उत्पादन के लिए मशहूर है यहॉ का आलू उत्पादन प्रति हेक्टर पूरे प्रदेश या देश में सर्वाधिक है बस जरूरत है तो गुणवायुक्त आलू फ्रेंच फ्राई, पेस्ट आदि का एक वोकल ट्रेड नाम होना चाहिए इसको कानपुर के नाम पर वोकल किया जा सकता है। आलू का उत्पादन हम निर्यात के लिए भी कर सकते है इसको "आरगेनिक पोटेटो" का नाम देकर । किन्तु इसके लिए पैकेज/प्रैक्टिसेज हर

आलू उत्पादक के पास होना चाहिए और आलू का न्यूनतम समर्थन मूल्य की सरकार द्वारा घोषणा भी होना चाहिए।

उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र के जालौन, बांदा, चित्रकूट, महोवा, झांसी, ललितपुर एवं हमीरपुर में गुणवत्तायुक्त दलहन उत्पादन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है इस लिए दालों की प्रोसेसिंग, गेडिग एवं पैकिग आदि से सम्बन्धि आटोमेटेड इकाइयॉ संचालित की जानी चाहिए। दालों के न्यूनतम समर्थन मूल्य के साथ पैकेज एवं प्रैक्टिसेज हर दाल उत्पादक किसान के पास उपलब्ध होना चाहिए और हमें बुन्देलखण्डी दाल के नाम से इसको वोकल करना होगा। प्राकृतिक संसाधनों के कुशल प्रबन्ध के साथ–साथ दालों में स्प्रिंकल सिंचाई व्यवस्था को मजवूत करना होगा।

उत्तर प्रदेश के तरई के जनपद जैसे मुरादाबाद, बरेली, पीलीभीत जनपदों में सुगान्धित धान उत्पदान के लिए पूरे प्रदेश वासियों को वोकल होना पडेगा। इन जनपदों के सभी धान उत्पादकों को सुगन्धित धान के गुणवत्ता युक्त बीजों की उपलब्धता के साथ–साथ सुगहन्धत धान पैदा करने की पैकेज एण्ड प्रैक्सिेज उपलब्ध होनी चाहिए। धान से बचाव बनाने वाली इकाइयों को भी प्रशिक्षण देकर निर्यात करने योग्य/मानक के अनुसार चावल बनाने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

प्रदेश के आगरा एवं अलीगढ मण्डल में सरसों के उत्पादन एवं सरसों के तेल गुणवत्ता युक्त जेल के उत्पादन के लिए पूरे प्रदेश को वोकल होने की आवश्यकता है। मानक के अनुसार सरसों के उत्पादन की तकनीकी पैकिज, शुद्व बीज आदि की उपलब्धता पर विशेष ध्यान देना होगा। सरसों का न्यूनतम समर्थन मूल्य का निर्धारण सरकार द्वारा एक वर्ष पूर्ण ही निर्धारित करना चाहिए जिजसे अगले वर्ष की कार्ययोजना बनायी जा सकें। पूर्वी उत्तर न्रदेश में गुणवत्ता युक्त सब्जियों के उत्पादन एवं सब्जियों की प्रोसेसिंग पर वोकल कार्यक्रम बनाने की आवश्यकता हे। यहां की जलवायु एवं मिट्टी के अनुसार इस क्षेत्र के सब्जी उत्पादकों को विभिन्न सब्जियों का पैकेज विकसित कर सभी सब्जी उत्पादकों के पास उपलब्ध होना चाहिए। पूर्वाचल सब्जियों के नाम से यह सब्जी उत्पादन मिशन प्रसरित किया जाना चाहिए।

पीएम मोदी ने कहा कि कोरोना महामारी के दौरान हमें इसी लोकल ने बचाया है। यह देश की ताकत है, जिसे हमें पहचानना होगा। उन्होंने साफ–साफ कई बातें कहीं, जिनको अगर प्वांइट में समझा जाए तो उसे इस प्रकार कहा जा सकता है।

–इस संकट ने हमें बताया कि लोकल प्रोडक्ट और लोकल सप्लाई चेन कितनी जरूरी है।

–हमें लोकल प्रोडक्ट को बढ़ावा देना है, लोकल अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना है।

–लोकल से ग्लोवल बनना है–आज से हर भारतवासी को लोकल के लिए वोकल बनना है।

–ना केवल लोकल प्रोडक्ट खरीदना है बल्कि उनका प्रचार करना है पीएम मोदी ने 20 लाख करोड के पैकिज का ऐलान किया जिसमें कई बातों का जिक्र था। इनको प्वांइट में इस प्रकार समझा जा सकता है।

–यह पैकिज भारत की जीडीपी के 10 फीसदी के बराबर है।

–विभिन्न वर्गो को 20 लाख करोड का संबल मिलेगा।

–2020 में देश की विकास यात्रा नई गति देगा–लैंड, लेबर, लिक्विडिटी और लॉ सभी पर बल दिया जायेगा–सभी प्रकार लघु और उद्योगों के लिए यह पैकिज लाभ देगा।

–ये पैकिज, उस श्रमिक और किसान के लिए है जो हर स्थिति और मौसम में देशवासियों के लिए श्रम करता है।

–मध्यम वर्ग के लिए भी से पैकिज राहत देगा।

पीएम मोदी ने माना कि ये संकट इतना बढा है कि बडी से बडी व्यवस्थाएं हिल गई है लेकिन, इन्ही परिस्थितियो में हमने देश ने हमारे गरीब भाई–बहनों की संघर्ष–शक्ति, उनकी संयम शक्ति का भी दर्शन दिया है, आज से हर भारतवासी को अपने लोकल के लिए 'वोकल' बनना है, हमें न सिर्फ लोकल प्रोडक्ड खरीदने है, बल्कि उनका गर्व से प्रचार भी करना है कि हमारा देश ऐसा कर सकता है, लोकल से ग्लोबल बनने का यह बढा अवसर, इसलिए लोकल के लिए वोकल रहें,

लोकल ने ही हमें बचाया– प्रधानमंत्री ने कहा–गरीब, श्रमिक, प्रवासी मजदूर हों, मछुआरे हों, हर तबके लिए आर्थिक पैकिज में कुछ महत्वपूर्ण फैसलों का ऐलान किया जाएंगा, कोरोना ने हमें लोकल मैन्यूफैक्चरिंग, लोकल सप्लाई चेन और लोकल मार्केटिंग का भी मतलब समझा दिया है, लोकल ने ही हमारी डिमांड पूरी की है हमें इस लोकल ने ही बचाया है, लोकल सिर्फ जस्रत नही, बल्कि सबकी जिम्मेदारी है।

ग्लोबल ब्रांड पहले लोकल ही थे – समय ने हमें सिखाया है कि लोकल हमें अपना जीवन बनाना ही होगा आपको जो आज ग्लोबल ब्रांड लगते है, वो भी कभी ऐसे ही लोकल थे, जब वहां के लोगो ने उनका इस्तेमाल और प्रचार शुरू किया, उनकी ब्रांडिग की, उप पर गर्व किया तो वे प्रोडक्ट्स लोकल से ग्लोबल बन गए, इसलिए, आज से हर भारतवासी को अपने लोकल के लिए वोकल बनना है, न सिर्फ लोकल प्रोडक्ट्स खरीदने है, बल्कि उनका गर्व से प्रचार भी करना है, मुझे पूरा विश्वास है कि हमारा देश ऐसा कर सकता है

खादी को ब्रांड बनना प्रधानमंत्री ने लोकल प्रोडक्ट्स को लेकर खादी की मिसाल दी, उन्होंने कहा मैं गर्व के साथ एक बात महसूस करता हूँ मैंने एक बार आपसे खादी खरीदने का आग्रह किया था, बहुत ही कम समय में खादी और हैंडलूम की बिक्री रिकॉर्ड स्तर पर पहूँच गई, उसे आपने बडा छोटा सा प्रयास था, लेकिन बहुत अच्छा परिणाम मिला।

कोविड–19 वायरस का असर इस पूरे विश्व की सामाजिक एवं आर्थिक सभ्यता पर इतना गहरा साबित हुआ कि विविधता में एकता का नारा बुलन्द करने वाला भारत वर्ष वोकल फार लोकल की रणनीति बनाने और काल से हर एक क्षेत्रीय/स्थानीय उपजों/उत्पदों के लिए अपना–अपना आस्तित्व कायम रखने की प्रथा और क्षेत्रीय उत्पादों के अधार पर ही आवश्यकताओं का निर्धारण किया जाता है और लगभग सभी आवश्यकताओं की पूर्ति भी स्थानीय/क्षेत्र स्तर पर कर ली जाती थीं इसके फलस्वरूप मनुष्य को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किसी बाहरी क्षेत्र विशेष पर निर्भर नहीं होना पडता है। यदि हम अपनी प्राचीन सभयता का स्मरण करें तो क्षेत्रीय/स्थापीय कृषि या कृषि उत्पदों के अनुरूप ही मनुष्य का खान–पान, नहनावा एवं रहने की सुख–सुविधाओं को किया जाता था।

रोटी–कपडा–मकान जैसी मूल भूत आवश्यकताओं की पूर्ति लोकल स्तर पर की जाती थी। प्रतिस्पर्द्धा के युग का प्रवेश 19 वीं शताब्दी के पूर्व दशक के बाद हुआ और नई प्रकार की अयात–निर्यात नीतियों का कर्माण किया गया। आयात–निर्यात नीतियों में समय–समय पर सुधार होते रहे है परन्तु देश की अधिक आवादी के लिए भेज्य पदार्थे के उत्पदन के साथ–साथ हमारी आवश्यकता विदेशी मुद्रा अर्जित करने के लिए निर्यात के लिए भी बढ गई।

देश की बढती आवादी के दवाब के कारण एवं आवास, सडके, नहरे आदि के विकास के कारण हमारा कृषि योग्य भूमि का क्षेत्रफल कम होने लगा, इधर हम अपनी आवश्यकता की पूर्ति करने के लिए जो कृषि के लिए अयोग्य भूमि थी या जो विरल जंगल क्षेत्र था उसको कृषि योग्य बनाने के कार्यक्रम भीच लाने लगे। मनुष्य ने अपने विकास के लिए स्थानीय वन क्षेत्रों का भरपूर दोहन किया, नादियों का दोहन प्रारम्भ कर दिया, जमीन का तो इस सीमा तक दोहन किया के जमीन को बीमारी की अवस्था तक पहुचा दिया गया। भूमिगत जल के दोहन की बात स्पष्ट है कि प्रदेश के कई जनपदों एवं विकास खण्डों को डार्क/ब्राउन श्रेणियों में बदला जा चुका है।

इस प्रकार जब पूरी तरह प्राकृतिक संतुलन बिगड गया या दूसरे शब्दों में हम यह भी समझ सकते है कि हमने प्राकृतिक पंच तत्वों क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर का दोहन नही किया बल्कि मानव स्वास्थ और खुशहाली के रक्षा कवच को बलहीन कर दिया। जब हमारा सुरक्षा कवच अति कमलोर हो बया तब तो स्वाभिवक था मनुष्य के हानिकारक दुश्मन वायरस, वैक्टीरिया या फंगस का आक्रमण होना।

इसी के फल स्वरूप यह अदृष्य वायरस कोविड–19 ने इा पृथ्वी के सबसे बुद्धिमान जीव को विगत 3–4 माह से बंधक बना दिया है। बढे–बढे नीति निर्माताओं को समझ में नही आ रहा है कि आगे की कार्ययोजना कैसी हो, इसका एक बेहतर समाधान देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सुझाया है कि पूरे देश को वोकल फार लोकल पर कार्ययोजना बनाकर कार्य किया जाना चाहिए जिससे देश का किसान परिवार, क्षे, प्रदेश एवं भारत देश आत्म निर्भर बन सकें।

आत्म निभ्र र किसान–आत्म निर्भर भारत एक समृद्ध स्वप्न

डा0 खलील खान
वैज्ञानिक (मृदा विज्ञान), के0वी0के0, कन्नौज

वैश्विक महामारी कोरेना वाइरस से उबरने के लिये प्रधानमत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की तरफ से किये गये 20 लाख करोड़ रूपये के अर्थिक पैकेज की तीसरी किस्त का ब्योरा वित्त मंत्री निर्मला सीता रमण जी ने शुक्रवार को साझा किया। आर्थिक पैकेज के तीरी किस्त का पूरा फोकस कृषि क्षेत्र और उससे जुडे सेक्टर पर रहा है। इसमें न केवल बुनियादी ढांचे में रिफार्म कर बाजार तक पहॅूच बढ़ाने, सप्लाई और कोल्ड चेन को दुरस्त करने पर फोकस किया गया है। बल्कि किसानों को हर समय वाजिब कीमत मिल सकें। इसके लिए व्यापक कानूनी बदलाव के एलान हुये। फार्म गेट इफ्रा के लिए एक लाख करोड़ रूपये का एलान किया गया।

वित्त मंत्री सीता रमण जी ने कोरोना महामारी के चलते देश भर में लागू लॉक डाउन के कारण खेती और **सहायक गतिविधियों जैसे** – कि पशु पालन, मछली पालन, मधुमक्खी पालन, हर्बल खेती आदि के लिए पैकेट की घोषणा की गयी। वित्त मंत्री की तरफ से कृषि और उससे जुड़े सेक्टर के लिए जो अहम एलान किये गये है। उसमें 8 घोषणायें कृषि इंफ्रा को मजबूत करने, क्षमता ओर लाजिस्टिक डेवलेपमेंट से थी। देखा जाये तो सरकार का यह एलान एग्री सेक्टर के लिए एक मिनी बजट की तरह है।

फार्म गेट इंफ्रा पर एक लाख करोड़ – वित्त मंत्री निर्मला सीता रमण ने कृषि उपाज के रखरखाव ट्रांसपोर्टेशन एवं मार्केटिंग सुविधओं के इफ्रास्टक्चर के लिये एक लाख करोड स्पये के एग्री इफ्रा फण्ड की घोषणा की है। इस फण्ड का इस्तेमाल कोल्ड स्टोरेज, कटाई के बाद स्टोरेज ढांचे पर किया जायेगा वित्त मंत्री का कहना था कि किसान सर्दी, गर्मी बरसात तमाम विपरीत परिस्थतियों के बावजूद उत्पादन करता है। और 130 करोड़ देशवशियों का पेट भरता है। लेकिन फसलों के भण्डारण और उनकी खरीद की सही व्यवस्था के अभाव में उन्हें नुकसान सहना पड़ता है। इसे देखते हुये कोल्ड स्टोरेज, फसल कटाई के बाद प्रबन्धन आदि के लिये एक खाल करोड़ का फण्ड जल्द बनाने का फैसला किया गया हे।

घरेलू उत्पाद बनेगें ब्रांड – भारत सरकार ने अब घेरलू कृषि उत्नादों को बढ़ावा देने पर फोकस किया है। घरेलू कृषि उत्पादों को ब्रांड बनाने आसैर दुनिया भर में पापुलर करने के लिये सरकार द्वारा फूड उत्पाद के लिए क्लस्टर बनाया जायेगा। से क्लस्टर अलग–अलग राज्यों में बनायें जायेंगे। जहॉ का जो उत्पाद पापुलर होगा। सरकार ने सूक्ष्म खाद्य उपक्रमों को संगठित करने के लिये दस हजार करोड़ की भी घोषण की गयी है। यह योजना दो लाख एमएफई की मदद के लिये शुरू की जायेगी। इसके तहत क्लस्टर आधारित रूख अपनाया जायेगा। मसलन उ0प्र0 के लिए आम, बिहार के लिये मखाना, जम्मू कश्मीर में केसर पूर्वोतर राज्यों के लिये बीस आन्ध्र प्रदेश के लिये लाल मिर्च जैसे–कलस्टर बनाने की सुविधा के लिए इस फण्ड का इस्तेमाल किया जायेगा। इस कोष के जारिये नये बाजारों को भारतीय उत्पादों का निर्यात किया जायेगा।

मछली पालन – सरकार ने मछनी पालन, मत्स्य इंफ्रा और उससे जुडी गतिविधियों को

प्रोत्साहन करने के लिये बीस हजार करोड़ के फण्ड का एलान किया है। सरकार ने समुद्री और अन्तर्देशीय मत्स्य पालन के लिए 20 हजार करोड़ रूपये की प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना शुरू की गई है। इसके तहत समुद्री और अन्तर्देशीय मत्स्य पालन में सम्लित विकास के लिये 11 हजार करोड रूपए दिये जा रहे हे। जब कि 9 हजार करोड़ रूपए इंफ्रा विकास पर खर्च होगें। इसमें फिशिंग हर्ब्स, कोल्ड चेन, मेडियॉ आदि का निर्माण शामिल है। अगले पॉच सालों में मछली उत्पादन 70 लाख टन बढ़ जायेगा, 55 लाख लोगों को रोजगार मिलेगा।

पशुओं का टीकाकरण – केन्द्र सरकार ने राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम के तहत शत प्रतिशत पशुओं के टीकाकरण का लक्ष्य रखा गया है इस योजना पर 13,343 करोड रूप्ये खर्च किये जायेगे। इससे 53 करोड़ पशुओं को मुहफा, शखा रोगों से बचाव होगा। इस कार्यक्रम से पशु उत्पाद की अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मांग और बढेगी। अब तक रस योजना में 1.5 करोड गायों और भैंसों का टीकाकरण हो चुका है।

पशु पालन इंफ्रा – पशु पालन इंफ्रास्टक्चर डेवलपमेंट को लेकर सरकार से एक अहम एलान किया है सरकार ने बुनियादी ढांचे के विकास के तहत डेयरी प्रोसेसिंग की इण्डस्ट्रीज लगााने, पशु आहार इंफ्रास्टक्चर वैल्यू एडीशन करने आदि के लिये 15 हजार करोड़ रूप्ये खर्च होगें। शर्त के मकसद से विशेष प्लांट लगााने के लिये भी इस से प्रात्साहन दिया जायेगा।

हर्बल खेती – सरकार द्वारा हर्बल खेती हेतु चार हजार करोड़ का एलान किया गया है सरकार ने कहा है कि हर्बल और औषधीय खेती हेतु नेशनल मेडीशनल प्लांट बोर्ड के अर्न्तगत योजनायें बनाई गई है। इसमें 2.25 लाख हेक्टेयर जमीन पर औषधीय गुणों की खेती हेतु प्रोत्साहन दिया जायेगा। अगले दो साल में 4 हजार करोड रूपये की लगात से एक लाख हेक्टेयर जमीन पर औषधीय फसलों की खेती होगी। जिससे किसानों को पॉच हजार करोड रूपये कर अतिरिक्त आमदनी हेगी। इस योजना में औषधीय पौधों की क्षेत्रीय भेडियॉ बनाई जायेगी। इसके आलावा गंगा के किनारे हजारो एक हमें इसके पौध रोपड़ की मुहिम चलाई जायेगी।

मधुमक्खी पालन – सरकार ने इस समय में मधुमक्खी पालन पर भी जोर दिया है। इसके लिये सरकार ने पॉच सौ करोड़ की योजना का एलान किया है। इस योजना से दो लाख से ज्यादा मधुमक्खी पालकों को फायदा मिलेगा।

कृषि मार्केटिंग में सुधार – किसानों के सामने अब तक एक अहम दिक्कत उत्पाद बेचने को लेकर रहती थी। मौजूदा व्यवस्था के तहत एपीएमसी के लरिये सिर्फ लाइसंस वालों के पास ही किसान अपना उत्पाद बेच सकते है। बाकी

औद्योगिक उत्पाद को बेचने के लिये ऐसी मजबूरी नहीं है। सरकार ने कहा कि अब कानून में सुधार लाकर किसानों को भी अपना उत्पाद कही भी बेंचने की छूट दी जायेगी। किसान को भी बेहतर दाम मिल पायें और अन्तराज्जीय बाजार हो सके, यह सुंनिश्चित किया जायेगा। इसके लिये सरकार एक कानून लायेगी। किसानों को अच्छा उपज मूल्य उपलब्ध कराने के लिये प्र्याप्त विकल्प प्रदान करने को एक केन्द्रीय कानून तैयार किया जायेगा। जिसे बिना रो–टोक के अन्तराज्यीय बाजार और कृषि उपज के ई–टेडिंग के लिये रूप रेखा तैयार की जा सके।

आप्रेशन ग्रीन – सप्लाई चेन बाधित होने से किसानों को अपने उत्पाद बाजारों में बेचना मुश्किल हो जाता है। लॉक डाउन के समय यह सबसे बढ़ी समस्या बनकर सामने आई। इसके चलते किसानों को औने–पौने दामों पर अपने उत्पाद बेचने पड़े। किसानों को इस परेशानी से बचाने के लिये सरकार ने आप्रेशन ग्रीन का दायरा सभी फल, सब्जियों तक कर दिया है। इसके तहत अब 50 फीसदी सब्सिडी कोल्ड स्टोरेज में भण्डारण पर दी जायेगी। यह प्राबधान उम्मीद छः महीने के लिये पायलट के रूप में किया गया है।

कीमत और गुणवत्ता निर्धारण – सरकार किसानों के लिये सुविधा जनक कानूनी ढॉचा बनाने के लिये सरकार नया कानून लेकर आयेगी। जिससे किसानों का उत्पीड़न न हो। जोखिम रहित आम भी सुनिश्चित हो सकें। किसानों को प्रोसेसरों, एग्रीगेटर्स बडे रिटेलर्स, निर्यातओं के साथ निश्पक्ष और पारदर्शी तरीके से जुड़ने के लिये एक सुविधजनक कानूनी ढॉचा बनाया जायेगा।

शरीर की रोगप्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में बायोफोर्टिफाईड सब्जियों की उपयोगिता

डा0 अशोक कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्र, दलीपनगर, कानपुर देहात

आज कल कोरोना वायरस ने पूरी दुनिया में त्राही–त्राही मचा रखी है। कई विकसित देश इसकी चपेट मे हैं। यहां तक कि दुनिया की महाशक्ति कहे जाने वाले अमेरिका, ब्रिटेन, इटली व चीन जैसे देश तो विशेषरूप से प्रभावित हैं। कमोबेस आज पूरी दुनिया करोना का दंश झेल रही है। अब तक पूरी दुनिया में 3.50 लाख से ज्यादा लोग कालकवलित हो चुके हैं। हालांकि इस मामले में हम काफी भाग्यशाली हैं कि हमारे देश में कोरोना से मरने वालों की संख्या 10,000 से काफी कम है किन्तु नये पीढ़ित लोगों व मरने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है।

रोग प्रतिरोधक क्षमता क्या है ?

हर जीवित शरीर में प्रकृति ने एक ऐसी व्यवस्था बनाई हुई है जो उसे नुकसानदेह जीवाणुओं विषाणुओं और माइक्रोब्स वगैरह से बचाती है। इसे ही रोगप्रतिरोधक शक्ति कहा जा सकता है।

रोग प्रतिरोधक क्षमता के अंतर्गत हमारे शरीर की कोशिकायें और टिशु, विभिन्न बीमारियों से बचाए रखने का काम करते हैं। रोग प्रतिरोधक शक्ति हमारे शरीर को ऐसा सुरक्षा कवच प्रदान करती हैं जिससे शरीर जल्दी किसी साधारण बीमारी की चपेट में नहीं आता है। इम्यून सिस्टम के कमजोर हो जाने पर अक्सर सर्दी–जुकाम और बुखार जैसी समस्या बनी रहती है। एक मजबूत इम्यूनिटी विभिन्न रोगाणुओं और संक्रामक बीमारियों से हमें बचा सकती हैं।

हमारे आसपास के वातावरण में बहुत से बैक्टीरिया और वायरस मौजूद होते हैं जो सांस के साथ हमारे शरीर के अंदर जाते हैं लेकिन ये सभी सूक्ष्मजीव हमे नुकसान नहीं पहुॅचा पाते है क्योंकि हमारे शरीर में मौजूद प्रतिरक्षा तंत्र इनसे हमारी सुरक्षा करता है। अगर हमारे शरीर का प्रतिरक्षा तंत्र मजबूत है तो हम जल्दी–जल्दी बीमार नहीं होगे लेकिन किसी कारण से हमारा ये तंत्र अगर कमजोर हो गया है तो आये दिन बीमार होने की समस्या से हमें जूझना पड़ेगा। बाहरी कीटाणुओं की ताकत जब हमारे इम्यून सिस्टम की ताकत से कहीं ज्यादा होती है तो हमारा ये रोग प्रतिरोधक तंत्र इन कीटाणुओं से लड़ने और इन्हें हराने में कामयाब नहीं हो पाता ।

हमारा इम्यून सिस्टम हमें कई तरह की बीमारियों, बैक्टीरियल संक्रमण एवं फंगस संक्रमण से सुरक्षित रखता है, रोग प्रतिरोधक क्षमता के कमजोर होने पर बीमारियों का असर जल्दी होता है ऐसे में शरीर कमजोर हो जाता है और हम जल्दी जल्दी बीमार पड़ने लगते है रोग प्रतिरोधक क्षमता कमजोर होने पर छाट को भी ठीक होने में लम्बा समय लग जाता है।

जिसकी इम्यूनिटी मजबूत है उसके शरीर में रोगाणु पहॅच कर भी नुकसान नहीं कर पाते पर जिसकी इम्यूनिटी कमजोर हो गई हो वह जरा से मौसमी बदलाव में भी रोगाणुओं के आक्रमण को झेल नही पाता जब बाहरी रोगाणुओं की तुलना में शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता कमजोर पड़ती है तो इसका असर सर्दी जुकाम,फ्लू,खॉसी बुखार बगैरह के रूप में हम सबसे पहले देखते हैं जो लोग बार इसी तकलीफों से गुजरते हैं उन्हें समझ लेना चाहियें इम्यूनिटी ठीक से उनका साथ नहीं दे रही है और उसे मजबूत किये जाने की जरूरत है।

इम्यून सिस्टम कमजोर होने के कारण?

इम्यून सिस्टम कमजोर होने के कई कारण हो सकते हैं। यह हमार खाने से लेकर आपकी दिनचर्या तक से प्रभावित हो सकता है नीचे जानिये इम्यून सिस्टम कमजोर होने के विभिन्न कारण– प्रतिरोधक क्षमता का जन्म से कमजोर होना कैंसर के लिये कीमोथेरेपी या अन्य दवाओं के चलते अंग प्रत्यारोपड के बाद उस अंग को सकिय रखने के लिये ली जाने वाली दवाओं का सेवन करने से संक्रमण क कारण एल्कोहल का सेवन करना धूम्रपान करना शरीर में पोषक तत्वों की कमी होना ।

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के उपाय – शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता के मजबूत बनाने के लिये वैसे तो आप नीचे बताये जा रहे उपाय का प्रयोग कर सकतें हैं। हम अपने शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को पोषक तत्व प्रधान फसलों (बायोफोर्टिफाइड फसलों) का सेवन कर भी बढ़ा सकते हैं।

मोरिंगा (सहजन)

मोरिंगा (सहजन) जिसे ड्रमस्टिक भी कहतें हैं, एक ऐसी फसल है जिसका हर भाग पोषक तत्वों का भंडार है। इसमें अनेक खनिज–लवण, विटामीन, एन्टिआक्सिडैंट पाये जाते हैं। इसलिए इसे सुपरफूड भी कहा जाता है। आयुर्वेद में मोरिंगा से तीन सो से अधिक रोगों का उपचार सम्भव है। इसमे विटामिन–सी– संतरे से 7 गुना, विटामिन–ए– गाजर से 4 गुना, कैल्सियम– दूध से 4गुना, पोटेशियम– केले से 3 गुना व प्रोटीन–दही की तुलना मे 3 गुना। सहजन में हाई मात्रा में ओलिक ऐसिड होता है जो कि एक प्रकार का मोनोसैच्युरेटेड फैट है और यह शरीर के लिये अति आवश्यक है। सहजन में विटामिन –सी की मात्रा

बहुत होती है। यह शरीर के कई रोगों से लड़ता है शरीर की की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है। इसकी फलियों, फूल व पत्तियों में काफी मात्रा में एन्टी–आक्सिडैंट्स पाये जाते हैं। ये एन्टी–आक्सिडैंट्स शरीर में रेडियोएक्टिवता कम कर, शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढाने में विशेष योगदान होता है। साथ ही यह एन्टिवायरल भी है। सहजन की पत्तियों में कार्बोहाइडेट, प्रोटीन, कैल्सियम, पोटेशियम, आयरन, मैग्नीशियम, विटामिन आदि प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। मोरिंगा को प्राकृतिकरूप से पोषक तत्व प्रधान (बायोफोर्टिफाइड) फसल कहा गया है ।

चुकन्दर

चुकन्दर में विटामिन–बी, विटामिन–सी, प्रोटीन, कैल्सियम, पोटेशियम, आयरन, सोडियम, मैग्नीशियम व एन्टी–आक्सिडैंट्स पाये जाते हैंजो शरीर में ब्लड प्यूरिफिकेशन और आक्सिजन बढाकर शरीर को रोगों से प्रतिरक्षा प्रदान कर, शरीर को स्वस्थ बनाये रखने में मदद करता है। खून की कमी पूरी करने में चुकन्दर का कोई जोड नही है। यह आयरन व लाल रक्त कणिकाओं की वृद्धि करने में सहायक होता है। इसके पत्ते भी खून की कमी को दूर करने में बहुत उपयोगी है।

ब्रोकोली

ब्रोकोली भी एक पोषक तत्व प्रधान फसल है। इसका सेवन भी शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढाता है। ब्रोकोली में एन्टी–आक्सिडैंट्स व विटामिन–सी प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं, जिससे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढती है। इसके अलावा ब्रोकोली में फलेवोनॉइडस भी होते है। जो विटामिन–सी के रिसायकिल करने मे मदद करते हैं। ब्रोकोली कैराटिनाइड ल्यूटिन, जियाजैन्थिन, बीटा कैरोटिन व अन्य शक्तिशाली एन्टी–आक्सिडैंट्स से भी समृद्ध होती है।

चौलाई

चौलाई का सेवन करने से शरीर का प्रतिरक्षातन्त्र मजबूत होता है, हडिडयों को भी मजबूत करता है क्योंकि चौलाई में प्रति 100 गाम कैल्सियम पोटेशियमफास्फोरस मैग्नीशियम याज को इसके एन्टिवायरल गुण के कारण इसके प्रयोग को करोना की रोकथाम में विशेष गुणकारी बताया जाता है। सफेद प्याज तो और भी अधिक गुणकारी है। फलों में आंवले का सेवन विशेष लाभकारी होता है। इसमें अनेक पोषक तत्व व एन्टीआक्सिडैंट पाये जाते हैं।जनपद कानपुर देहात की ग्रामीण जनता में कुपोषण को दूर करने के लिए चन्द्र शेखर आजाद कृषि एवं प्रौ0वि0वि0,कानपुर के कृषि विज्ञान केन्द्र, दलीप नगर, कानपुर देहात के फार्म पर पोषक तत्व प्रधान फसलों (बायोफोर्टिफाइड फसलों) का बगीचा लगाया गया है। के.वी.के. के अध्यक्ष डा.अशोक कुमार द्वारा कानपुर देहात की ग्रामीण जनता में कुपोषण को दूर करने के उददेश्य से के.वी.के. के 5 हेक्टेयर क्षेत्र में सब्जियों की इन जैसी लगभग 100 प्रजातियां वर्षभर में उगाई जा रही हैं। किसान भाई के.वी.के. पर आकर इस विषय में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

मीडिया की नजर में
चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर

सीएसए में सैनिटाइजर टनल और स्मार्ट हैंडवॉश का शुभारंभ

जन एक्सप्रेस/प्रदीप शर्मा

कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय परिसर मे बने सैनिटाइजर टनल और स्मार्ट हैंडवॉश का लोकार्पण सोमवार को कुलपति डी.आर.सिंह ने किया। इस अवसर पर कुलपति ने बताया कि सैनिटाइजेशन टनल बनवाने का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालय में आने वाले व्यक्ति के उपयोग की चीजें कपड़े,जूते,पर्स,बैग जो वायरस से संक्रमित हो सकते हैं जिससे उनसे होने वाले संक्रमण को रोका जा सकेगा। उन्होंने कहा कि कोरोना वायरस के संक्रमण को रोकने के लिए सबसे अच्छा तरीका साबुन से हाथ धोना है इस प्रवृत्ति को बढ़ाने के लिए टनल से पहले स्मार्ट हैंडवाश की व्यवस्था की गई है। जिसमें साबुन और नल को छुए बिना पैरों से दबाव देकर अपने हाथों को अच्छी प्रकार से धोया जा सकेगा। उन्होंने कहा कि लॉक डाउन के दौरान आवश्यक सेवाओं में लगे विश्वविद्यालय के अधिकारी/ कर्मचारी संक्रमण से इन सुविधाओं का उपयोग कर अपना बचाव कर सकेंगे साथ ही महामारी को फैलने से रोक सकेंगे। विश्वविद्यालय अभियंता प्रोफेसर विजय कुमार यादव ने कहा कि सैनिटाइजेशन टनल में सैनीटाइज करने के लिए क्लोरीन बेस्ट कंपाउंड का उपयोग किया गया है। इस सैनिटाइजेशन टनल से 15 से 20 सेकंड में व्यक्ति अपने आपको सैनिटाइज कर सकता है । डॉ.यादव ने कहा कि जो स्टाफ आवश्यक सेवाओं में लगा है और परिसर के बाहर रह रहा है उनके लिए यह लाभकारी होगा।

किसान रथ ऐप किसानों का बोझ करेग हल्का

विचारधारा समाचार सेवा

कानपुर, 22 अप्रैल। बुधवार को सीएसए के कुलपति डॉ. डीआर सिंह ने किसान ऐप के बारे में बात करते हुए बताया कि किसानों की सुविधा के लिए फसलों की कटाई के बाद उपज को मंडियों तक ले जाने वाली समस्याओं से निजात दिलाने के लिए किसान रथ नामक मोबाइल ऐप को केंद्रीय कृषि कल्याण मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने लांच किया । उन्होंने बताया कि इसके माध्यम से किसान भाई कृषि और बागवानी की फसलों को मंडी तक पहुंचाने के लिए प्राइमरी और सेकेंडरी वाहन को सर्च कर सकेंगे। प्राइमरी ट्रांसपोर्टेशन का अर्थ फसल को मंडी,एफपीओ कलेक्शन सेंटर, वेयरहाउस आदि तक पहुंचाने के लिए होगा। इसके अतिरिक्त सेकेंडरी ट्रांसपोर्ट के तहत कृषि उत्पादों को मंडियों से राज्यों और राज्यों के बाहर स्थित अन्य मंडियों, प्रोसेसिंग यूनिट, रेलवे स्टेशन और होलसेलर तक पहुंचाया जा सकेगा। कुलपति डॉ. सिंह ने बताया कि इस ऐप के माध्यम से किसान भाई घर बैठे इस मोबाइल एप पर ट्रक,ट्रैक्टर या अन्य कृषि मशीन बुक करा सकते हैं। किसान रथ ऐप के लिए जागरूक किया जा रहा है। डॉक्टर धूम सिंह ने बताया कि अभी तक 9351 किसानों को वैज्ञानिकों द्वारा जागरूक किया गया है, जिसमें कि 2383 किसान भाइयों द्वारा किसान रथ ऐप उनके एंड्राइड मोबाइल पर डाउनलोड किया जा चुका है। निदेशक प्रसार ने बताया कि किसान खेती किसानी से जुड़ी समस्याओं के लिए टोल फ्री नंबर 18001801551 व राष्ट्रीय कृषि बाजार के लिए 18002700224 पर मोबाइल अथवा लैंडलाइन से कॉल करके समस्या का समाधान कर सकते हैं।

कानपुर आसपास | www.swatantrachetnanews.com | पौबेपुर, बिठूर, घाटमपुर, सरसौल बिल्हौर, शिवराजपुर, ककवन | स्वतंत्र चेतना | कानपुर, शनिवार, 25 अप्रैल 2020 | 2

आरोग्य सेतु ऐप मय हुआ सीएसए

चेतना समाचार सेवा

कानपुर, 24 अप्रैल। कोरोना वायरस के संक्रमण से बचाव को देखते हुए शुक्रवार को चंद्रशेखर आजाद कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. डीआर सिंह ने बताया कि आरोग्य सेतु ऐप विश्वविद्यालय के सभी अधिकारियों, वैज्ञानिकों व शिक्षकों ने 100 प्रतिशत डाउनलोड किया जा चुका है। कुलपति ने कहा कि विश्वविद्यालय में गैर शिक्षक संवर्ग में कार्यरत 96% कर्मचारियों, अध्ययनरत 94.8% छात्र व छात्राओं ने आरोग्य सेतु ऐप डाउनलोड किया है। उन्होने बताया यह आरोग्य सेतु ऐप को राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र ने बनाया है। जो कि इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय भारत सरकार का एक हिस्सा है। भारत सरकार ने शुरू किया गया यह ऐप एक ब्लूटूथ आधारित कोविड-19 ट्रैकर है।

आरोग्य सेतु ऐप का उद्देश्य स्वास्थ्य विभाग की पहल को बढ़ाना है। जो कि लगातार एप्लीकेशन के उपयोगकर्ताओं को कोविड-19 के सर्वोत्तम अभ्यास और प्रासंगिक सलाह से संबंधित सूचनाओं तक पहुंचने और उन्हें सूचित करने में से संबंधित है। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. डीआर सिंह ने बताया कि वैश्विक महामारी कोरोनावायरस के संक्रमण से निपटने के लिए विश्वविद्यालय भारत सरकार व प्रदेश सरकार ने जारी किया दिशा निर्देशों सभी पालन कर रहे हैं।

क्या है आरोग्य सेतु ऐप?

आरोग्य सेतु ऐप कोरोना वायरस से बचने के लिए बहुत कारगर साबित हो रहा है। ये ऐप आपको बताता है कि जहां आप हैं उसके आसपास कोई कोरोना संक्रमित है या नहीं, इस तरह से आप कोरोना के संक्रमण से बच सकते हैं। आरोग्य सेतु ऐप लोगों को कोरोनावायरस संक्रमण के खतरे और जोखिम का आकलन करने में मदद करता है। एंड्रॉयड और आ-ईओएस दोनों तरह के स्मार्टफोन पर इसे डाउनलोड किया जा सकता है। खास बात यह है कि यह ऐप आसपास मौजूद कोरोना संक्रमित लोगों के बारे में पता लगाने में मदद करता है। अंग्रेजी और हिंदी समेत आरोग्य सेतु 11 भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है। जो कि प्रत्येक भारतीय के लिए आवश्यक ऐप है।

दैनिक **सत्ता एक्सप्रेस** कानपुर देहात, गुरुवार 07 मई 2020

एग्रीकल्चर क्षेत्र में देश के प्रथम राष्ट्रीय वेबकान का शुभारंभ

राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल ने विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित कोविड–19 पोस्ट एग्रीकल्चरल एवं ट्रांसफॉरमेशन नामक पुस्तक का शुभारंभ अवसर पर किया विमोचन, कुलपति डॉ डी आर सिंह के उत्कृष्ट प्रयासों हेतु की प्रशंसा

दैनिक सत्ता एक्सप्रेस

कानपुर। कृशि शिक्षा के क्षेत्र में सम्पूर्ण देश के साथ साथ उत्तर प्रदेश में अपने उत्कृष्ट सोपान पर अवस्थित चंद्रशेखर आजाद .षि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर द्वारा ऑनलाइन आयोजित .षि क्षेत्र में उत्पादन व ट्रांसपोर्टेशन एवं उसकी मार्केटिंग चेन की विषय पर आयोजित तीन दिवसीय (6 मई से 8 मई 2020) राष्ट्रीय वेबकान 2020 का शुभारम्भ प्रदेश की राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल ने विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित कोविड–19 पोस्ट एग्रीकल्चरल एवं ट्रांसफॉरमेशन नामक पुस्तक का विमोचन कर कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ किया। राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल ने अपने संबोधन में कहा कि देश में लाक डाउन के दौरान प्रथम बार .षि क्षेत्र में राष्ट्रीय वेब कान्फ्रेंस के माध्यम से .षि वैज्ञानिकों एवं नीति निर्माताओं को जोड़ने के लिए चंद्र शेखर आजाद .षि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी आर सिंह द्वारा किए गए प्रयासों की प्रशंसा की तथा उन्हें ब‍ाई दी । राज्यपाल महोदया ने कहा कि इस तीन दिवसीय राष्ट्रीय वेबकान में वैज्ञानिकों द्वारा जो सुझाव और रणनीतियां होंगी उसे देश एवं प्रदेश सरकार को प्रेषित किया जाएगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रदेश के .षि, .षि शिक्षा एवं अनुसंधान मंत्री श्री सूर्य प्रताप शाही ने कहा कि भूमि की उत्पादकता एवं उर्वरता बढ़ाने के लिए मृदा में जीवांश कार्बन बढ़ाने की आवश्यकता है उन्होंने कहा की .षि विभाग के बीज गोदामों द्वारा .षको हेतु ढैंचा के बीज की व्यवस्था की गई है ।.षि मंत्री ने कहा कि अभी तक 873 मीट्रिक टन गेहूं की खरीद की जा चुकी है। साथ ही उन्होंने कहा कि पूरे देश में लगाए गए लाक डाउन के दौरान रबी की फसलों की कटाई मड़ाई में कोई समस्या ना हो इसके लिए दूसरे प्रदेशों से 4474 कंबाइन मशीने मंगाई गई हैं। उन्होंने ये भी कहा कि पूरे प्रदेश में दस हजार .षक उत्पादक संगठन (एफपीओ) हैं। जिनके माध्यम से सब्जियों एवं खाद्यान्नों का विपणन सुचारू रूप से किया जा रहा है उन्होंने यह भी कहा कि खरीफ फसल हेतु पूरे प्रदेश में 21 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल आच्छादित करने का लक्ष्य है। .षि मंत्री ने कहां की .षि विभाग एवं .षि विज्ञान केंद्र साथ में मिलकर

.षकों की आय बढ़ाने का कार्य कर रहे हैं जो सराहनीय है। कार्यक्रम में सम्मानित अतिथि पदम भूषण प्रोफेसर राम बदन सिंह ने आधुनिक .षि परिकल्पना की विस्तार से जानकारी दी ।उन्होंने देश के .षि वैज्ञानिकों से कहा कि बहुआयामी विषयों के शोध, शिक्षा एवं प्रसार की आवश्यकता है पदम भूषण डॉ सिंह ने नारा दिया कि स्वस्थ धरा तो फसल हरा‹ के तहत मृदा में जीवांश कार्बन बढ़ाने के उपायों के बारे में विस्तार से चर्चा की इस दौरान उन्होंने कहा कि उद्यानिकीय फसलों को ग्रामीण महिलाओं का दोस्त नामक भी नारा दिया तथा कहा कि इससे सब्जी, फूल,फल के उत्पादन पर की गुणवत्ता पर असर पड़ेगा। कार्यक्रम में शामिल सभी अतिथियों का स्वागत विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ डीआर सिंह द्वारा किया गया तथा अंत में कार्यक्रम सचिव डॉ विजय कुमार यादव ने सभी अतिथियों का आभार प्रकट किया। साथ ही डॉ यादव ने बताया कि देश के विभिन्न .षि विश्वविद्यालयो के कुलपति,भारतीय .षि अनुसंधान परिषद के निदेशक एवं .षि विज्ञान केंद्र सहित लगभग 12 ऑनलाइन व्याख्यान ज्ञापित किये गये हैं।

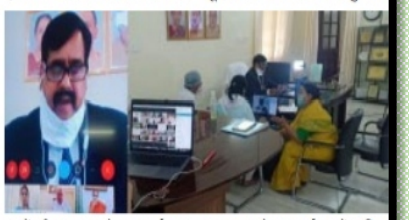

मॉनिटरिंग टीम ने शोध परीक्षणों की प्रशंसा

आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में चल रही अखिल भारतीय समन्वित गेहूं एवं जौ सुधार परियोजना ,रवि सस्य अनुभाग के अंतर्गत रबी 2019– 20 में बोए गए गेहूं के शोध परीक्षणों की मानिटरिंग के लिए भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान करनाल द्वारा गठित मॉनिटरिंग टीम का नेतृत्व चंद्रशेखर गेहूं जनक करनाल डॉ. पीएन मिश्रा द्वारा किया गया। विश्वविद्यालय के गेहूं जनक डॉ. सोमवीर सिंह द्वारा विश्वविद्यालय के विभिन्न प्रक्षेत्रों फसल शोध प्रक्षेत्र डीग,कल्याणपुर एवं अरौल की मानिटरिंग कराई तथा नवाबगंज शोध प्रक्षेत्र पर बोए गए गेहूं सस्य ,गेहूं रोग,गेहूं कीट एवं पादप कार्यिकी से संबंधित परीक्षणों की मानीटरिंग डॉक्टर आर ए यादव, डॉक्टर जी बी, डॉक्टर जितेंद्र एवं डॉक्टर सोमबीर द्वारा कराई गई। मानीटरिंग टीम ने शोध परीक्षणो के विषय में ने विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. डीआर सिंह से चर्चा करते हुए कहा कि सभी शोध परीक्षणों का प्रबंधन ठीक होने के साथ सभी जीनोटाइप के एक्सप्रेशंस भी अच्छे हैं टीम के ऐसे सदस्य जो विगत 5 वर्षों से लगातार विश्वविद्यालय मे मानीटरिंग कर रहे हैं उनका कहना था कि शोध परीक्षण मे विगत 5 वर्षों से बहुत सुधार हुआ है मानीटरिंग टीम के सदस्यों ने कहा कि सीएसए द्वारा विकसित गेहूं की प्रजाति के 1317 की मांग महाराष्ट्र मध्य प्रदेश एवं राजस्थान में काफी है। मॉनिटरिंग टीम में डॉ. एच.आर. सरन पालमपुर,डॉ. एस.पी. सिंह, नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय अयोध्या के साथ विश्वविद्यालय की वैज्ञानिक डॉ. विजय यादव, डॉ.पी.के गुप्ता,ज्योत्स्ना ,डॉ.राजेश कुमार सहित अन्य वैज्ञानिक मौजूद रहे।

नेक कदम चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय देगा प्रशिक्षण

जैविक कीटनाशक बनाना सीखें किसान

- आरकेवीवाई में मिला 35 लाख का प्रोजेक्ट, बड़े स्तर पर तैयार होगा ट्राइकोडर्मा
- विश्वविद्यालय के बायोकंट्रोल लैब एंड पेस्टीसाइड्स की तरफ से शुरू हो प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

जागरण संवाददाता, कानपुर : चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) ने किसानों की आय दो गुनी करने के लिए अपनी तकनीक सिखाएगा। सीएसए फसलों की रक्षा के लिए किसानों को जैविक कीटनाशक और ट्राइकोडर्मा (फफूंदी नाशक) बनाना सिखाएगा। इसके लिए विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (आरकेवीवाई) के तहत 35.80 लाख रुपये का प्रशिक्षण प्रोजेक्ट मिला है। प्रशिक्षण के बाद किसान खेत में ही ट्राइकोडर्मा बना सकेंगे। इसका लाभ बीज और भूमि शोधन में भी ले सकेंगे। उन्हें नीम, तुलसी और अकौड़ा से जैविक कीटनाशक बनाना भी सिखाया जाएगा।

धान, गेहूं, दलहनी, औषधीय, गन्ना और अन्य सब्जियों के फफूंद जनित रोगों को दूर करने के लिए ट्राइकोडर्मा का प्रयोग किया जाता है। एक किलोग्राम ट्राइकोडर्मा को एक क्विंटल गोबर की खाद में मिलाकर खेत में रख दिया जाता है। सात दिन बाद इसे खेत में फैला दिया जाता है। सीएसए के बायोकंट्रोल लैब एंड पेस्टीसाइड्स में किसानों को सिखाने वाली विधि से ट्राइकोडर्मा तैयार किया जा रहा है। किसानों को सिखाने के लिए पांच से छह दिन का प्रशिक्षण सत्र होगा। इसमें महिलाएं व छात्र-छात्राएं भी शामिल हो सकेंगे। हालांकि कोरोना के कारण अभी प्रशिक्षण शुरू नहीं किया गया है।

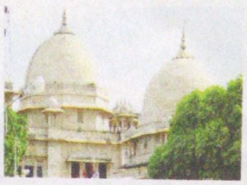

जीरो बजट खेती में लाभदायक

प्रदेश सरकार जीरो बजट खेती को बढ़ावा दे रही है। ऐसे में 127 रुपये प्रति किलोग्राम वाला ट्राइकोडर्मा काफी मददगार होगा। सीएसए अभी तक सात क्विंटल ट्राइकोडर्मा बेच चुका है।

प्रोजेक्ट पर काम शुरू हो गया है। इस तकनीक को खेतों तक पहुंचाने के लिए योजना बनाकर किसानों को जल्द ही प्रशिक्षण दिया जाएगा। इस प्रशिक्षण से किसानों को रोजगार स्थापित करने में मदद मिलेगी।

डॉ. डीआर सिंह, कुलपति सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं औद्योगिक विश्वविद्यालय परिसर में सैनिटाइजर का छिड़काव किया गया

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर में मीडिया प्रभारी खलील खान ने बताया के कुलपति डॉ.डी.आर.सिंह ने विश्वविद्यालय को कोरोना वायरस से बचाव के लिए विश्वविद्यालय के अधिकारियों /शिक्षकों/ वैज्ञानिकों /कर्मचारियों को निर्देशित किया है कि यदि उनके बच्चे विदेश में पढ़ रहे हैं तथा उनका कानपुर में आगमन माह फरवरी-मार्च के महीने में हुआ है तो वे अपने बच्चों का कोरोना वायरस परीक्षण अवश्य करा लें। जिससे स्वयं एवं परिवार के साथ-साथ विश्वविद्यालय के अन्य स्टाफ भी स्वस्थ रह सकें इसके साथ ही साथ विश्वविद्यालय परिसर में आने वाले सभी मार्निंग वाकर से सहयोग की अपेक्षा की है कि अग्रिम आदेशों तक विश्वविद्यालय परिसर में घूमना प्रतिबंधित कर दिया गया है जिससे विश्वविद्यालय प्रांगण में कोरोनावायरस कोविड (19) के संक्रमण को रोका जा सके इसके अतिरिक्त कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह ने सभी स्टाफ से कहा है कि दिनांक 22 मार्च को प्रातः 7:00 से रात्रि 9:00 तक जनता कर्फ्यू का पालन करें तथा जनता कर्फ्यू के बारे में अपने पड़ोसियों व पारिवारिक लोगों को जागरूक करें यह जनभागीदारी देश,आपके एवं आपके परिवार के लिए आवश्यक है जो कि कोरोनावायरस के प्रसार को रोकने के लिए सहायक सिद्ध होगा इसके साथ ही साथ आज पूरे विश्वविद्यालय परिसर में सैनिटाइजर का छिड़काव किया गया जिससे कोरोनावायरस से बचा जा सके व सुरक्षित रहे। विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता छात्र कल्याण डॉ आरपी सिंह ने कहा कि कोरोना वायरस संक्रमण से बचाव के दृष्टिगत छात्रावासों को खाली करा लिया गया है तथा छात्रों को सुरक्षित अपने-अपने घर भेज दिया गया है विश्वविद्यालय के निदेशक प्रशासन एवं मानीटरिंग डॉ करम हुसैन ने बताया कि विश्वविद्यालय के सभी विभागाध्यक्ष आवश्यक सेवाओं के अतिरिक्त प्रत्येक दिन कार्यालय में 50त उपस्थिति सुनिश्चित करेंगे । शेष 50त कार्मिक घर पर मोबाइल या इलेक्ट्रॉनिक साधनों से कार्यालय से संपर्क में रहेंगे तथा आवश्यकता पड़ने पर कार्यालय बुलाया जाएगा तथा बिना पूर्व अनुमति के कोई कार्मिक मुख्यालय नहीं छोड़ेगा। यह आदेश आगामी 4 अप्रैल तक लागू रहेगा।

सीएसए परिसर में श्रमिकों में वितरित की गई खाद्य सामग्री

जन एक्सप्रेस संवाददाता

कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय परिसर में रहने वाले करीब 25 श्रमिक निर्माण कार्य में लगे हुए है उनके परिवारों को कुलपति डॉ. डी.आर. सिंह ने सोमवार को खाद्य सामग्री तथा नहाने व साफ सफाई के लिए साबुन के पैकेट बनवा कर वितरित किए। उन्होंने श्रमिक परिवारों को सोशल डिस्टेंसिंग बनाए रखने के लिए भी कहा उन्होंने आश्वासन दिया कि यह प्रक्रिया अनवरत जारी रहेगी।

कुलपति ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि विश्वविद्यालय परिसर में रह रहे श्रमिक परिवारों को खाने व पीने के लिए शुद्ध पानी जैसी कोई समस्या नहीं आनी चाहिए। कुलपति ने विश्वविद्यालय स्थित भारतीय स्टेट बैंक का भी दौरा किया जो लोग लाइनों में लगे हुए थे उनसे कहा कि आपस में कम से कम एक मीटर की दूरी अवश्य बनाए रखें । इस अवसर पर डॉ. विजय कुमार यादव, डॉक्टर स्वेता यादव एवं रघुवीर सिंह सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

सुरक्षाकर्मी और कर्मचारियों को बताए गए कोरोना वायरस से बचने के उपाय

जन एक्सप्रेस/प्रदीप शर्मा

कानपुर नगर। चंद्रशेखर कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय मे वैश्विक महामारी कोरोना वायरस के संक्रमण को देखते हुए विश्वविद्यालय की सुरक्षा में मुस्तैद सुरक्षाकर्मियों, मैस कर्मचारियों और विश्वविद्यालय परिसर में रह रहे निर्माण ठेकेदार के कर्मचारी जो लॉक डाउन के पहले अपने घरों को नहीं जा पाए थे। कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह के निर्देश पर विश्वविद्यालय में स्थित मानव चिकित्सालय के चिकित्सा अधिकारी डॉ. एस.के. सिंह द्वारा उन्हें गुरुवार को कोरोना वायरस से बचने के लिए उपाय बताए गए। चिकित्सा अधिकारी ने बताया कि आप लोग नियमित साबुन और पानी अथवा अल्कोहल वाले हैंड सैनिटाइजर से 20 सेकंड तक अपने हाथों को अच्छी प्रकार से धोएं। यदि हाथ साफ नहीं हैं तो अपनी नाक, आंख या मुंह को न छुए। सुरक्षा ड्यूटी के दौरान सोशल डिस्टेंसिंग अवश्य बनाए रखें। विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉ. खलील खान ने बताया की इस दौरान सभी कर्मियों को कोरोना वायरस के दृष्टिगत मास्क वितरित किए गए। इस अवसर पर अधिष्ठाता छात्र कल्याण डॉ.आर.पी. सिंह, सुरक्षा अधिकारी डॉ. अजय कुमार सिंह और डॉ. सी.पी. सिंह गंगवार मौजूद रहे।

सीएसए ने किसानों के लिए जारी की एडवाइजरी

जन एक्सप्रेस/प्रदीप शर्मा

कानपुर नगर। कोरोना वायरस के संक्रमण से रोकथाम के लिए के लिए प्रधानमंत्री द्वारा 21 दिन के राष्ट्रीय लॉक डाउन किया गया है। यही वह समय भी है जब किसानों के खेतों में रवि की फसल की कटाई एवं मड़ाई का कार्य लगभग शुरू होने वाला है चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. डी.आर. सिंह द्वारा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को जारी निर्देश पर किसानों के लिए विश्वविद्यालय के सहायक बीज एवं प्रक्षेत्र निदेशक डॉ. अनिल कुमार सचान ने एडवाइजरी जारी की है जिसमें उन्होंने कहा है कि किसान कोविड-19 को दृष्टिगत रखते हुए अपने व खेतों पर कार्य करने वाले लोगों के लिए सुरक्षात्मक कदम उठाते हुए फसलों की कटाई एवं मड़ाई का कार्य करें।

उन्होंने कहा है कि गेहूं या सरसों की फसल काटते समय अपना मुंह मास्क या अंगोछे से ढक कर रखें। गेहूं के बंडल बांधते समय आपस में निश्चित दूरी बनाकर रखें। खेत में फसल कटाई बाहरी घेरे से शुरू करें ताकि अधिक समय तक एक दूसरे से सामाजिक दूरी बनी रहे। डॉक्टर सचान ने बताया कि किसान कंबाइन मशीन, रीपर या अन्य यंत्रों जैसे हसिया द्वारा गेहूं की कटाई करते हैं कृषि यंत्रों के प्रयोग करते समय कभी-कभी चिंगारियां निकलती है या फसल कटाई करने वाले लोगों द्वारा धूम्रपान का प्रयोग किया जाता है ।जिसकी चिंगारी से फसल जलकर राख हो सकती है ऐसे समय में किसान भाई सावधानी बरतें और धूम्रपान न करे। डॉ. सचान ने किसानो को दी गई अपनी एडवाइजरी में थ्रेसर पर कार्य करते समय शरीर पर ढीले कपड़े, घड़ी, कड़ा इत्यादि पहनकर कार्य ना करने की सलाह दी है। विश्वविद्यालय के सहायक निदेशक शोध डॉ. मनोज मिश्रा ने किसानों को बताया कि फसल थ्रेसर में लगाते समय हाथ को उचित दूरी पर रखें और थ्रेशिंग कार्य करते समय आपस में बातें ना करें।यह जानकारी विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉक्टर खलील खान ने दी।

मास्क व सोशल डिस्टेंसिंग का ध्यान रखें किसान

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह द्वारा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में गुरूवार को विश्वविद्यालय के सब्जी अनुसंधान केंद्र कल्याणपुर के वैज्ञानिक डॉ राजीव द्वारा बताया गया कि उत्तर प्रदेश के मध्य मैदानी भागों में रबी प्याज की खेती बड़े पैमाने पर की जा रही है। वर्तमान समय में प्याज की फसल किसानों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में सहायक होगी लेकिन यह तभी संभव होगा कि जब प्याज की खुदाई उपरांत तकनीकी तथा भंडारन आदि क्रियाएं वैज्ञानिक तरीके से की जाए। उन्होंने बताया कि प्याज फसल की लगभग 50त्न पौधों का ऊपरी भाग झुक जाने तथा पत्तियां पीली पड़ जाने की एक सप्ताह बाद खुदाई करनी चाहिए। वर्तमान समय में क्षेत्र की अधिकांश फसल लगभग पक कर तैयार है ।कटाई उपरांत प्रबंधन में प्याज की

फसल में क्यूरी का विशेष महत्व है ।तथा इसके द्वारा भंडारण में प्याज कंदो की गुणवत्ता बनाए रखने में भी मदद मिलती है ।प्याज कंदो पर ढाई से 3 सेंटीमीटर छोड़कर ऊपर की सूखी पत्तियों को हटा देना चाहिए। इसके पश्चात सड़े,गले व रोग ग्रस्त कंदो को हटाकर अलग कर देना चाहिए फिर कंदो के आकार के आधार पर ग्रेडिंग की जाती है। प्याज की पैकिंग के लिए जालीदार प्लास्टिक के बोरा का प्रयोग किया जाता है। जिससे हवा का पर्याप्त मात्रा में आवागमन बना रहे। प्याज भंडारण का तापमान एवं आर्द्रता कंदो के वजन में कमी, कंदो का अंकुर निकलना, सड़ना तथा कंदो की गुणवत्ता को भंडारण में प्रभावित करता है ।पारंपरिक भंडारण में भंडारित कंदो का वजन एवं अन्य हानि होती है। इसलिए उन्नत भंडार ग्रहों का प्रयोग किया जाना आवश्यक है। जिससे किसान भाइयों को किसी भी प्रकार की क्षति ना हो। प्याज का उन्नत भंडार ग्रहों का निर्माण ऊपर उठे हुए प्लेटफार्म पर बनाया जाता है। ताकि नीचे जमीन की नमी को रोका जा सके। भंडार ग्रह के अंदर तापमान को बढ़ने से रोकने के लिए छत में उपयुक्त सामग्री अथवा टाइल्स का प्रयोग करें। तथा वायु के पर्याप्त संचार के लिए भंडारन की तल तथा प्याज कंदो कि दो तह के मध्य हवादार संरचना बनानी चाहिए। डॉ राजीव ने किसान भाइयों से अपील की है कि वे भंडार इस प्रकार बनाएं ताकि धूप सीधे कंदो पर न पड़े ।भंडारन में कंदो के ढेर की चौड़ाई गर्मियों में 60 से 75 सेंटीमीटर, हल्के अर्ध मौसम में 75 से 90 सेंटीमीटर, तथा हल्के शुष्क मौसम की दशा में 90–120 सेंटीमीटर से अधिक नहीं होनी चाहिए। इसके साथ-साथ छोटे आकार के कंदो के ढेर की ऊंचाई 100 सेंटीमीटर गर्म मौसम में रखी जाती है। जबकि बड़े कंदो को हल्के मौसम में 120 सेंटीमीटर तक ऊंचाई के ढेरों में रखा जा सकता है। सामान्यता एक घन मीटर प्याज भंडार गृह मे लगभग 750 किलोग्राम कंदो को भंडारित किया जा सकता है । डॉ राजीव ने बताया कि प्याज औषधीय गुण की दृष्टि से काफी लाभकारी होता है क्योंकि स्वस्थ प्रतिरक्षा प्रणाली के लिए विटामिन सी की जरूरत होती है और प्याज में मौजूद फाइटोकेमिकल्स शरीर में विटामिन सी को बढ़ाने का काम करते हैं। विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉक्टर खलील खान ने किसान भाइयों से अपील की है कि वे कोविड–19 के दृष्टिगत कृषि कार्य करते समय सामाजिक दूरी(सोशल डिस्टेंसिंग)अवश्य बनाए रखें।

अन्न दाता को कार्य करने के साथ स्वास्थ्य का भी ध्यान रखने के दिए गए सुझाव

जन एक्सप्रेस संवाददाता

कानपुर नगर। कोरोना वायरस कोविड-19 वैश्विक महामारी संक्रमण को रोकने के लिए प्रधानमंत्री द्वारा देश में लॉक डाउन-2 लागू किया गया है। ऐसे समय में रबी की फसलें भी पक कर तैयार हैं और किसान फसल की कटाई-मड़ाई के कार्य में लगे हुए हैं।चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के प्रक्षेत्रों पर भी फसल कटाई-मड़ाई का कार्य चल रहा है। इस महत्वपूर्ण कार्य को दृष्टिगत रखते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. डी.आर. सिंह ने बुधवार को विश्वविद्यालय के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा किया तथा फसल कटाई कार्य में लगे हुए श्रमिकों से बातचीत की। कुलपति डॉ. सिंह ने विश्वविद्यालय के पुराना दुग्ध प्रक्षेत्र (ओडीएफ), विद्यार्थी प्रशिक्षण प्रक्षेत्र(एस आई एफ) एवं नवाबगंज प्रक्षेत्र पर हो रही फसल कटाई के कार्यों को स्वयं जाकर देखा तथा खेतों पर कार्य कर रहे श्रमिकों को तेज धूप एवं कोरोना के संक्रमण से बचाव के लिए लगभग 100 अंगौछे स्वयं वितरित किए।

कुलपति ने श्रमिको से कहा कि जहां तक संभव हो तो घरेलू बने मास्क का ही प्रयोग करें तथा प्रतिदिन उस मास्क की साबुन से धुलाई कर साफ- सफाई करते रहे। श्रमिको से कहा कि कोरोना के संक्रमण से बचने के लिए आयुष मंत्रालय के निर्देशानुसार शरीर में प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए पूरे दिन गर्म पानी पीते रहें तथा भोजन में हल्दी, धनिया, जीरा,लहसुन, इत्यादि मसालों का प्रयोग करें। तथा चाय में तुलसी, दालचीनी, कालीमिर्च, शौठ पाउडर का प्रयोग कर दिन में 2 बार अवश्य पिएं जिससे शरीर में प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है इसके साथ ही आप लोग बुजुर्गों की देखभाल करते रहें तथा अपने एंड्रॉयड मोबाइल पर आरोग्य सेतु एप डाउनलोड करें इस ऐप की मदद से आप लोगों को कोरोनावायरस संक्रमण के खतरे और जोखिम का आकलन करने में मदद मिलेगी।

इस अवसर पर डॉ. अनिल सचान, डॉ. सीपी सचान, डॉ. वेद प्रकाश श्रीवास्तव,अंकित अवस्थी मौजूद रहे।

कुलपति ने ली किसानों से जानकारी

चेतना समाचार सेवा

कानपुर, 27 अप्रैल। चंद्रशेखर आजाद कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. डीआर सिंह ने रविवार को आए आंधी तूफान से किसानों व बागवानों को पहुंची क्षति की जानकारी ली है। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में आम का क्षेत्रफल लगभग 2 लाख 65 हजार हेक्टेयर है। मई का महीना शुरू होने वाला है इस माह में फलों के ऊपर काले-काले से धब्बे पड़ जाते हैं जिसे एंकर रोग कहते हैं। इससे बाजार मूल्य गिर जाता है इस रोग की रोकथाम के लिए बागवान भाई 1 ग्राम स्ट्रैप्टो साइक्लिन को प्रति 5 लीटर पानी में घोलकर 10 से 15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करते रहें। भुनगा कीट यदि बाग में दिखाई दे तो इमिडाक्लोप्रिड 0.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल कर छिड़काव कर दें। जिससे आम की गुणवत्ता बनी रहती है। सीएसए के अधीन कृषि विज्ञान केंद्रों में समन्वय स्थापित कर रहे अलीगढ़ के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ अरविंद कुमार सिंह ने बताया कि आज आम की फसल के प्रबंधन हेतु सभी कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिकों द्वारा 9918 एड-वाइजरी आम बागवान को व्हाट्सएप एवं अन्य माध्यमों के द्वारा पहुंचाई जा चुकी हैं कृषि विज्ञान केंद्र इटावा के प्रभारी डॉ एमके सिंह ने बताया कि जनपद इटावा में कल आई आंधी से आम की फसल में 15 से 20% नुकसान होने की संभावना है जबकि जनपद में आम का क्षेत्रफल 325 हेक्टेयर के लगभग है।

कुलपति ने किया आवश्यक सेवाओं में लगे कर्मचारियों का सम्मान

● सीएसए में बाहरी व्यक्तियों के आवागमन को किया गया प्रतिबंधित, परिसर में बिना मास्क लगाए घूमने और थूकने पर होगा जुर्माना

जन एक्सप्रेस प्रदीप शर्मा

कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. डी.आर.सिंह ने गुरुवार को विश्वविद्यालय की आवश्यक सेवाओं में बिजली,पानी, साफ-सफाई,सुरक्षा एवं स्वास्थ्य आदि में लगे कर्मचारियों का माल्यार्पण कर उत्साहवर्धन किया। कोरोना वायरस के संक्रमण को प्रभावी ढंग से रोकने के लिए सभी कर्मचारियों को फेस मास्क, एक-एक गमछा के साथ ही लंच पैकेट भी वितरित किए। इस अवसर कुलपति ने कर्मचारियों से देश एवं प्रदेश सरकार द्वारा समय-समय पर जारी किए गए दिशा निर्देशों के पालन करने के साथ ही आरोग्य सेतु एप अपने मोबाइल में डाउनलोड करने को कहा।

उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय परिसर में बाहरी व्यक्तियों के आवागमन को पूर्णतया प्रतिबंधित कर दिया गया है साथ ही विश्वविद्यालय परिसर में रह रहे कर्मचारियों एवं उनके परिवार के सदस्यों को सूचित कर दिया गया है कि विश्वविद्यालय परिसर के किसी भी स्थान पर थूकना पूर्णतया प्रतिबंधित है। पकड़े जाने पर जुर्माने के साथ-साथ अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाएगी। परिसर में बिना मास्क लगाएं घूमने में पकड़े जाने पर भी जुर्माना भी लगेगा। मीडिया प्रभारी डॉक्टर खलील खान ने बताया कि कोरोनावायरस के संक्रमण को रोकने के दृष्टिगत पूरे विश्वविद्यालय परिसर में आज ट्रैक्टर चालित हाई पावर स्प्रेयर मशीन द्वारा मुख्य भवन, कार्यालयों, अतिथि ग्रहो एवं आवासों का सैनिटाइजेशन भी किया गया।

इस अवसर पर प्रोफेसर विजय कुमार यादव, डॉक्टर एच. जी. प्रकाश, डॉक्टर एच.पी. सिंह, डॉक्टर एके सिंह एवं संपत्ति अधिकारी मानवेंद्र सिंह सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

व्हाट्सएप के माध्यम से किसानों को कृषि तकनीकों की दी जा रही जानकारी

जन एक्सप्रेस संवाददाता

कानपुर नगर। वैश्विक महामारी कोरोनावायरस संक्रमण की चैन को तोड़ने के लिए देश भर में लगे राष्ट्रीय लॉक डाउन की अवधि में कृषि वैज्ञानिक अपने-अपने जनपदों के पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी तंत्र के अनुसार श्रेष्ठ कृषि तकनीकों को व्हाट्सएप मोबाइल एवं अन्य आधुनिक संसाधनों द्वारा किसानो तक पहुंचाने का निर्देश चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ. डी.आर. सिंह ने विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिकों को दिए थे। जिससे कृषक लॉक डाउन का पालन करते हुए अपने कृषि, पशुपालन एवं अन्य कृषि से संबंधित कार्यों को सुविधाजनक एवं आसानी से संपादित कर सकें। इसी क्रम में बुधवार को कृषि विज्ञान केंद्र अलीगढ़ के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ अरविंद कुमार सिंह ने बताया कि सभी कृषि विज्ञान केंद्रों द्वारा लॉक डाउन के दौरान 51 नवीनतम कृषि तकनीकों को प्रसारित एवं प्रचारित किया जा रहा है जिसमें मुख्य रुप से फसल कटाई करने के बाद किसानों को अन्न भंडारण के लिए कपूर, नीम की पत्ती, लहसुन एवं पारद तिकड़ी का प्रयोग करने की सलाह दी गई है जिसका कोई दुष्प्रभाव नहीं है। वहीं जायद फसलें जैसे मक्का, उर्द, मूंग की फसलों में नीम आयल एवं संजीवनी जैविक दवाओं के प्रयोग की सलाह दी गई है जिससे कि कीट एवं बीमारियों को नियंत्रित किया जा सके। उन्होंने बताया कि गर्मियों के मौसम में दुधारू पशुओं का दूध कम न हो जाए इसलिए पशुपालक को पशुओं के लिए हरे चारे एवं संतुलित आहार देने की तकनीको की जानकारी कृषि वैज्ञानिकों द्वारा दी जा रही है।

मृदा को उपजाऊ बनाए रखने के लिए हरी खाद सबसे सस्ता विकल्प

जन एक्सप्रेस संवाददाता

कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों और विभागाध्यक्षों द्वारा किसानों को फसल कटाई के बाद नई फसल में अधिक पैदावार करने के लिए एडवाइजरी और सुझाव दिए जा रहे हैं । इसी क्रम में शनिवार को मृदा विज्ञान विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉक्टर देवेंद्र सिंह यादव ने किसानों को मृदा की उपजाऊ शक्ति बनाए रखने के लिए हरी खाद को सबसे सस्ता विकल्प बताया। हरी खाद्य बनाने के लिए अनुकूल फसलो की जानकारी देते हुए डॉ यादव ने बताया कि मुख्य फसलों ढैंचा, लोबिया, उड़द, मूंग, ग्वार, एवं बरसीम का प्रयोग हरी खाद्य बनाने में किया जाता है। ढैंचा की मुख्य किस्में सस्बेनिया अजिप्टिका, सस्बेनिया रोस्ट्रेटा, सस्बेनिया अकुलेता अपने त्वरित खनिजिकरण पैटर्न, उच्च नाइट्रोजन मात्रा के कारण बाद में बोई गई मुख्य फसल की उत्पादकता पर उल्लेखनीय प्रभाव डालने में सक्षम है। डॉक्टर यादव ने किसानों को बताया कि अप्रैल- मई महीने में गेहूं की कटाई के बाद खेत की सिंचाई के बाद खेत में 30 से 35 किलोग्राम ढैंचा का बीज प्रति हेक्टेयर की दर से खड़े पानी में फैला दें इसके साथ ही 20 दिन की अवस्था पर 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से यूरिया को खेत में फैलाने से जड़ ग्रंथियां बनने में सहायता मिलती है। उन्होंने बताया कि ढैंचा की 40 से 45 दिन की अवस्था में हल चलाकर हरी खाद को खेत में मिलाने से लगभग 15 से 20 टन प्रति हेक्टेयर की दर से हरी खाद तैयार होती है। मीडिया प्रभारी एवं मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने किसानो को हरी खाद्य के लाभ एवं पोषक तत्वों की जानकारी देते हुए बताया कि हरी खाद केवल नत्रजन व कार्बनिक पदार्थों का ही साधन नहीं है बल्कि इससे मिट्टी में कई पोषक तत्व उपलब्ध होते हैं।

किसान भाई 'एटिक' से खरीफ फसल के बीज करें प्राप्त

दैनिक सत्ता एक्सप्रेस

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद .शि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर परिसर स्थित बीज विक्रय केंद्र "एटिक" से बीजों की बिक्री आगामी सोमवार से प्रारम्भ हो जायेगी। चंद्रशेखर आजाद .शि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ डी.आर.सिंह ने बताया की आगामी खरीफ वर्श 2020 की फसलों के बीजों को .शक भाइयों हेतु समय से उपलब्ध हो। इसके लिए विश्वविद्यालय स्थित एटिक (.शि तकनीकी सूचना केंद्र) पर सभी फसलों के बीज उपलब्ध करा दिए गए हैं। जिसे किसान भाई खरीफ फसलों के बीज समय से खरीद कर अनुकूल मौसम मिलते ही बुवाई कर दें। इसके लिए संबंधित अधिकारियों/वैज्ञानिकों को आवश्यक दिशा निर्देश भी दे दिए गए हैं। कोविड–19 के संक्रमण को रोकने के लिए देशभर में लगाए गए लॉक डाउन के दौरान विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा निर्णय लिया गया कि दिनांक 11 मई 2020 से जनक/ आधारीय/प्रमाणित एवं पर्चीशुदा बीजो के विभिन्न फसलों जैसे–धान, उर्द, मूंग, तिल, मक्का एवं ज्वार आदि की बुवाई हेतु बीज बिक्री का समय प्रातः 10:00 बजे से सायं 5:00 बजे तक विश्वविद्यालय के गेट नंबर एक पर स्थित बीज विक्रय केंद्र "एटिक" से किया जाएगा। विश्वविद्यालय के बीज एवं प्रक्षेत्र निदेशक डॉ राम आशीश यादव ने बताया कि .शकों के लिए खरीफ फसलों के बीजों की प्रजातियां जैसे मूंग की प्रजातियां–स्वेता एवं आईपीएम 2–3, उर्द की प्रजातियां शेखर–1, शेखर–2, शेखर– 3,आजाद–1, आजाद–2, आजाद–3, तिल की प्रजातियां शेखर एवं प्रगति, मक्का की प्रजाति–आजाद कमल, ज्वार की प्रजाति बुंदेला, मूंगफली की प्रजाति विद्या, एवं धान की प्रजातियां पूसा बासमती–1, पूसा बासमती–1121,पूसा बासमती–1509 आदि बीजों की प्रजातियां बिक्री हेतु उपलब्ध रहेंगी। विश्वविद्यालय के

मीडिया प्रभारी डॉक्टर खलील खान ने बताया कि किसान भाई बीज से संबंधित किसी भी जानकारी के लिए निदेशक बीज एवं प्रक्षेत्र डॉ रामाशीश यादव के मोबाइल नंबर 94 50 12 9685,बीज उत्पादन अधिकारी (जनक) डॉ सीपी सचान के मोबाइल नंबर 9415491930, सहायक बीज निदेशक बीज एवं प्रक्षेत्र डॉक्टर अनिल सचान के मोबाइल नंबर 6393170234, सहायक बीज उत्पादन अधिकारी जनक डॉ पीएन निगम के मोबाइल नंबर 9336202394 एवं प्रभारी बीज विधायन संयंत्र डॉक्टर मिर्जा फैयाज हुसैन के मोबाइल नंबर 9319756536 से संपर्क कर सकते हैं।

प्रदेश भर में लागू होगा सीएसए का खेती मॉडल

जासं, कानपुर : चंद्रशेखर आजाद कृषि व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) के विशेषज्ञों ने किसानों की आय बढ़ाने के लिए एकीकृत मॉडल तैयार किया है। गुरुवार को सीएसए के कुलपति डॉ. डीआर सिंह ने प्रमुख सचिव कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान डॉ. देवेश चतुर्वेदी को मॉडल का प्रारूप भेजा है। विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय वेबिनार के दौरान प्रमुख सचिव ने कुलपति को यह जिम्मेदारी सौंपी थी। उन्होंने सीएसए के अंतर्गत आने वाले 13 कृषि विज्ञान केंद्रों से एक एक गांव गोद लेने के लिए कहा है।

क्या है एकीकृत कृषि प्रणाली: मीडिया प्रभारी डॉ. खलील खान के मुताबिक एकीकृत कृषि प्रणाली का तात्पर्य कृषि की उस प्रणाली से है, जिसमें कृषि के विभिन्न घटक जैसे फसल उत्पादन, पशुपालन, फल व सब्जी उत्पादन, मधुमक्खी पालन आदि को इस प्रकार से किया जाता है कि वे एक दूसरे के पूरक हों।

फसल के साथ बागवानी और पशुपालन भी: डॉ. डीआर सिंह ने बताया कि किसानों की आय बढ़ाने के लिए एकीकृत फसल प्रणाली बेहद उपयोगी है। इसमें सभी एक दूसरे के पूरक रहेंगे। फसल के साथ बागवानी और पशुपालन लाभदायक साबित होगा।

मनरेगा को जोड़ा जाएगा: कुलपति के मुताबिक मॉडल में मनरेगा किसानों को भी शामिल किया गया है। उन्हें गांव में ही रोजगार दिया जाएगा।

बढ़ेगी आय

- एकीकृत कृषि प्रणाली के लिए एक-एक गांव लिया गोद
- प्रमुख सचिव कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान को भेजा मॉडल

कुलपति व समिति के सुझावों को राज्य सरकार करेगी लागू : कृषि मंत्री

जन एक्सप्रेस/प्रदीप शर्मा

कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर में चल रहे ऑनलाइन राष्ट्रीय वेबकान 2020 के तीसरे एवं अंतिम दिन प्रदेश के कृषि कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान मंत्री सूर्यप्रताप शाही ने कहा कि कांफ्रेंस के माध्यम से कुल 76 शोध पत्र और 663 व्याख्यान पोस्टर के माध्यम से प्राप्त हुए हैं। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. डीआरसी और उनकी समिति द्वारा जो सलाह दी जाएगी उसे प्रदेश के संसाधनों के अनुसार लागू किया जाएगा। उन्होंने बताया कि प्रदेश के बीज केंद्रों में अभी तक 16 हजार कुंटल ढांचे का बीज पहुंचाया जा चुका है आगामी खरीफ की फसलों में विपरीत प्रभाव ना पड़े इसके लिए 15 मई तक प्रदेश के सभी बीज केंद्रों तक खरीफ फसलों के बीज पहुंचाने का कार्य किया जा रहा है। मुख्य वक्ता डॉ. अशोक कुमार सिंह ने कहा कि कोरोना संक्रमण को रोकने के लिए लगाए गए लॉक डाउन अवधि में खाद्यान्न, दलहन एवं तिलहन फसलों के उत्पादन में लगभग 15 से 20 फीसदी की कमी आने की संभावना है। डॉ. सिंह ने कहा कि देश में पहली बार ऐतिहासिक वेबकान के माध्यम से किसान वैज्ञानिकों और नीति निर्माताओं को एक साथ जोड़कर नया कीर्तिमान स्थापित करने के लिए कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ डीआर सिंह बधाई के पात्र हैं। मीडिया प्रभारी खलील खान ने बताया कि राष्ट्रीय वेबकान के अंतिम दिन कुल 4 महत्वपूर्ण तकनीकी सत्र आयोजित किए गए हैं जिसमें 35 व्याख्यान और शोध पत्र देश के विभिन्न प्रांतों के वैज्ञानिकों द्वारा प्रस्तुत किए गए हैं।

सूर्य प्रताप शाही

खरीफ फसलों के बीज बिक्री केंद्र का कुलपति ने किया उद्घाटन

जन एक्सप्रेस/प्रदीप शर्मा

कानपुर नगर। राष्ट्रीय तकनीकी दिवस पर चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. डी. आर. सिंह ने विश्वविद्यालय के कृषि तकनीकी सूचना केंद्र में खरीफ फसलों के बीजों की बिक्री केंद्र का उद्घाटन किया। इस अवसर पर विभिन्न जिलों से आए किसानों से खेती-बाड़ी के कार्यों के दौरान सोशल डिस्टेंसिंग एवं साफ-सफाई पर विशेष ध्यान देने की अपील की। किसानों ने कुलपति से कहा कि क्षेत्र में ज्यादातर किसान छोटे जोत के हैं इस कारण वह चाहते हैं कि तिल की 1 किलो और धान में 6 किलो की पैकिंग उपलब्ध करायें। उन्होंने आश्वासन दिया कि अगले बुवाई के मौसम में यह व्यवस्था कर दी जाएगी। कुलपति ने निदेशक प्रसार धूम सिंह से कहा कि बीज की फसलों के साथ ही साथ पंपलेट छपवाकर किसानों को उपलब्ध कराएं। उन्होंने कहा कि जिन किसानों के पास व्हाट्सएप है उन्हें पूरे बीजों की सूची उपलब्ध कराएं। किसानों के लिए सैनिटाइजेशन की व्यवस्था के साथ पीने के लिए स्वच्छ पानी और बैठने के लिए छाया की व्यवस्था करें किसान काल सेंटरों पर पूछे गए प्रश्नों की सूची श्रेणी बद्ध तरीके से उपलब्ध कराएं।डॉक्टर खलील खान ने बताया कि एटिक में बीजों की जानकारी के लिए किसान मोबाइल नंबर 98 39 44 5411, 9140 24 7634 पर संपर्क कर जानकारी ले सकते हैं उन्होंने बताया कि सोमवार को लगभग 30 किसानों ने बीज खरीदे हैं।

इस अवसर पर निदेशक शोध डॉ. एच.जी. प्रकाश, निदेशक प्रसार डॉ. धूम सिंह, निदेशक प्रशासन एवं मानीटरिंग डॉ. करम हुसैन, बीज एवं प्रक्षेत्र निदेशक डॉ. राम आशीष यादव सहित अन्य लोग मौजूद रहे।